आज़ादी का अमृत महोत्सव

39वाँ अंक (संयुक्तांक) (अक्टूबर 2021 - सितम्बर 2022)

उदयाचल

कार्यालय पत्रिका

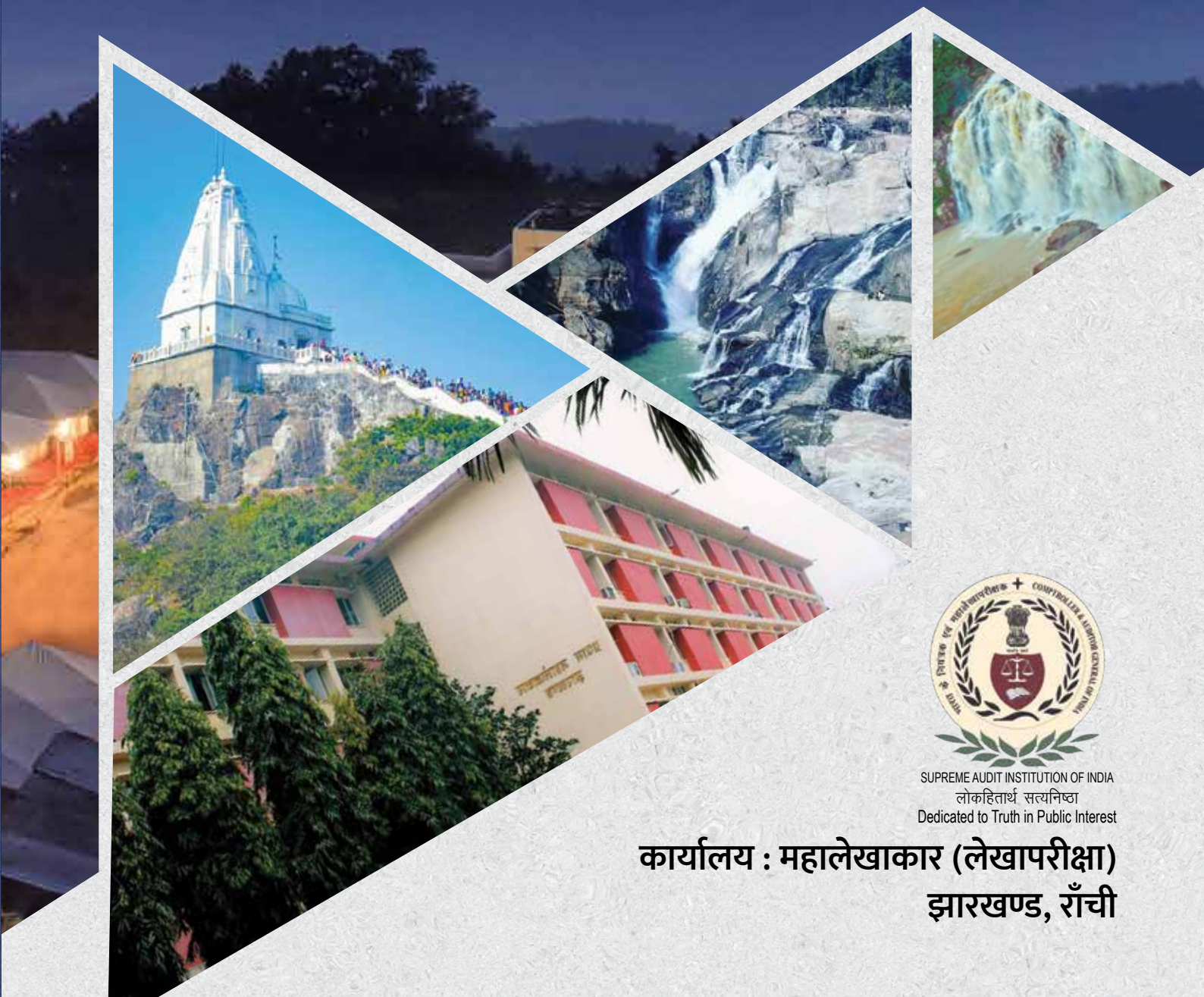

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय : महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड, राँची

उदयाचल परिवार

श्री अनूप फ्रांसिस डुंगडुंग
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

श्री रौनक रंजन
उप-महालेखाकार

श्री अजय कुमार
वरिष्ठ उप-महालेखाकार

श्री जे. बी. गुप्ता
उप-महालेखाकार

श्री जी. रामास्वामी
उप-महालेखाकार

श्री चम्पक राय
प्रधान संपादक

श्री कमलेश श्रीवास्तव
संरक्षक

श्री बालेश्वर नायक
पत्रिका साज सज्जा

श्री हेमंत कुमार
पत्रिका मार्गदर्शन

श्री आलोक कुमार
संपादक

श्री मनोज कुमार
भाषा शुद्धि कार्य

श्री संजीव कुमार यादव
उप-संपादक

श्री बालमुकुन्द पाठक
उप-संपादक

उदयाचल

कार्यालय पत्रिका

39वाँ अंक (संयुक्तांक) (अक्टूबर 2021 - सितम्बर 2022)

पत्रिका परिवार

श्री अनूप फ्रांसिस डुंगडुंग

महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची

प्रकाशक परामर्शदातृ समिति

श्री रौनक रंजन	उप-महालेखाकार (प्रशासन)
श्री अजय कुमार	वरिष्ठ उप-महालेखाकार
श्री जे. बी. गुप्ता	उप-महालेखाकार
श्री जी. रामास्वामी	उप-महालेखाकार

संपादक मंडल

श्री चम्पक राय	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रधान संपादक
श्री आलोक कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	संपादक
श्री संजीव कुमार यादव	कनिष्ठ अनुवादक	उप-संपादक
श्री बालमुकुन्द पाठक	लेखापरीक्षक	उप-संपादक

उदयाचल

कार्यालय पत्रिका

39वाँ अंक (संयुक्तांक) (अक्टूबर 2021 - सितम्बर 2022)

स्वत्वाधिकार	:	महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड, राँची
प्रकाशन	:	'उदयाचल' (कार्यालय पत्रिका) महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची
अंक	:	39वाँ
आवरण एवं मुद्रक पत्रिका सज्जा	:	अन्नपूर्णा प्रेस, राँची
आवरण चित्र	:	झारखण्ड के विभिन्न पर्यटन स्थलों से संबंधित
मूल्य	:	राजभाषा एवं कार्य के प्रति निष्ठा
वितरण	:	हिन्दी प्रकोष्ठ

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार अपने हैं जिनसे 'उदयाचल' परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

- संपादक मण्डल

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृ. संख्या
1.	रिटर्न गिफ्ट	हेमन्त कुमार	10
2.	साँवली बहु	आलोक कुमार	11 – 14
3.	मम्मी! इछकूल नहीं जाना	सुबोध कुमार	15 – 16
4.	चिंटू की शादी	श्रवण कुमार यादव	17 – 18
5.	प्रकृति से सीख	सरदार जितेन्द्र सिंह	19
6.	नींद और भूख	मनोज कुमार	20
7.	दक्षिण भारत के दार्शनिक समाज सुधारक – वसवण्णा	विकास चन्द्र आजाद	21 – 22
8.	बच्चों से अपेक्षाएँ	राखी कुमारी	23 – 24
9.	सड़क पर्यटन	मुकेश कुमार राम	25
10.	आजादी का अमृत महोत्सव और विश्व में महाशक्ति के रूप में उभरता भारत	बालमुकुन्द पाठक	26 – 27
11.	हमारी अपनी भाषा हिन्दी	नेहा कुमारी	28
12.	बद्री–केदारनाथ की यात्रा	हिरेन्द्र कुमार झा	29 – 32
13.	संयम	पूनम बरनवाल	33
14.	विचारों से व्यक्तित्व के निर्माण तक	राखी कुमारी	34 – 35
15.	झारखण्ड की मुंडा जनजाति का अन्य राज्यों से ऐतिहासिक जुड़ाव	आलोक कुमार	36 – 37
16.	आवेश	कुन्दन कुमार	38
17.	विज्ञान के प्रोफेसर का प्रियतमा को पत्र	मनोज कुमार नं. 7	39
18.	चार धाम यात्रा	आस्था सिंह	40
19.	एक महात्मा का प्रताप	आलोक कुमार	41
20.	शहीदों की याद में	दीपशिखा	42
21.	भारत के लाल	शाहिल कुमार यादव	43

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृ. संख्या
22.	साड़ी और जींस वार्तालाप	आरती पाठक	44
23.	डाकू	शम्भु शरण भारती	45
24.	विचित्र प्राणी	रत्नेश कुमार	46
25.	न रुके न झुके	दिलीप कुमार मिश्र	47
26.	प्रेम के व्यापारी	सोनू सिंह	48
27.	यादें	सोनू सिंह	48
28.	सुनसान शहर	शम्भु शरण भारती	49
29.	स्वार्थ	जय प्रकाश प्रसाद	50
30.	जरूरी है !	सोनी कुमारी	51
31.	जीवन	दिलीप कुमार मिश्र	52
32.	राजभाषा प्रश्नोत्तरी		53 – 54

संदेश

कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'उदयाचल' के 39वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा व समर्पण की अनमोल भावना प्रेरित होती है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं नवोदित रचनाकारों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में यह पत्रिका निरंतर गतिमान है।

हिंदी एक सरल एवं सहज भाषा है। यह हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ अखिल भारतीय स्तर पर समन्वय एवं संपर्क भाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित है। अतः कार्यालय के सभी कार्मिकों को हिंदी पढ़ने, बोलने तथा लिखने में प्रतिष्ठा व सम्मान की अनुभूति होनी चाहिए तथा अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों के निष्पादन में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।

मैं संपादक मंडल व रचनाकारों का अभिनन्दन करते हुए हृदय से बधाई देता हूँ तथा कामना करता हूँ कि 'उदयाचल' पत्रिका इसी तरह निरंतर प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। 'उदयाचल' पत्रिका का यह अंक शुभकामनाओं के साथ समस्त पाठकों को समर्पित करता हूँ।

महालेखाकार (ले. प.)

संदेश

कार्यालय पत्रिका "उदयाचल" के 39 वें अंक का प्रकाशन मेरे लिए गौरव की बात है। भाषा एक नदी के समान है जो अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करती है। भारत की सभ्यता और भाषायी संस्कृति की जड़ें गहरी है। हिंदी विश्व की उन्नत एवं वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है। राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता की पहचान है। राजभाषा के संवैधानिक उपबंधों का अनुपालन करना भी हमारा दायित्व है। कार्यालय में सहज एवं सरल भाषा में काम किया जाना आवश्यक होता है। इस मानदंड पर हिंदी हमेशा खरा उतरती है।

"उदयाचल" का 39वाँ अंक कार्यालय के कार्मिकों को ही नहीं अपितु अन्य कार्यालय के पाठक वर्ग को भी अभिभूत करेगा। मैं उन सभी रचनाकारों को धन्यवाद कहना चाहता हूं जो नियमित रूप से लेखन कार्य से जुड़े रहते हैं। मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को भी धन्यवाद व्यक्त करना चाहता हूं जो अपने प्रयासों से इस पत्रिका की बेहतरी के लिए लगे रहते हैं। कार्यालय में अधिक से अधिक काम हिंदी में करने का प्रयास करें जिससे कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए लक्ष्यों को भी प्राप्त किया जा सके। मैं पूर्ण रूपेण आश्वस्त हूं कि आप सभी इस प्रकार राजभाषा की प्रगति हेतु पूर्ण सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

रौनक रंजन

उप महालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

कार्यालय पत्रिका "उदयाचल" के 39 वें अंक का प्रकाशन हर्ष का विषय है। हिंदी भाषा का स्वभाव लचीला है। यह अपने साथ दूसरे भाषाओं को ठीक उसी प्रकार से समाहित करती है जैसे एक बड़ी नदी छोटी नदियों को अपने में मिला लेती है। आज भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में हिंदी मान- सम्मान के साथ बोली व समझी जा रही है। भारत कई भाषाओं का देश है। यहां प्रत्येक भाषा का अपना महत्त्व है। राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

"उदयाचल" का यह अंक प्रत्येक पाठक वर्ग को निश्चित रूप से प्रभावित करेगा। पत्रिका के संपादन में सहयोग करने वाले सभी सदस्यों को विनम्र धन्यवाद। कार्यालय में हिंदी के प्रयोग में काफी वृद्धि हुई है। राजभाषा के नियम व धाराओं का अनुपालन करना हमारा परम कर्त्तव्य है। मैं आशा करता हूं कि भविष्य में पत्रिका का स्तर और बेहतर होगा एवं महालेखाकार परिवार के माध्यम से हम समसामयिक विषयों पर विशेषांक निकाल कर समाज जागृति जैसे- "जनजाति", "नारी सशक्तिकरण", "पर्यावरण" आदि पर अपना विचार हिंदी के माध्यम से आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास करते रहेंगें। शुभकामनाओं सहित।

प्रधान संपादक

संपादक की कलम से

प्रबुद्ध पाठकों जोहार

हर्ष मिश्रित उत्सुकता के साथ कार्यालय गृह पत्रिका 'उदयाचल' का यह नवीनतम अंक आप सबों की सेवा मे समर्पित है। आपकी प्रतिक्रियाएँ और सुझाव हमारे लिए अति महत्त्वपूर्ण हैं जो न केवल हमारा उत्साह वर्धन करते है बल्कि भविष्य के सुधारों के लिए भी मार्गदर्शक का कार्य करती हैं। आपके प्रोत्साहन से ही हम पत्रिका के स्तर मे निरंतर वृद्धि करने मे सफल हो पाये हैं और उम्मीद है कि भविष्य में भी आप सबों का स्नेह एवं प्यार इसी तरह मिलता रहेगा।

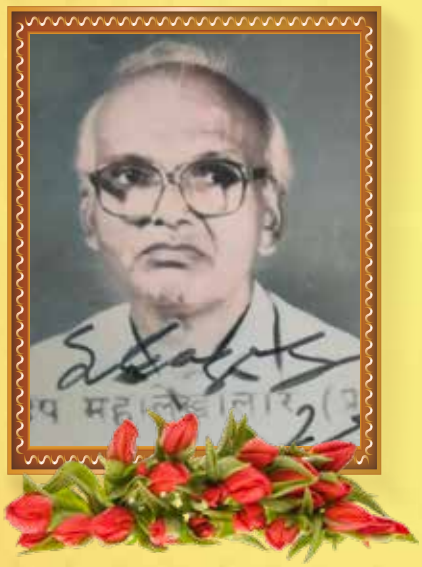

विगत दिनों पत्रिका परिवार के दो प्रमुख पूर्ववर्ती रचनाकारों श्रीमती एम एस बारला, सेवानिवृत वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं श्री ललन ठाकुर, सेवानिवृत वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी का देहावसान हो गया। अपनी लोकप्रिय रचनाओं से इन्होंने पत्रिका के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान दिया है और पाठकों के हृदय पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है, हम सभी पाठकों की तरफ से इन्हें विनम्र भावभीनी श्रद्धांजलि प्रदान करते हैं।

विगत कुछ वर्षों से अस्तित्व मे आयी कोरोना नामक वैश्विक महामारी ने हमारी सोच एवं जीवन शैली में बहुत बड़ा परिवर्तन लाया है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाववश हमने जिन प्राचीन भारतीय संस्कृति के धरोहरों को अवैज्ञानिक एवं पिछड़ेपन की निशानी मानकर कमोबेश भुला दिया था, आज उसकी महत्ता का एहसास सर्वव्यापी हो रहा है। योग एवं अध्यात्म हमारी संस्कृति के मूल तत्व रहें हैं और इसी की बदौलत समस्त विश्व में हमारी पहचान नए सिरे से पुनर्स्थापित हो रही है। जरूरत इस बात की है कि हम वैयक्तिक जीवन में इनकी महत्ता समझकर इसे अपनी जीवन पद्धति मे शामिल करें।

आयातित जीवन शैली एवं चिकित्सा पद्धति ने हमारा बड़ा नुकसान किया है। सरकार द्वारा सदन पटल पर दी गयी जानकारी के अनुसार वर्ष 2021-22 मे नागरिक स्वास्थ्य मद पर व्यय की राशि पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना मे 73% बढ़ कर 4.72 लाख करोड़ तक पहुच चुकी है। इस बहुमूल्य राशि का बचाव हो सकता है, यदि देश का प्रत्येक नागरिक स्वदेशी जीवन शैली अपना ले और योग व अध्यात्म को आत्मसात करे तो इस राशि का इस्तेमाल अन्य महत्त्वपूर्ण मदों यथा शिक्षा, आधारभूत संरचनाओं जैसे कल्याणकारी कार्यों मे किया जा सकता है। यह न केवल हमें व्यक्तिगत रूप से लाभ पहुचाएगा बल्कि सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर भी दूरगामी परिणाम दिलाने मे सक्षम है।

प्रस्तुत अंक में सभी रचनाकारों ने अपनी स्वाभाविक मौलिकता और रचनाधर्मिता की बदौलत पाठकों का ध्यानाकर्षण करने की भरपूर कोशिश की है। उम्मीद है, वह आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरेंगे। साथ ही मैं अपने सभी प्रबुद्ध पाठकों से अनुरोध करता हूँ कि वह भी अपने विचारों एवं अनुभवों को लेखनी मे परिणत करें जिससे कि हम सभी साहित्य प्रेमी विविधपूर्ण रचनाओं का सुखद रसास्वादन कर सकें।

नूतन अंक आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरे, इन्हीं आकांक्षाओं के साथ,

आपका स्व
आलोक कुमार

उदयाचल का 39वाँ अंक (संयुक्तांक) झारखण्ड के महान साहित्यकारों यथा कामिल बुल्के, शरत चन्द्र रॉय, फादर जॉन बैपटिस्ट, हाफमैन, राधा कृष्ण, राम नारायण सिंह इत्यादि को सादर समर्पित ।

"उदयाचल परिवार"

रिटर्न गिफ्ट

– हेमन्त कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय मित्र सुन्दर अपनी शादी की 25वीं सालगिरह मना रहा था। इस आलोक में उसने मुझे भी आमंत्रित किया था। मैं भी बड़ा प्रसन्न था और पूरे उत्साह से लबरेज था।

शाम होते ही मैं अपने मित्र के लिए एक गिफ्ट ले आया था। मेरी पत्नी ने गिफ्ट देखा, तो वह नाराज हो गईं। उसने कहा– भले ही आप अकेले जा रहे हैं, लेकिन यह गिफ्ट आपके स्टेटस से मैच नहीं करता है। आप इसे लौटाकर इससे अच्छी और महँगी गिफ्ट ले आएं। मुझे भी पत्नी की बात सही लगी और मैंने तुरन्त उसे लौटाकर एक अच्छी एवं महँगी गिफ्ट ले आया। अब मैं यथाशीघ्र आयोजन स्थल पर पहुँचने की तैयारी करने लगा।

इसी समय अन्तराल में मेरे एक अन्य कार्यालय मित्र पवन ने मुझे फोन किया कि हमलोग भी सुन्दर की सालगिरह में ही जा रहे हैं। यदि आपकी इच्छा हो तो, मैं गाड़ी लेकर आपके घर आ जाता हूँ। हमलोग साथ चलें, तो अच्छा रहेगा।

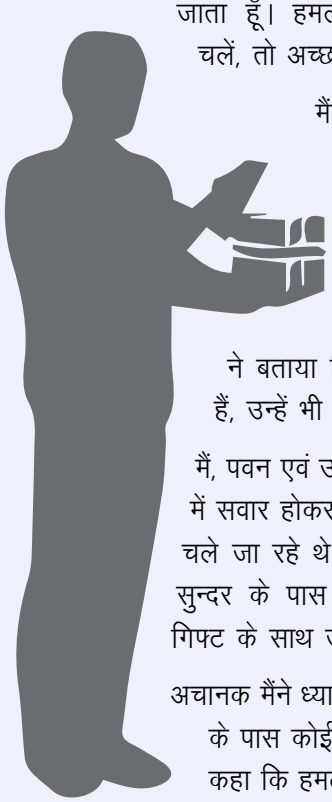

मैंने भी यथाशीघ्र हामी भर दी। कुछ ही समय में पवन अपनी पत्नी के साथ मेरे घर आ पहुँचा। पवन ने बताया कि मेरी एक पड़ोसन भी गाड़ी में हैं, उन्हें भी सुन्दर ने आमंत्रित किया है।

मैं, पवन एवं उसकी पत्नी एवं देविका भाभी गाड़ी में सवार होकर तेजी से आयोजन स्थल की ओर चले जा रहे थे। मैं बड़ा खुश था और यथाशीघ्र सुन्दर के पास पहुँचना चाहता था, ताकि, उसे गिफ्ट के साथ जल्द से जल्द बधाई दे सकूँ।

अचानक मैंने ध्यान दिया कि पवन एवं देविका भाभी के पास कोई गिफ्ट नहीं है। पूछने पर पवन ने कहा कि हमलोग वहाँ जा रहे हैं, क्या यही कम है। गिफ्ट की क्या जरूरत है। देविका भाभी ने कहा कि गिफ्ट ले जाना आजकल आउट डेटेड फैशन है। इसकी कोई जरूरत नहीं है।

आयोजन स्थल पहुँचकर मैं तेजी से गाड़ी से उतरा और लपक कर सुन्दर और उसकी पत्नी के पास पहुँचा। उनसे गर्मजोशी से मिलकर मैंने उन्हें लख–लख बधाइयाँ दी और चमचमाती गिफ्ट सुन्दर के हाथों में रख दी। सुन्दर और उसकी पत्नी ने मुझे धन्यवाद कहा एवं आग्रह किया कि मैं डिनर कर लूँ। सुन्दर ने बड़ा ही अच्छा एवं भव्य आयोजन किया था। तरह–तरह के पकवानों की खुशबू से आयोजन स्थल महक रहा था। मैंने भी प्रसन्नचित्त होकर भोजन किया और वापस घर लौटने की तैयारी करने लगा।

अचानक मेरी निगाह कुछ लोगों पर पड़ी, जिनके हाथों में चमचमाती आकर्षक रिटर्न गिफ्ट थी। पवन एवं देविका भाभी के हाथों में भी रिटर्न गिफ्ट थी और वे बड़े ही अधिकारपूर्ण तरीके से उसे अपने हाथों में पकड़े हुए थे। वहाँ सभी के हाथों में रिटर्न गिफ्ट नहीं था, कुछ के हाथों में था, तो कुछ के हाथों में नहीं भी था। मैं उस श्रेणी में था जिसके हाथों में रिटर्न गिफ्ट नहीं था।

गाड़ी तेजी गति से आगे बढ़ी चली जा रही थी और मुझे महसूस हो रहा था कि गाड़ी काफी धीमी गति से आगे बढ़ रही है।

अब मैं जल्द से जल्द वापस अपने घर पहुंचना चाहता था। मुझे गाड़ी के अन्दर काफी घुटन महसूस हो रही थी। तभी पवन ने गाड़ी के अन्दर एफ.एम.रेडियो ऑन कर दिया और हवाओं में एक गीत गूंजने लगा

''मतलबी हैं लोग यहाँ, मतलबी जमाना।
सोचा साया साथ देगा, निकला वो बेगाना।।
निकला वो बेगाना.....।।''

■■■

राम वाल्मीकि कथा के मिथकीय पात्र नहीं हैं बल्कि वे इतिहास पुरुष हैं
जिनकी व्याप्ति सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में है - फादर कामिल बुल्के

साँवली बहु

– आलोक कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बेटे की शादी करनी है – हर जवान बेटे की माँ की तरह इस माँ ने भी बड़े ही अरमानों के साथ अपने युवा बेटे के लिए बहु की तलाश शुरू कर दी थी। काफी प्रयासों के बाद बेटे को सरकारी नौकरी मिली थी। बिना नौकरी, अच्छी बहू और अच्छा परिवार मिलना लगभग नामुमकिन था, सो नौकरी तलाश में भटकते बेटे की व्यथा ने माँ के बहु लाने संबंधी सपनों का गला घोंट रखा था। पर जैसे ही सरकारी नौकरी लगी, माँ के अरमानों ने पंख लगाने शुरू कर दिए। बेटे ने भी हामी भर दी थी, उसे भी तो इसी पल का इंतजार था। उसकी उम्र के कितने संगी–साथी कब के अपनी गृहस्थी बसा चुके थे। कितनों की संताने भी पैदा हो चुकी थी। वह जब भी इन साथियों से मिलता, उसके अंदर एक टीस सी उठती। जान पहचान के लोग भी बढ़ती उम्र का हवाला देकर आग में घी डालने का काम करते।

बहु की तलाश जोर–शोर से शुरू की गयी। सभी नाते रिश्तेदारों को बता और जता दिया गया कि जहाँ कहीं भी सुयोग्य कन्या हो, उन्हें सूचित कर दिया जाए। यूँ तो पहले भी कई लड़की वाले रिश्ते की बातचीत के लिए आते थे, परंतु लड़के की बेरोजगारी के बारे में जानकर कदम पीछे कर लेते थे। अब सभी इच्छुकों को लड़के के सरकारी नौकरी प्राप्त होने की जानकारी देने की जरूरत थी।

पर बुरा हो आज के जमाने का, पता नहीं इस समय लड़कियों का टोटा सा पड़ गया था या कि किस्मत जैसे रूठी हुई थी, लड़की वाले उस संख्या और गुणवत्ता के हिसाब से नहीं आ रहे थे, जैसे की अपेक्षा थी। यदि आज से दस साल पहले की बात होती तो इसी सरकारी नौकरी प्राप्त युवा के लिए एक से एक घरों से रिश्ते आते, परिवार वाले लड़की देखते–देखते परेशान हो जाते, परंतु आज लड़की वाले भी चूजी हो गये थे। उन्हे भी सर्वगुण संपन्न वर चाहिए था! लड़का सरकारी नौकरी में है, यही पर्याप्त न था। सरकारी नौकरी की प्रकृति और ओहदा भी देखा जाने लगा था। समाज में लड़कियाँ शिक्षित होने लगी थीं। आर्थिक संपन्नता बढ़ने के साथ ही साथ माँ बाप की सोच भी बदलने लगी थी। बिटिया की शादी ही एकमात्र दायित्व न था, बिटिया की शिक्षा भी मायने रखती थी। शिक्षित कन्याओं की अपनी आशाएँ और आकांक्षाएँ थीं, जिसे मानना पालकों का कर्तव्य था। भावी जीवनसाथी के चेहरे–मोहरे के साथ–साथ स्वभाव व ओहदे का भी विश्लेषण किया जाने लगा था।

इन सभी परिस्थितियों के कारण हमारी कहानी के नायक श्रीमान समीर जी के रिश्ते के लिए अपेक्षाकृत कम संख्या में लड़की वाले प्रस्तुत हो रहे थे। प्रायः सभी रिश्तों में कुछ न कुछ कमियां थी। किसी लड़की के पिता गुजर चुके थे, तो कोई लड़की अधिक उम्र की थी। कुछेक लड़कियाँ तो अभी ठीक से बालिग भी न हुई थी कि पालनहारों ने हाथ पीले करने कि कवायद शुरू कर दी थी। ऐसे में उम्र का अत्यधिक फासला परिवार को नागवार लग रहा था। फिर भी आगे बढ़ने के खयाल से लड़की देखने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई। प्रत्येक वधू परीक्षण कार्यक्रम के साथ परिवार में विचार–विमर्श का दौर शुरू हो जाता। घर के सभी सदस्य भाई–भाभी, बहन–बहनोई इकट्ठा होते और भावी वधू के रूप–रंग, शील–स्वभाव पर टीका टिप्पणी की जाती। पुरानी परंपरा के अनुसार, शुरूआत में पुरूष सदस्य लड़की देखने जाते। यदि लड़की पसंद आती तो महिला सदस्यों के द्वारा देखने का कार्यक्रम बनता।

समीप वाले शहर के एक सज्जन का आगमन हुआ। कन्या उनकी भांजी थी। फोटो दिखाया गया। लड़की सुंदर और आधुनिक थी। ऐसा उसके पहनावे को देख कर लग रहा था। आधुनिकता में कोई बुराई न थी, आज के युवा ऐसे ही जीवन साथी की तलाश में रहते हैं। मामाजी से परिवार के बारे में जानकारी ली जाने लगी। तय हुआ कि लड़की देखी जानी चाहिए। इस सिलसिले मे लड़की के मामाजी का दो–तीन बार आगमन हो चुका था, परन्तु उनके साथ किसी अन्य सदस्य का न आना खटक रहा था। बातों–बातों में पता चला कि लड़की महत्वाकांक्षी है। मॉडलिंग के क्षेत्र में कार्य करने की इच्छुक थी, इसी कारणवश पिता थोड़े नाराज चल रहे हैं। स्मार्ट एवं सुंदर होने के कारण लड़के छेड़ते भी थे, जिसके कारण न तो उच्च शिक्षा प्राप्त कर पायी और न

ही नौकरी। मामाजी ऐसी बातों की चर्चा निसंकोच कर रहे थे, मानो इसका सकारात्मक असर पड़ने वाला हो। उनकी नजर में शायद इससे लड़की की सुंदरता और स्मार्टनेस की अमिट छाप पड़ने वाली हो। परन्तु, इस परिवार पर इन बातों का विपरीत असर पड़ा। समीर की माताजी को यह कतई मंजूर नहीं था कि ऐसी अत्याधुनिक लड़की उनके घर की बहु बने। परिणाम यह हुआ कि बात लड़की देखा–देखी तक भी न पहुँच पायी।

कुछ दिनों के बाद एक और रिश्ता आया। वधू पक्ष गंगा पार के गाँव के रहने वाले थे। मध्य एवं दक्षिणी बिहार प्रांत के रहने वाले लोग गंगा नदी के उस पार उत्तरी बिहार के निवासियों से सामाजिक और सांस्कृतिक तौर पर थोड़ी भिन्नता का अनुभव करते हैं। एक तो भाषा अलग हो जाती है और दूसरा खान–पान भी बदल जाता है। आवागमन की कठिनाइयाँ जो होती है सो है ही। समीर जी की भाभी को गंगा पार से देवरानी लाना पसंद न था। उनकी मायके की अपनी भाभी उसी इलाके से आई थी। अत्यधिक दूरी के कारण बिचारी मायके जाने के लिए तरस जाती थी। इस कारण दाम्पत्य जीवन सुखमय न था। अक्सर ही खट–पट होती रहती थी। यह उनका निजी विचार था, परिवार के अन्य सदस्य इस बात से सहमत न थे, परन्तु घर की बड़ी बहु से असहमत होने का जोखिम कौन मोल ले। समझाने की बहुत कोशिश की गयी कि कम से कम लड़की तो देख ली जाए। उसके बाद जैसा समझ आए विचार विमर्श उपरांत निर्णय लिया जा सकता है, परंतु बड़ी बहु की ठंडी प्रतिक्रिया से बात आगे न बढ़ पा रही थी। उनके अपने मायके का अनुभव इस रिश्ते के आड़े आ रहा था। किसी एक व्यक्ति के अनुभव को आधार मानकर समूची गंगा पार की आबादी को अस्वीकृत कर दिया गया था। व्यक्तिपरक उदाहरण को समष्टिपरक में बदलना मानव की स्वभावगत विशेषता है, जिसे बदलना हर किसी के वश की बात न थी। बहरहाल इस रिश्ते का तो यहीं पूर्ण विराम हो गया।

इन सब घटनाचक्रों के बीच माताजी की अधीरता व्यग्रता में बदलने लगी थी। समय बीतता जा रहा था और बहु के आगमन की घड़ी दूर–दूर तक नजर न आ रही थी। बेटे की नौकरी जरा देर से लगी थी। इस कारण बढ़ती उम्र की झलक साफ नजर आ रही थी। समीर नौकरी की व्यस्तताओं में उलझा हुआ था। पहली बार घर से बाहर होने के कारण जीवन के अनेक मूलभूत कार्यों से पाला पहली बार पड़ा था। जीवन निर्वाह में हर छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीजों का खयाल खुद रखना पड़ रहा था। बर्तन से लेकर राशन तक का इंतजाम करना और खाना पकाने की जद्दोजहद उसके लिए कष्टकारी साबित हो रहे थे। नौकरी की कार्यावधि भी नियमित न थी। कार्य का समय बदलता रहता। जरूरत के मुताबिक कभी दिन, तो कभी रात में ड्यूटी पड़ती। कार्य की अवधि, कम से से कम 8 घंटे से अधिकतम 24 घंटे तक खींच जाती। इस प्रकार की अनियमित दिनचर्या ने उनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालना शुरू कर दिया था। जीवन की परेशानियों ने स्वभाव में चिड़चिड़ाहट पैदा कर दी, जो सामान्य बातचीत में प्रकट होने लगी थी। घर के अनुभवी जनों ने जान लिया था कि जितनी जल्दी शादी हो जाए, उतना ही अच्छा है।

एक दिन उसी शहर में रहने वाले एक सज्जन अपने साढ़ू की बेटी का रिश्ता लेकर समीर के माताजी से मिले। लड़की सामान्य पढ़ी लिखी थी, पिता का देहांत हो जाने के उपरांत उच्च शिक्षा प्राप्त न कर पायी थी। चार भाइयों के बीच इकलौती बहन थी। पिता की असमय मृत्यु हो जाने के कारण परिवार चलाने की जिम्मेवारी बड़े भाई पर आन पड़ी थी, जो ट्यूशन दे कर पूरे परिवार का भरण पोषण कर रहा था। दूसरा भाई प्राइवेट नौकरी कर रहा था। तीसरे नंबर वाला भाई साधारण व्यवसाय में लगा था, जबकि सबसे छोटा भाई दसवीं की पढ़ाई कर रहा था। यह निम्न मध्यम वर्गीय परिवार जी–जान से जीवन की दैनिक कठिनाइयों से जूझ रहा था। लड़की सयानी हो चुकी थी। पढ़ाई लिखाई में रूचि न होने के कारण परिवार जल्द से जल्द बेटी की शादी कर अपनी जिम्मेदारी से निवृत होने की चेष्टा में लगा हुआ था। लड़की की साँवली सूरत और पिता का अभाव रिश्ते में बाधा उत्पन्न कर रहे थे। अनेक लड़के वालों ने इस कारण रिश्ता अस्वीकृत कर दिया था।

लड़की के मौसाजी एक प्राइवेट बैंक में मैनेजर के पद पर कार्यरत थे। बड़े शहरों के पढ़े लिखे लोगों के बीच इन बैंकों की छवि अच्छी न थी। प्रायः लोग ब्याज दर ऊंची होने के बावजूद विश्वसनीयता के अभाव के कारण इनमें निवेश से बचते थे, पर छोटे कस्बों में इन बैंकों का जन समूह पर अच्छा खासा प्रभाव था। कर्मचारी कम पढ़ी लिखी जनता को चिकनी चुपड़ी बातों में फँसाकर और ऊँचे ब्याज दर का लालच दे कर पैसे जमा करवाने में कामयाब हो जाते थे। जमा राशि स्वीकार करने के अलावा इन बैंकों के द्वारा ऋण देने का भी कार्य किया जाता था। इनकी ऋण की ब्याज दर सरकारी बैंकों की तुलना में तो महँगी होती है, परंतु सूदखोर साहूकारों की तुलना में बहुत सस्ती होती है, जिस कारण जरूरतमन्द अपनी चल–अचल संपति गिरवी रख इन बैंकों से ऋण लेते थे। इस कारणवश बैंक के मैनेजर साहब का शहर के लोगों पर अच्छा खासा प्रभाव था। इस प्रभाव का इस्तेमाल मैनेजर साहब ने समीर की माताजी को प्रभावित करने के लिए किया। विभिन्न परिचितों के माध्यम से मैनेजर साहब ने माताजी को प्रभावित करने में कोई कसर न छोड़ी।

समीर की माताजी एक सीधी–साधी घरेलू गृहिणी थीं। पति की हाल ही में एक लंबी बीमारी के उपरांत मृत्यु हुई थी। एक लंबे

बच्चों को पालना, उन्हें अच्छे व्यवहार की शिक्षा देना भी सेवाकार्य है,
क्योंकि यह उनका जीवन सुखी बनाता है। - स्वामी राम सुखदास

अरसे के साथ के बाद जीवनसाथी का अलगाव बड़ा ही दुखदाई होता है। जीवन के संध्या काल में जब साथी की जरूरत सबसे ज्यादा महसूस होती है, उस समय वियोग की पीड़ा सामान्य व्यक्ति के लिए असहनीय हो जाती है। यदि वैराग्य का भाव घर कर जाए, तब तो ठीक है वरना इस परिस्थिति से उबरने में काफी समय लग जाता है। समीर की माताजी ने काफी हद तक अपने आप को संभालने की कोशिश की, परंतु अक्सर ही यह पीड़ा शारीरिक व्याधियों के रूप में प्रकट होती रहती थी।

मैनेजर साहब ने माताजी की इस मानसिक अवस्था का पूरा लाभ उठाया। अक्सर ही सपत्नीक समीर के घर पधारते और मीठी लच्छेदार बातों से उनका मन जीतने की कोशिश करते। अपनी भतीजी के गुणों का बखान करते। लड़की कितनी सुशील है, संस्कारी है, गृह कार्य मे दक्ष है, पारिवारिक है, इन सब बातों को किसी न किसी बहाने से जता कर माताजी को प्रभावित करने की कोशिश की जाती। माताजी को भी अच्छा लगता। अकेलेपन के बोरियत से मुक्ति मिलती। लड़की की मौसीजी बड़ी ही वाक्पटु महिला थीं। स्त्रियोचित बातों से माताजी का दिल जीतने की कोशिश में लगी हुई थीं। सरल महिला को वश मे कर बेटी का ब्याह करवाने के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी गयी।

वधू देखने के कार्यक्रम के दौरान लड़की की मौसीजी पास में ही बैठतीं। लड़की से जितने भी प्रश्न पूछे जाते, उन सबमे किसी न किसी तरह से बातों का सूत्र अपने हाथों मे रखने की कोशिश करतीं। घरेलू काम काज संबन्धित टेढ़े सवालों में लड़की को ज्यादा बोलने का मौका दिये बिना इधर–उधर की चतुराई भरी बातों से संतुष्ट करने का प्रयास किया जाता। लड़की भी स्वभावतः चतुर थी। सामान्य सवालों का आदर्श जवाब देकर वर पक्ष को प्रभावित करने में सफल रही थी। बात अटक रही थी तो उसके रंग रूप और परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति पर।

समीर के बहनोई थोड़े आध्यात्मिक प्रकृति के इंसान थे। वधू के चयन में उनकी भी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। उनका मानना था कि इंसान का रूप रंग ज्यादा मायने नहीं रखता है। बाह्य रूप तो अस्थायी होता है, थोड़े समय के लिए प्रभावकारी हो सकता है, परंतु जो चीरस्थायी है वो है स्वभाव की मधुरता, कार्यों में दक्षता और व्यवहार–कुशलता। प्रायः यह पाया जाता है कि सुंदर लड़कियाँ अपने रूप के अभिमान में गर्वित रहती हैं और व्यवहार में रूखी। घर के कामकाज मे थोड़ा कम ही मन लगता है। माँ–बाप भी अक्सर ऐसी बेटियों को ज्यादा छूट देकर रखते हैं, उन्हें भी विश्वास रहता है कि सुंदर लड़कियों का रिश्ता आसानी से हो जाएगा। पूरी दुनिया सुंदरता पर मुग्ध जो है। हालांकि यह धारणा शत प्रतिशत सही नहीं होती है, बहुत सी सुंदर लड़कियाँ भी स्वभाव से सुशील और गृह कार्यों में निपुण होती हैं।

समाज में दूसरी प्रचलित धारणा यह है कि साँवली और साधारण शक्ल–सूरत की लड़कियाँ गृहस्थी के कार्यों में अव्वल होती हैं। अभिभावक उन्हें ज्यादा लाड़ में बिगाड़ने के बजाय अनुशासन में रखते हैं ताकि सद्गुणों का विकास हो सके। सुंदरता की कमी को गुणों के अतिरिक्त संचयन से पूरा करने का प्रयास किया जाता है। लड़की भी समाज के नजरिये को समझते हुए जीवन में अच्छे गुणों को आत्मसात करने की कोशिश करती है। प्रायः यह पाया जाता है कि ऐसी लड़कियाँ अच्छी गृहिणी सिद्ध होती हैं।

कुछ इस तरह की सोच के साथ समीर के परिवार ने इस रिश्ते को परखना शुरू किया। लड़की के पिता का गुजर जाना एक अतिरिक्त सहानुभूति प्रदान कर रहा था। जहाँ दूसरे वर पक्ष एक इसी कारणवश रिश्ता ठुकराने में एक पल की भी देरी न लगाते, वहीं यह परिवार ऐसा था, जिसने मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदना के कारण ऐसी कन्या को अपनाने में लेश मात्र का संकोच न किया।

विधि के विधान के अनुसार, समीर के विवाह की तिथि निश्चित हो गयी। लग्न मुहूर्त छह महीने के बाद का के निकला। आधुनिक समय अनुसार अंतराल कुछ ज्यादा ही लंबा था। एक बार विवाह तय होने के पश्चात् वर और वधू का वियोग कष्टकारी हो जाता है। आज के जमाने में मोबाइल ने काफी हद तक दूरियों को मिटाने का काम किया है। एक दूसरे की शक्ल देखते हुए बाते करने से प्रत्यक्ष

मिलने–सा अहसास हो जाता है, परंतु विवाहातुर भावी नवदंपतियों को इतने से भला कहाँ संतोष हो। दिन–भर की वीडियो कॉलिंग और चौटिंग के पश्चात् भी बहुत कुछ अधूरा रह जाता था। इस लंबी अवधि के अंतराल ने इस युवा जोड़े को खूब परेशान किया।

वैसे यह अंतराल बुरा न था! एक दूसरे के स्वभाव को समझने और नए वातावरण मे वधू को ढलने के लिए तैयार होने का यह अच्छा मौका था। समीर जब भी छूट्टियों मे घर आता, सदा अपने मोबाइल में ही उलझा रहता। अधिकांश समय भावी जीवनसाथी से बातें करने में ही बीत जाते। जब बात नहीं हो रही होती, तब मैसेज का आदान–प्रदान होता। संदेशों के रूप में बीप की आवाज से आस–पास के लोग जान जाते कि अधीर जीवनसंगिनी ने कुछ महत्त्वपूर्ण वेदना प्रकट की है। माताजी झुंझलातीं जब देखो मोबाइल मे घुसा रहता है, पता नहीं क्या करता रहता है। बाकी लोगों के चेहरों पर मुस्कुराहट आ जाती। मंजिल के पास पहुँचने पर आकुलता बढ़ ही जाती है। मानव के स्वभाव की इस विशेषता से सभी परिचित थे। परंतु समीर का घर के जरूरी उत्तरदायित्वों पर ध्यान न देकर मोबाइल पर उलझे रहने की प्रवृति घरवालों को थोड़ी नागवार गुजरती।

शादी की नियत तिथि आ गयी थी। विवाह संबंधी सारे कार्यक्रम शांतिपूर्वक सम्पन्न हो गए थे। वधू मायके की दहलीज लांघकर ससुराल की परिधि में प्रवेश कर गयी थी। हर लड़की की तरह यह घड़ी उसके लिए बड़ी ही महत्त्वपूर्ण थी। शादी के पूर्व उसकी जितनी अभिलाषाएँ थीं, उन्हें पूरा करने की घड़ी आ चुकी थी। इसके साथ ही ससुराल पक्ष भी नववधू से संभावित आकांक्षाओं के पूरा होने की आस लगाए हुए था। हर रिश्ते की अपनी मर्यादा होती है। कुछ अधिकार होते हैं, तो कुछ कर्तव्य भी होते हैं। रिश्तों के सुचारू रूप से निर्वहन के लिए यह जरूरी होता है कि इन अधिकारों और कर्त्तव्यों के बीच संतुलन बना रहे। अक्सर ही नववधू अनुभवहीनता के कारण सामंजस्य बिठाने में असफल हो जाती है। ऐसी स्थिति में परिवार के बुजुर्ग अपने अनुभव से सीख देने की कोशिश करते हैं ताकि गृहस्थी की गाड़ी सुचारू रूप से चलती रहे। नयी बहू से यह अपेक्षा की जाती है कि वह आज्ञाकारी बन कर घर के बड़े बुजुर्गों द्वारा दी गयी नसीहतों को ध्यान से सुने, उस पर विचार करे और जीवन में अनुसरण करे।

विवाह के पूर्व लड़की देखने के दौरान जो भी प्रश्न पूछे जाते हैं, उसके माध्यम से यह भी जानने की कोशिश की जाती है कि लड़की का स्वभाव नसीहतों के प्रति कैसा है। क्या वह सुझावों के प्रति गंभीर है अथवा अपनी मनमर्जी करने वाली है। वास्तविक दृष्टिकोण का पता तो अब चलने वाला था। पूर्व मे पूछे गए प्रश्नों के सैद्धांतिक जवाबों की सत्यता की परीक्षा अब होने वाली थी। नयी बहू को ससुराल मे आए हुए महीने भर से ऊपर हो चुका था। इस एक महीने में उसके व्यक्तित्व के कई सारे परतों से रहस्य का पर्दा उठ चुका था। कई सारे परत खुलने अभी बाकी थे। ससुराल पक्ष की आशाओं के विपरीत बहू गृह कार्यों मे फिसड्डी साबित हुई थी। गृहस्थी के कार्यो में बहू को कोई खास रूचि न थी। काम में मन न लगाना और काम से जी चुराना स्पष्टतः प्रतीत हो रहा था। उसका व्यक्तित्व चिकने घड़े के समान था, जिस पर सलाह रूपी पानी टिक न पाता था। अप्रत्यक्ष रूप से कही बातें तो दूर, प्रत्यक्षतः कही गयी बातें भी बहू की संवेदनाएँ कुरेद नहीं पाती थीं। इतनी असंवेदनशील और सुस्त बहू की कल्पना ससुराल में शायद किसी ने न की थी।

बहू के इस व्यवहार की चर्चा जब समीर की माताजी ने उसके मायके वालों से की तो, उसकी मौसी ने हंस कर जवाब दिया – "अरे! वह अभी तक ऐसे ही करती है। हम लोग तो समझे कि ससुराल जाकर वह सुधर गयी होगी।" जवाब सुनकर सभी सकते में आ गये। इसका मतलब है कि बहू के बारे मे जान–बूझकर झूठ बोला गया था। यह तो सरासर धोखाधड़ी थी। क्या शादी करवाने के लिए इस प्रकार झूठ बोलना शोभा देता है ? आगे जब बहू के गृह कार्यों मे फिसड्डी होने की बात इन्हीं मौसीजी से कही गयी तो व्यंग्य भरा जवाब हाजिर था – "जब लड़की देखने आए थे, तो उस समय आप लोगों ने क्या देखा, जाँचा और परखा ? यह सब तो पहले समझ लेना चाहिए था न!

इस व्यंग्योक्ति कि किसी ने अपेक्षा न की थी। बड़ों का इस प्रकार झूठ बोलना और पकड़े जाने पर शर्मिंदा होने के बजाय धृष्टता पर उतर आना वाकई विस्मयकारी था। पर आज के जमाने में शायद यही चलन में था। सत्यवादिता की अपेक्षा निरर्थक साबित हुई थी। साँवले रंग और दुर्भाग्य पूर्ण परिस्थितियों से उपजी सहानुभूतिजन्य निर्णय यहाँ गलत साबित हुये थे।

व्यक्ति की कथनी और करनी में इतना अंतर संभवतः सरल स्वभाव वाले ससुराल पक्ष का प्रथम अनुभव था। पर अब क्या किया जा सकता था ? पिछली सारी बातों को भूलकर नए सिरे से नवागंतुक को सही सीख देना और सुघड़ रूप से गृहस्थी की गाड़ी मे चलने लायक बनाना ही समीर के परिवार का एकमात्र लक्ष्य बन चुका था। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिवार का हर सदस्य जी जान से जुट गया।

■■■

ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण है, शूर को जीवन तृण है, जिसने इंद्रियों को वश में किया उसको स्त्री तृण-तुल्य जान पड़ती है, निस्पृह को जगत तृण है। - चाणक्य

मम्मी! इछकूल नहीं जाना

26 फरवरी, 2020 में 4 साल के आरव का दाखिला उसके घर से 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जाने वाली एक स्कूल में कक्षा नर्सरी में हुआ। उसकी मम्मी ने उससे कहा था कि स्कूल में उसके बहुत सारे दोस्त होंगे, जिनके साथ वो बहुत खेलेगा, मस्ती करेगा– यह याद कर आरव बहुत उत्साहित रहता था। कभी–कभी घर पर शरारत करने पर उसकी माँ कहती– "आरव, इतनी शरारत नहीं करते हैं बेटा। नहीं तो मैं तुम्हारी टीचर से तुम्हारी कम्प्लेन कर दूंगी। आरव यह सुनकर शांत हो जाता, जैसे वह सब जानता हो कि टीचर उसे बैड बॉय कहेंगी।

इसी बीच, 25 मार्च 2020 को वैश्विक कोरोना महामारी के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए इसके रोकथाम में अत्यंत उपयोगी कदम "देशव्यापी लॉक–डाउन" की घोषणा भारत के प्रधानमंत्री जी के द्वारा कर दी गई। 3–4 महीना गुजरने के बाद सभी स्कूलों में ऑनलाइन पठनपाठन का कार्य शुरू कर दिया गया, जिससे कि बच्चों की अकादमिक शिक्षा में कोई बाधा उत्पन्न न हो।

आरव के स्कूल में भी ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन किया जाने लगा। उसकी स्कूल में खेलने–कूदने की तमन्ना अधूरी ही रह गई। लेकिन फिर भी, ऑनलाइन कक्षा के माध्यम से पढ़ाई तो जारी रखनी ही थी।

– **सुबोध कुमार**
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

मोबाईल फोन में Google Meet के माध्यम से होने वाली कक्षा में यह शरारती बच्चा बिल्कुल शांत रहता। टीचर के द्वारा पूछे जाने पर कभी कोई सवाल–जवाब भी नहीं करता। लेकिन, कक्षा समाप्त होने पर तुरंत खुशी से भागकर खेलने चला जाता। मम्मी भला करतीं भी क्या! ऑनलाइन कक्षा में 25–30 बच्चों की एक–साथ पढ़ाई होती थी। सभी बच्चे कुछ न कुछ शरारत करते ही रहते थे। टीचर उन्हें समझातीं, डाँटती..... फिर जाकर कक्षा पूरी होने पर वाट्सएप ग्रुप पर उस दिन पढ़ायी गई पाठय–पुस्तक के पृष्ठ का फोटो भेज देतीं। जिसे देखकर पैरेंट्स अपने बच्चों का क्लासवर्क और होमवर्क करवातें।

इसी तरह, ऑनलाइन पढ़ाई करते हुए नर्सरी कक्षा पास कर प्रेप में भी नामांकन हो गया। समय–समय पर स्कूल में आयोजित होने वाले कुछ समारोह/उत्सव के आयोजनों में अपने माता–पिता के साथ आरव स्कूल जाता और अपने क्लास के मित्रों के साथ खूब खेलता–कूदता, झूले झूलता, लुका–छिपी का खेल खेलता, साथ ही, चोटें भी लगती रहती थीं। अब आरव कुछ समझने लगा था। अन्य बच्चों की तरह पढ़ाई करने के लिए खुद अपनी मम्मी को बोलने भी लगा था। इससे उसकी माँ बहुत खुश होती। क्योंकि नर्सरी में तो वह ऑनलाइन क्लास के नाम से ही भागता रहता था। कभी–कभी तो वह अपनी मम्मी से ही गुस्सा होकर रोने भी लगता था।

इस तरह, धीरे–धीरे आरव अच्छे से अपनी पढ़ाई पूरी करने लगा। इससे खुश होकर उसके पिता उसके लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के खिलौने लाने लगे। शाम को आरव अपने दादा–दादी के साथ घर के पास के मैदान में खेलने जाया करता था। साथ ही, उसके पिताजी ने जो नई साईकिल उपहार में दी थी, उसे दादा जी के सहयोग से चलाने भी लगा था। बहुत अच्छे तरीके से परिवार के सभी सदस्यों के साथ खुशहाल जीवन का मजा ले रहा था आरव। इसी बीच आरव प्रेप की भी ऑनलाइन परीक्षा पास कर पहली कक्षा में चला गया।

अब सभी कक्षाओं के बच्चों को नियमित रूप से स्कूल में आने का आदेश दे दिया गया। आरव को जब इस बात का पता चला, तो उसने अपनी माँ से कहा– "मम्मी! मुझे इछकूल नहीं जाना। घर पर ही करनी है पढ़ाई।'' और फिर रोने लगा। कुछ दिनों के बाद, स्कूल जाने का दिन आ गया। आरव की मम्मी ने उसे दुलारते–समझाते हुए बड़े प्यार से स्कूल जाने के लिए तैयार किया। फिर भी, वह स्कूल जाने से इंकार करते हुए रो रहा था। इसे देखकर आरव के पापा ने उसे जोर की डाँट लगाते हुए कहा– ''आरव, तुम्हें डॉक्टर वाला खिलौना मैंने क्यों दिया है। जो कोई भी शरारत करेगा, उसे तुम्हें डॉक्टर बनकर इंजेक्शन देना है या नहीं। बेटा, स्कूल जाकर पढ़ाई करने पर ही तुम डॉक्टर बन सकते हो। इसलिए, तुम्हें रोज स्कूल जाना चाहिए। ठीक है.....'' आरव ने रोते हए कहा– हाँ, पापा!" फिर पिता ने बड़े प्यार से उसे बाँहों में उठाकर समझाया और रास्ते में कुछ टॉफी खरीदने की बात कहकर मोटरसाइकिल पर बैठाकर

घर से स्कूल की ओर निकल पड़े।

स्कूल कैंपस में बहुत सारे छोटे बच्चे ऐसे ही रो–रोकर अपनी–अपनी कक्षाओं में जा रहे थे। तभी स्कूल के गेटकीपर ने आरव से कहा– "रोते नहीं हैं बेटा। आप अच्छे बच्चे हो न। यहाँ बहुत सारे दोस्त बनेंगे आपके, आप उनके साथ खेलना और पढ़ाई करना। ठीक है। इसके बाद, आरव के पापा ने उसे उसकी कक्षा तक छोड़कर वापस घर की ओर चल पड़े। धीरे–धीरे दो–तीन महीने बीत गए। आरव की बहुत से बच्चों के साथ दोस्ती हो गई। धीरे–धीरे पढ़ाई में उसका मन भी लगने लगा। कभी–कभी स्कूल में हुई छोटी–मोटी घटनाओं के बारे में वह अपनी मम्मी को भी बताने लगा।

एक दिन, मम्मी अपने काम में व्यस्त थीं, दादी माँ टी.वी. पर भजन सुन रही थीं, पापा अपनी दाढ़ी बना रहे थे, तभी आरव ने जोर से कहा– "पापा, ये मम्मी को आप कहाँ से लेकर आए हैं। बिल्कुल भी अच्छी नहीं हैं। मेरा टाइम हो गया है इछकूल जाने का। मेरे दोस्त इछकूल पहुँच गए होंगे। मैं लेट हो जाउँगा। गेट वाले अंकल गेट बन्द कर देंगे। फिर मैं इछकूल कैसे जाउँगा।" यह सुनकर सभी हँसने लगे। इसी बीच मम्मी ने आवाज दी– "अभी टू जीरो ट्वेंटी मिनट्स बाकी है बेटा, स्कूल का गेट बन्द होने में। तब तक तुम्हारे पापा अपनी दाढ़ी बनाकर तैयार हो जाएंगे और मैं भी तुम्हारे लिए लंच बना लूँगी। ठीक है बेटा, मेरा राजा बेटा।''

एक दिन सायं काल में उसके पिता अपनी डयूटी से घर आए। आरव की मम्मी ने उनसे कहा– सुनते हैं जी, आरव के पापा! आज न आरव की टीचर ने स्कूल में उससे एक कविता पाठ करवाया है और टीचर ने आरव को "very good आरव" कहा है। यह बातें आरव दरवाजे के पीछे छिपकर सुन रहा था और मुस्कुरा भी रहा था। तभी उसके पापा ने कहा– ''अरे वाह! बहुत अच्छा। मेरा बेटा तो गुड बॉय है। कहाँ है आरव? मुझे वो कहीं दिखाई नहीं दे रहा है (आरव के पिता ने आरव को छिपते हुए देख लिया था)।" फिर आरव अपने पिता के पास आकर अपनी बाँहों में उठाने को कहा और बोला– पापा, मैं सुनाउँ। इछकूल में टीचर ने हमें आज क्या पढ़ाया। पापा ने कहा– हाँ, हाँ, बिल्कुल।

फिर आरव ने हिंदी पाठ सुनाया –

''छह छाल की छोकरी, भरकर लाई तोकरी,
तोकरी में आम है, नहीं बताती दाम है।।
दिखा–दिखाकर तोकरी, हमें बुलाती छोकरी,
हमको देती आम है, नहीं बताती नाम है,
नाम नहीं अब पूछना, हमें आम है चूसना।।"

यह सुनकर पापा बहुत खुश हुए और कहा– आज हम रेस्ट्राँ चलेंगे और आरव की फेवरेट आईस्क्रीम और चौमीन खाएंगे। आरव बहुत खुश हुआ और कहा– "पापा, पापा, मैं रोज इछकूल जाउंगा और डॉक्टर बनूँगा और फिर, दादा–दादी जी को इंजेक्छन दूंगा..... '' यह सुनकर सभी हँसने लगे और दादी बोलीं– बदमाश! मुझे सुई लगाएगा। ठीक है बेटा, लेकिन पहले बड़ा तो हो जाओ.....।

■■■

मन एक भीरु शत्रु है जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है। - प्रेमचंद

चिंटू की शादी

– श्रवण कुमार यादव
कक्षा 9

गाँवों में शादियां बड़े ही धूमधाम से मनायी जाती हैं, ऐसा इसलिए क्योंकि गांवों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सभी लोग शादियों में शामिल होते हैं। गांवों में समय से पूर्व विवाह होने की कुप्रथा भी सालों से चली आ रही है। ज्यादातर लड़के–लड़कियों का विवाह किशोरावस्था में ही कर दिया जाता है, जिससे समाज पर कुप्रभाव पड़ता है।

चिंटू अभी इण्टर पास ही किया था कि उसके माता –पिता के पास उसकी शादी के लिए रिश्ते आने लगे। उसकी उम्र 21 वर्ष थी। उसे शादी–ब्याह के बाद आने वाली पारिवारिक जिम्मेदारियों का अता–पता भी नहीं था। वह प्राइवेट जॉब कर अपना पॉकेट–खर्च निकालता था। उसकी आय बहुत कम थी। वह दिन प्रति दिन लापरवाह भी हो रहा था। ज्यादातर समय वह दोस्तों के साथ घूमने और खेलने में बिताता था। चिंटू के माता– पिता यह सोचकर उसकी शादी कर देना चाहते थे कि शादी के बाद वह अपने जीवन के प्रति गंभीर हो जाएगा और करियर पर ध्यान देगा।

चिंटू की शादी के लिए रिश्ते लाए माताजी के फूआ का बेटा–बीरू। बीरू ने कहा– ''दीदी लड़की अच्छी है, खूबसूरत है, पूरी गोरी नहीं है, लेकिन मुँह खुलता है'' (क्षेत्रीय भाषा में जिसका अर्थ है–सुंदर दिखना)। फिर माताजी बोली– लड़की कितनी पढ़ी है? बीरू ने जवाब दिया– मैट्रीक पास (फर्स्ट डिवीजन)। माताजी ने फिर प्रश्न किया – ''उसका व्यवहार, रहन–सहन, तौर–तरीके, घर में काम करने की कुशलता आदि बातें भी खुलकर बताओ, कुछ छुपाओं नहीं, आखिर चिंटू की शादी बार–बार नहीं एक ही बार करनी है। उसकी जिंदगी का सवाल है। अगर चिंटू को लड़की पसंद नहीं आई, तो वह मुझे जीवन भर कोसता रहेगा। बीरू ने कहा – ''दीदी तुम निश्चिंत रहो, मैं उस लड़की और उसके खानदान को अच्छी तरह से जानता हूं। लड़की का मामा मेरा ससुर है, मैं लड़की के घर कई बार गया हूं''। माताजी ने अपनी सहमति जताते हुए बीरू से कहा – ठीक है, चिंटू के पापा से बातकर जल्द ही बताती हूं कि लड़की को देखने कब जाना है।

तिथि तय हुई और चिंटू के पिताजी मुहल्ले के अन्य गणमान्य व्यक्ति के साथ लड़की के यहां गए और लड़की तथा उनके घर वालों से बातें किए। चिंटू के पिताजी ने लड़की से पूछा– ''क्या नाम है तुम्हारा ? लड़की ने जवाब दिया– ''अंजली कुमारी''। चिंटू के पिताजी लड़की से और भी सामान्य जानकारी संबंधी बातें किये। इस प्रकार चिंटू के पिताजी को चिंटू और अंजली की जोड़ी सही लगी। चिंटू से घर वालों ने पूछा– ''तुम लड़की देखने जाओगे क्या?'' चिंटू ने जवाब दिया– मुझसे पूछकर आपलोग रिश्ते की बात करने गये थे क्या ? आपलोग देखने गए, आपलोगों को रिश्ता अच्छा लगा तो मुझे कोई दिक्कत नहीं। लेकिन मुझे अभी शादी करने का जरा भी मन नहीं है। मैं न तो अभी शादी के लायक हुआ हूं और न ही ठीक से पैसे ही कमाता हूं। चिंटू के पिताजी ने कहा– शादी कर लो, अभी अच्छी लड़की मिली है। तुम्हारा हाईट भी कम है, कल होकर लडकियां ही तुम्हें न छांट दें (मजाक करते हुए)। वैसे भी गांव में बहुत से

ऐसे लड़के हैं जो क्वालिफाइड हैं, मास्टर की डिग्री लिए हुए हैं, अच्छी नौकरी में है फिर भी उनकी शादियां समय पर नहीं हो रही हैं या हो भी रही है तो लड़के–लड़की का बेमेल जोडी। चिंटू के पिताजी का यह तर्क सही तो नहीं था, फिर भी उन्होंने चिंटू की शादी जल्द करवाने का मन बना लिया था। वे चिंटू की बदमाशियों से काफी परेशान हो गये थे। उन्हें लगा कि लड़का शादी के उपरांत सुधर जायेगा। गांवों में अभी भी लोग यह मानते हैं कि बेटा–बेटी का जल्दी शादी करवा दें तो वें गंगा–स्नान कर लिए।

बीरू ने चिंटू को अंजली का फोटो दिखाया और बोला – ''लड़की खूबसूरत तो है ही, संस्कारी भी है। चिंटू कुछ नहीं बोला और अंजली के बारे में कल्पना करने लगा।

लड़की के घर वाले चिंटू के घर आए, वे भी लड़के को अपने स्तर से परखे, जाने–समझे। अंजली का भाई अपने साथ प्रोफेसर साहब को साथ लाया। प्रोफेसर साहब ने चिंटू से प्रश्न किया– कितनी पढाई किए हो? जी, बी.एस.सी(पार्ट–1)/फिजिक्स ऑनर्स। आपका डेट ऑफ बर्थ क्या है? मैट्रीक कब पास किए? वाट इज न्यूटन्स थर्ड लॉ? चिंटू ने एक–एक करके सभी प्रश्नों का उत्तर दिया। प्रोफेसर साहब फिर पूछे– शादी करने का मन है न? चिंटू ने जवाब दिया –हां।

चिंटू की शादी का निमंत्रण कार्ड छपने लगा। सभी रिश्तेदारों को निमंत्रण पत्र दिया गया। शादी की तारीख तय हुई– 10 अप्रैल। चिंटू की शादी में फूआ–फूफा, मामा–मामी, मौसा–मौसी सब रिश्तेदार आने को उत्सुक थे। शादी की तैयारियां होने लगी। बारात प्रस्थान के दिन ही चिंटू के पिताजी घर–ढलाई का काम लगाए थे जिसके कारण चिंटू के पिताजी पर काम का बोझ ज्यादा बढ़ गया था और वे शादी पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पा रहे थे।

चिंटू को इस बात की चिंता थी कि शादी में पहनने वाला कोर्ट–पैंट दर्जी के पास ही है। उसने मां से कहा– मां, मेरा कोर्ट–पैंट लाना है। मां ने कहा– तुम्हारे पापा अभी घर ढलवाने में बिजी है, उन्हें इस बात की तनिक भी चिंता नहीं है। चिंटू के भैया ने इस बात को सुनकर साढूजी के साथ फौरन दर्जी के पास कोर्ट–पैंट लाने चले गये। शादी के दिन खूब बारिश हुई। बारात लगभग 12 बजे रात लड़की के घर पहुंची। चिंटू के सभी साथी बारात में खूब नाचे। बड़े भैया जो आज तक कभी नाचे नहीं थे वे शादी में गर्दा उड़ा दिये यानी खूब नाचे।

चिंटू को शादी में रातभर जागना पड़ा। रातभर जागने से उसका चेहरा सुस्ताया लग रहा था। सुबह में विवाह–पूजा के समय पंडितजी जल्दी–जल्दी मंत्र पढने लगे और दूल्हा–दुल्हन को मंत्र उच्चारण करने के लिए बोले तो चिंटू ठीक से उच्चारण ही नहीं कर पाया। शादी हो गयी।

शादी के बाद चिंटू अब जीवन के प्रति ज्यादा गंभीर हो गया। वह नौकरियों के लिए फॉर्म भरने लगा। चिंटू के पिताजी भी उन्हें बार–बार नौकरी करने को प्रोत्साहित करते रहते। चिंटू के कई मित्र सरकारी नौकरी में लग गए थे। चिंटू के बड़े भैया उन्हें समझाते कि जीवन तुम्हें अपने तरीके से जीना है– चाहो तो तुम कलम चलाकर जिओ, चाहो तो कुदाल चलाकर। चिंटू को इस बात का एहसास हुआ कि जीवन भर शारीरिक मजदूरी करने से अच्छा है कि मेहनत से पढ़ाई कर नौकरी कर लिया जाय, जिससे जीवन भी सरल हो जायेगा। चिंटू के अथक प्रयास से उसे नौकरी लग गयी। अब वह अपने परिवार के साथ खुशहाल जिंदगी जी रहा है। लेकिन उसे अभी भी लगता है कि कम उम्र में शादी करना सही नहीं है। वह आजकल अपने से छोटे उम्र के युवाओं को सलाह देते रहता है कि पहले कॅरियर बनाओ, फिर शादी।

■■■

पुरुषार्थ से दरिद्रता का नाश होता है, जप से पाप दूर होता है, मौन से कलह की उत्पत्ति नहीं होती और सजगता से भय नहीं होता। - चाणक्य

प्रकृति से सीख

– सरदार जितेन्द्र सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मनुष्य का जीवन प्रकृति के बिना अधूरा है। प्रकृति से ही जीवन का सार है। हम चारों ओर प्रकृति से इस कदर घिरे हैं कि हमें पल पल उसके होने का एहसास होता रहता है। आज तक मनुष्य ने जो कुछ किया है वह प्रकृति से ही सीख कर ही किया है। प्रकृति हमारी पथ प्रदर्शक है, हमारी शिक्षक है। वैसे तो प्रकृति हर कदम पर हमें कुछ न कुछ सिखाती है, पर मैं पांच बातों का जिक्र करूंगा जो हमें प्रकृति सिखाती है:

1. नदी का प्रवाह ऊपर से शुरू होता है और नीचे की ओर जाता है :

कहते हैं ज्ञान और संस्कार ऐसी वस्तुयें हैं जो कि बांटने से बढ़ती है घटती नहीं है। जिस प्रकार नदी का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर होता है उसी प्रकार जीवन में ज्ञान व संस्कार का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर होता है। ज्ञान और संस्कार का दंभ भी उचित नहीं है । इससे कोई फायदा नहीं बल्कि नुकसान ही है। अतः हमें एक अविरल नदी की भांति अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त ज्ञान एवं संस्कार आने वाले वंशज को देना चाहिए।

2. कमल कीचड़ में रहकर अपनी पहचान बनाये रखता है

जिस प्रकार कीचड़ में रहकर भी कमल अपने अंदर कीचड़ वाले गुण विकसित नहीं होने देता, उसी प्रकार चाहे हमारे आस–पास कितनी ही बुराईयां हों पर उसे अपने अंदर पनपने नहीं देना चाहिए बल्कि हमें अपनी अलग पहचान बनानी चाहिए।

3. पतझड़ का मतलब पेड़ का अंत नहीं

मनुष्य का जीवन चुनौतियों और समस्यायों से भरा है। कभी कभी नियति जीवन के उस मोड़ पर लाकर खड़ा कर देती है कि जब महसूस होता है कि जैसे अब सब कुछ खत्म गया। इससे कई लोग डिप्रेशन में चले जाते हैं और कई लोग बड़ा और बेवकूफी भरा कदम उठा लेते हैं। जरा सोचिए, पतझड़ के समय जब पेड़ में एक भी पत्ती नहीं बचती तो क्या उस पेड़ का अंत हो जाता है? नहीं ना? पतझड़ बीतते ही उसके जीवन में फिर से बहार आ जाती है। ठीक ऐसे ही हमारे जीवन में कभी ऐसे पल आते हैं... तो यह अंत नहीं है। बल्कि ये इस बात का इशारा है कि हमारे जीवन में भी नयी बहार आएगी। अतः हमें सबकुछ भूलकर नयी जिंदगी की शुरुआत करनी चाहिए और यह विश्वास करना चाहिए कि नयी जिंदगी पुरानी से कहीं बेहतर होगी।

4. छोटे पौधों को विशाल पेड़ की तरह तैयार होने में समय लगता है

बीज से बांस के पौधे तक बनने तक का सफ़र अन्य पौधों की अपेक्षा बहुत अधिक समय लेने वाला होता है। उसे बराबर खाद, पानी और देखभाल की जरूरत होती है। उगाने वाले को बहुत ही संयम रखना होता है। परंतु जैसे ही वह पौधे का रूप धारण करता है उसे बढ़ कर अपने साथ वाले पौधे को पछाड़ने में समय नही लगता। उसी तरह हमारे लक्ष्य को भी पूरा होने में समय लगता है। लेकिन कुछ लोग धैर्य नहीं रख पाते और अपना काम बीच में छोड़ देते हैं। ऐसे करने वाले को बाद में पछतावा ही मिलता है। कहने का सार है कि बड़े लक्ष्य में सफलता के लिए कड़ी मेहनत के अलावा धैर्य की भी आवश्यकता होती है तभी उसमें सफलता मिलेगी।

5. ऊंचे पर्वतों में आवाज का परावर्तन

जब कोई पर्वत की ऊंची चोटी से जोर से आवाज लगाता है तो वही आवाज लौटकर वापस उसी को सुनाई देती है। विज्ञान में इस घटना को इको (Echo) कहते हैं। यही नियम हमारे जीवन में भी लागू होता है। हम वही पाते हैं जो हम दूसरों को देते हैं। हम जैसा व्यवहार दूसरों के लिए करते हैं वही हमें वापस मिलता है। यदि हम दूसरों का सम्मान करते हैं तो हमें भी सम्मान मिलेगा। यदि हम दूसरों के बारे में गलत भाव रखेंगे तो वापस वह हमें ही मिलेगा। अतः आप जैसा व्यवहार करें, याद रखिए कि वो लौटकर आपको ही मिलने वाला है।

धन्यवाद !

■■■

जिस प्रकार जल कमल के पत्ते पर नहीं ठहरता है, उसी प्रकार मुक्त आत्मा के कर्म उससे नहीं चिपकते हैं। -छांदोग्य उपनिषद

नींद और भूख

जिस प्रकार किसी मशीन अथवा यंत्र को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक समयावधि में उसे विराम देते हैं और आवश्यकतानुसार उसमें ईंधन डाला जाता है, ठीक उसी प्रकार मानव शरीर रूपी यंत्र को भी विराम एवं ईंधन की जरूरत होती है। हमारे शरीर में इसकी अनुभूति नींद एवं भूख से होती है। अर्थात् यदि हमें नींद आने लगे तो शयन के रूप में विराम देते हैं और भूख लगने लगे तो ईंधन के रूप में भोजन ग्रहण करते हैं।

मानव शरीर के स्वस्थ होने का पता इन दो सिंम्टम अर्थात लक्षणों से आसानी से लगाया जा सकता है – नींद एवं भूख। यदि हमें पर्याप्त नींद आ रही है और भूख लग रही है तो इसका अर्थ है कि हम स्वस्थ हैं। साथ ही, यदि नींद गहरी हो और भूख के लिए किया गया भोजन रूचिकर एवं स्वादिष्ट लगे तो यह समझ लें कि अभी किसी डॉक्टर या वैद्य की जरूरत नहीं है।

कहावत है – "अर्ध रोग हरे निद्रा, पूर्ण रोग हरे क्षुधा।" अर्थात् रोग हरने का आधा काम नींद कर देती है, भूख पूरी तरह से रोग का हरण कर देती है।

आयुर्वेद के अनुसार शरीर में बढ़े हुए पित्त को शान्त करने के लिए शयन अर्थात् नींद परम् लाभप्रद होता है।

चिकित्सा शास्त्र के अनुसार – "अनिद्रा रोग कारिणी।" अर्थात् नींद का नहीं आना ही बीमारी का पर्याय है और नींद का ठीक ढंग से आना बीमारी को दूर करने वाला होता है। जब कोई व्यक्ति बीमार होता है – चाहे बीमारी जो भी हो तो डॉक्टर उसे दवा या औषधि देकर यही कोशिश करते हैं कि उसे नींद एवं भूख आने लगे। जब नींद एवं भूख आने लगती है तो डॉक्टर उसे स्वस्थ घोषित कर देते हैं। नींद एवं भूख की कमी का पार्श्वप्रभाव अर्थात् साईड–इफेक्ट से ही तरह–तरह की बीमारियाँ पैदा होती हैं।

शरीर की पुष्टिता एवं कृशता अर्थात् स्ट्रॉगनेस एवं विकनेस नींद पर ही निर्भर करती है। ठीक ढंग से निद्रा–सेवन करने से रोग–प्रतिरोधक क्षमता अर्थात् इम्यूनिटी पावर बढ़ती है।

कहा गया है कि सृष्टि निर्माण के दौरान मानव शरीर के अंदर स्वचालित यंत्र विकसित किया गया, जो शरीर के किसी भी विकारों को स्वतः उपचार अर्थात् रिपेयर करता रहता है, बशर्ते कि यह विकार एक सीमा रेखा तक हो। जब इन विकारों की सीमा पार हो जाती है तो हमें डॉक्टर या वैद्य का सहारा लेना होता है। इन विकारों को बढ़ाने के लिए व्यक्ति खुद जिम्मेवार होता है। मानव जीवन कुछ शर्तों के साथ बँधा हुआ है, जिसमें सुख–दुःख, आनन्द–कष्ट, हास्य–विलाप, सफलता–असफलता, मधु–कटु, ज्ञान–अज्ञान आदि अपरिहार्य है। इनमें से सुख, आनन्द, हास्य, सफलता, ज्ञान आदि प्राप्त करने और दुःख, कष्ट, विलाप, असफलता, कटु, अज्ञान आदि से दूर भागने के कारण व्यक्ति शारीरिक विकारों को बढ़ावा देते हैं, जिसके फलस्वरूप नींद एवं भूख में असर पड़ती है और वे रोगग्रस्त हो जाते हैं। इससे तरह–तरह की बीमारियाँ उन्हें घेर लेती हैं।

– **मनोज कुमार,** न0 5,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आज मनुष्य सुख–सुविधा सम्पन्न होते हुए भी विभिन्न प्रकार के मनोविकारों के चलते अपने आपको सुरक्षित महसूस नहीं कर रहा है। भविष्य को लेकर तरह–तरह की भ्रान्तियाँ पाल रखा है। वर्तमान में अनावश्यक आवश्यकताओं को बढ़ावा दे रहा है। इससे मनःस्थितियाँ प्रदूषित अर्थात् मेन्टल पॉल्यूशन हो जाती है और नींद में खलल पड़ती है। भय, चिन्ता, क्रोध इत्यादि कारणों से व्यक्ति को नींद नहीं आती है। धूम्रपान, अल्कोहल सेवन, नमक का अतिसेवन, कोल्ड ड्रिंक्स, कॉफी, तले हुए आहार–द्रव्यों का अधिक सेवन करने से समय पर और गहरी नींद नहीं आती है। जब मनोविकारों के कारण नींद में व्यवधान हो तो हमें मेडिटेशन का सहारा लेना चाहिए। शुरूआत में यह व्यर्थ लग सकता है, परन्तु शनैः शनैः जब इसका असर होने लगे तो काफी कारगर सिद्ध होती है और हम अनावश्यक परेशानियों से बच सकते हैं।

गरूड़ पुराण में विवरण है कि दरिद्र को, नौकर को, दूसरों का पैसा हड़प जाने वालों को तथा दूसरे की स्त्री पर आसक्त व्यक्ति को पर्याप्त एवं गहरी नींद नहीं आती है। अतः इन विकारों से बचना चाहिए।

ब्रह्ममुहूर्त एवं संध्याकाल में शयन निषेध माना गया है। सोने का एक निश्चित समय निर्धारित करें, उस समय समस्त काम–काज छोड़कर अवश्य ही सो जाएं। इस समय टेलीविजन या मोबाइल का प्रयोग न करें। इससे स्वाभाविक एवं गहरी नींद आती है।

आयुर्वेद के अनुसार, मंदाग्नि अर्थात् भूख की कमी से ही रोग पैदा होता है। प्रखर जठराग्नि अर्थात् अच्छी भूख से रोगों का नाश होता है और शरीर में शक्ति का संचार होता है, शरीर को रस–रक्त आदि धातुओं का पोषण प्राप्त होता है।

स्कंद पुराण में कहा गया है कि दिन में इतना काम करें कि रात में सुखपूर्वक गहरी नींद लें। इससे भूख बढ़ती है और ग्रहण किया हुआ आहार पाचनक्रिया के उपरांत परमशक्ति प्रदान करता है।

■■■

ख्याति नदी की भाँति अपने उद्गम स्थल पर क्षीण ही रहती है
किंतु दूर जाकर विस्तृत हो जाती है। -भवभूति

दक्षिण भारत के दार्शनिक समाज सुधारक - वसवण्णा

– **विकास चन्द्र आजाद**
वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी

मानव जहाँ निरंतर वैज्ञानिक उपलब्धियों के आसीन होता रहा है, वहीं उसे साम्प्रदायिकता का विष निरंतर पतन की ओर ले जाता है। धर्म मनुष्य को मनुष्य से एवं जीव जगत से जोड़ने का कार्य करता है वहीं सांप्रदायिकता मानवता को विभाजित करती है। एक संप्रदाय दूसरे संप्रदाय के विधि विधानों की पूजा, उपासना और कर्मकांडों की खिल्ली उड़ाता है।

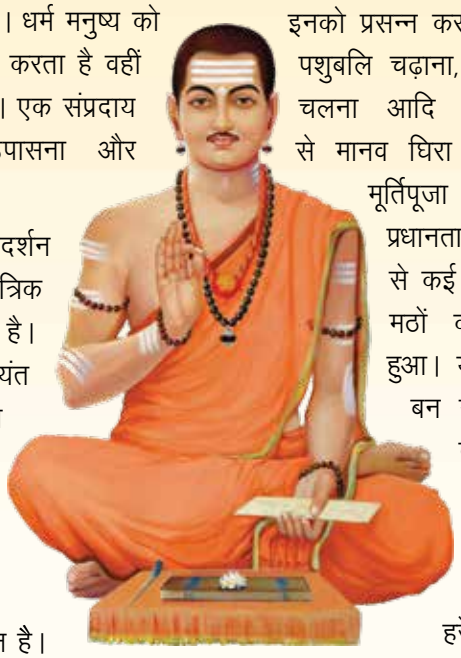

धर्म तत्वतः पूजा, उपासना एवं कर्मकांडों का प्रदर्शन भर नहीं है, बल्कि उदात्त जीवन मूल्यों के चारित्रिक संस्कृति और साधना का आचरणीय संविधान है। धर्म को धारण करना प्रत्येक वस्तु के लिए अत्यंत आवश्यक है, अन्यथा उस वस्तु का स्वभाव नष्ट हो जाएगा। जिस प्रकार अग्नि का धर्म दाहकता और पृथ्वी का धर्म गंध है, उसी प्रकार, मनुष्य का भी धर्म मानवता है जिसे धारण करने से व्यक्ति ''मानव'' कहलाता है।

धर्म का मानव जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि धर्म न होता मनुष्य उच्छृंखल, अनियंत्रित और भयावह हो जाता और वह हिंसक जानवरों और दानवों से भी ज्यादा खतरनाक हो जाता। भारतीय शास्त्रों में कहा गया है कि मनुष्य पशुओं की तरह मूल प्रवृत्तियों के साथ जन्म लेता है, परन्तु पशु जहाँ था, वहीं रह जाता है, जबकि धर्म के कारण मनुष्य आहार, निद्रा, भय और मैथुन की प्राकृतिक अवस्थाओं से ऊपर उठकर देवत्व को प्राप्त करता है। डॉ. राधाकृष्णन ने ठीक ही कहा है कि धर्म हमारी अंतरात्मा तक पहुँचता है, हमें बुराईयों से संघर्ष करना सिखाता है। वास्तव में धर्म एक प्रकार का सामाजिक परिपूर्णता का प्रयास है।

12वीं शताब्दी में दक्षिण भारतीय समाज पूरी तरह से सभी संकीर्णताओं से आक्रांत था। धर्म के स्वच्छ और निर्मल आकाश में जात–पात, छूआछूत, धार्मिक परिवेश, अंध श्रद्धा से भरे कर्मकांड, पंडित पुरोहितों का ढोंग और साम्प्रदायिक उन्माद चरम पर था। आम जनमानस धर्म के नाम पर दिग्भ्रमित था। कई प्रकार के धर्म उपधर्म की गलियों में मानव जन भटके हुए थे। शूद्रों का जीवन तो पशु पक्षियों से भी निम्न था। अस्पृश्य गाँव से हटकर दूर झोपड़ियों में रहते थे। इनको घंटी बजाते हुए गाँव में प्रवेश करना पड़ता था। उच्च जाति के लोगों की वाणी ही दूसरों के लिए धर्म थी।

लोग यह मानते थे कि गाँव के चारो दिशाओं में अनिष्ट शक्तियों का निवास है और उनकी असंतुष्टि के कारण बीमारियाँ फैलती है। इन्हें प्रसन्न करने के लिए ग्राम देवताओं की उपासना करते थे। इनको प्रसन्न करने के लिए पशुबलि चढ़ाना, अग्नि पर चलना आदि अंधश्रद्धाओं से मानव घिरा हुआ था। मूर्तिपूजा की प्रधानता के गर्भ से कई मंदिर और मठों का निर्माण हुआ। ये मंदिर शोषण और धनार्जन के केन्द्र बन गये थे। देवदासी पद्धति प्रचलित थी। देवदासियों को देवताओं के सम्मुख नृत्य प्रदर्शन करने के स्थान पर पुजारी और उच्च जाति के लोगों को अपना शरीर देना पड़ता था।

हरेक अंधकार सूर्य को आमंत्रणा देता है। अंधविश्वास तथा अंध श्रद्धा के कुहासों को चीर कर महात्मा बसवण्णा या वसवेश्वर रूपी दहकते सूर्य का प्राकाट्य भारतीय क्षितिज में हुआ। वसवेश्वर का जन्म कर्नाटक के इंगलेश्वर ग्राम में रोहिणी नक्षत्र अक्षय तृतीया आनंदनाम संवत् 30.4.1134 को हुआ। माता मादलाम्बिक और पिता मादरस थे। इन्हें वसवण्णा, वसवेश्वर, वसवेश और वसवराज जैसे कई नामों से भी जाना जाता है। ये 12 वर्ष संगमेश्वर कुण्डल संगम के शैवगढ़ में अध्ययन में रत रहे। जाटवंदा मुनि के रूप में जिन्हें जाना जाता था, ईशान्य गुरू, ने शिक्षा प्राप्त करने में इन्हें मदद की। यहाँ इन्होंने विद्वानों से बातचीत की और अपने सामाजिक समझ के साथ अपने आध्यात्मिक और धार्मिक विचारों का विकास किया। वसवण्णा ने इष्टलिंगा का आविष्कार किया एवं लिंगायत के संस्थापक एवं पहले नबी बन गये।

वसवण्णा ने अनिष्ट जाति पद्धति का कारण 'वर्ण पद्धति' को चुनौती दी और कहा कि उद्योगों/कर्मों के अनुसार आदमी को पहचाना जाना चाहिए। उन्होंने लोगों को यह समझाया कि श्रेणीकरण व्यवस्था मानव निर्मित है, देव निर्मित नहीं। दलित एवं निम्न वर्ग के लोगों ने शिक्षा प्राप्त किया और अच्छे वचन (दोहे) लिखना शुरू कर दिया। अपने आध्यात्मिक अनुभवों को सुन्दर शब्दों में प्रस्तुत किया। ढोलकिया, मोची, नाई, कुम्हार ये सभी महान आध्यात्मिक, अनुभवी, महान लेखक एवं कवि बन गये। कन्नड़ साहित्य इतिहास की धारा में इस काल खंड का

वचन साहित्य युग वास्तविक अर्थों में स्वर्ण युग कहलाता है। इस कालखंड में कन्नड़ के कवि–कवयित्रियों थे जो शिवशरण और शिवशरणियाँ कहलाते थे, कविता की रचना सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक आन्दोलनों के लिए करते थे। ''काव्यकर्म इनके लिए साधन मात्र था, न कि साध्य।''

स्त्री मुक्ति, जातिवाद का नाश, धर्म के क्षेत्र में लोकतंत्र की स्थापना, श्रम संस्कृति की श्रेष्ठता एवं सब प्रकार की समानता, कथनी एवं करनी का सुन्दर समन्वय केन्द्रित जीवन चिंतन इनके काव्य की प्रमुख विशेषता थी। ''समानता ही इनके लिए योग था।''

वसवण्णा, परम्परा के अनुसार वीर शैव के वास्तविक संस्थापक माने जाते थे, परन्तु चालुक्य अभिलेखों से पता चलता है कि उन्होंने वास्तव में पहले से मौजूद वीर शैव मत को पुनर्जीवित किया था। हिन्दू वीर शैव मत के पवित्र ग्रंथों में से एक 'वसव पुराण', जिसकी रचना 13वीं सदी में 'पालकरिकी सोमनाथ' ने तेलुगु महाकाव्य के रूप में की थी, में वसवण्णा को लिंगायत के संस्थापक के रूप में चित्रित किया है।

वसवण्णा द्वारा प्रारंभ लिंगायत धर्म का उद्देश्य महिला का असमानता मिटाना, जाति को हटाना, लोगों को शिक्षा प्रदान करना और हर तरह की बुराई को रोकना था। लिंगायत साहित्य (वचन साहित्य) भगवान का स्पष्ट और वास्तविक रूप का चित्रण प्रदान करता है। लिंगायत सब अंधविश्वास मान्यताओं को खारिज कर भगवान को उचित आकार 'इष्टलिंग' के रूप में पूजा करने का तरीका प्रदान करते है। इसमें सभी मानव जन्म से बराबर हैं। भेदभाव सिर्फ ज्ञान पर आधारित है (गुरू–शिष्य या भवि–भक्त)। यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अनुरूप है, जहाँ अधिकारी के घर जन्म लेने से कोई अधिकारी नहीं बन सकता, बल्कि अच्छे अंक प्राप्त कर ही अधिकारी बना जा सकता है। कोई भी मानव इष्टलिंग दीक्षा संस्कार से लिंगायत बन सकता है।

''लिंगमायतिर्यस्य स लिंगायत्'' यह इसकी व्युत्पत्ति है। लिंगायत शब्द 'लिंग और आयत' इन दो शब्दों का संयुक्त शब्द है। इन शब्दों का विग्रह करें तो लिंगेन् आयतः लिंगायत इस तरह का नामपद होता है। इसका अर्थ होता है लिंग के साथ सदा युक्त रहनेवाला अर्थात् लिंगधारी होता है। लिंग शब्द में 'लि' यह वर्ण शक्तिवाचक है, 'ग' यह वर्ण चैतन्यवाचक है। शिव–शक्ति का विशिष्ट 'लिंग' है। जिसमें चराचर जगत की रचना होती है और प्रलयकाल में जिसके साथ जगत 'एकरूप' हो जाता है।

वस्तुतः लिंगायत धर्म शिवयोग नामक साधना है, षटस्थल नामक दर्शन है, लिंग दीक्षा रूप एक धर्म संस्कार है, अप्राकृत तथा अतिवर्णाश्रम वाला एक समाजशास्त्र है, मानवीय नीतिशास्त्र है। अन्य समाज से भिन्न शरण संस्कृति है। मंत्रपुरूष वसवण्णा से आरंभ होकर अव्याहत रूप से चलने वाली शरण परंपरा है। इन सबको स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने वाला विवेचनात्मक स्वतंत्र वचन साहित्य है। वचन साहित्य संविधानकर्ता, बसवण्णा नामक धर्मगुरू है। इन सब कारणों से लिगायत धर्म जाति न रहकर एक स्वतंत्र धर्म बना है। एक हरिजन ईष्टलिंग दीक्षा पाकर लिंगायत बन सकता है। जाति जन्म से प्राप्त होती है, तो धर्म संस्कार से। लिंगायत धर्म संस्कार से बना हुआ है।

बसवेश्वर के बारे में अर्जुन्वाड शिलालेख (1260) एवं हिरियुद्ध शिलालेख (1259) चॉडदानपुर का दो शिलालेख बहुत मुख्य है। यह वसवपुराण के रचना से पूर्व के शिलालेख है।

बसव के सम्मान में भारत के राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने 28 अप्रैल 2003 को भारत के संसद में बसवेश्वर की प्रतिमा का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने इनके सम्मान में बंगलुरू में सिक्के जारी किए। वसव के एक वचन उदाहरणार्थ एवं विचारार्थ प्रस्तुत है –

देवलोक मर्त्यलोक अलग नहीं है।
सतवचन बोलना ही देवलोक।
असत्यवचन बोलना ही मर्त्यलोक।
सदाचार ही स्वर्ग, अनाचार ही नरक।
आप ही प्रमाण है कूडलसंगमदेव।।

इस प्रकार हम यह पाते हैं कि लिंगायत धर्म एक सुधारित धर्म है। इसमें एक रीति का सिद्धांत और एक ही दर्शन है। परंपरागत कई आचरणों का तिरस्कार करके वसवेश्वर ने एक नवरीति की भक्ति का प्रारंभ किया। इसीलिए 'चेन्न वसवेश्वर' ने कहा है – ''तुम ही प्रथमाचार्य हो, तुम ही लिंगाचार्य हो।'' कई लोगों ने वसवेश्वर के समाज सुधारात्मक प्रयत्न को विश्व पटल पर प्रथम प्रयास के रूप में इंगित कर इन्हें विश्वगुरू पद से भी सुशोभित किया है। वास्तव में लिंगायत धर्म के प्रमाणरूप इष्टलिंग चिह्न को प्रस्तुत करने वाले विश्वगुरू वसवेश्वर है। वचन साहित्य रूपी धार्मिक संविधान देनेवाले वसवेश्वर है, सांप्रदायिक योगों से भिन्न दृष्टियोग प्राधान्य त्रातक योग देनेवाले वसवेश्वर हैं, उनका नाम 'श्री गुरू बसब लिंगाय नमः' मंत्र बना है। जिस प्रकार, बीच के एक केन्द्र स्तंभ के आधार पर पूरा तंबू खड़ा रहता है, वैसे ही बसवण्णा रूपी केन्द्र स्तंभ पर लिंगायत धर्म संपूर्ण रूप से स्थिर है।

आज जब पुनः हमारी सामाजिक व्यवस्था जातिवाद की कुत्सित राजनीति, धार्मिक पाखंड, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद एवं तंत्र मंत्र का मिथ्या भ्रमजाल से पूर्णतः ग्रसित है तो हमें पुनः विश्वगुरू बसवण्णा की प्रासंगिकता अनायास महसूस होने लगी है। हमें उनके वचनों में राह ढूढने एवं उसके अनुरूप अपने को ढालने की परम आवश्यकता है।

■■■

क्रोध में मनुष्य अपने मन की बात कहने के बजाय दूसरों के हृदय को ज्यादा दुखाता है। -मुंशी प्रेमचंद

बच्चों से अपेक्षाएँ

– **राखी कुमारी**
पत्नी, मनोज कुमार नं0 5
सहायक लेखापरीक्षा
अधिकारी

अभिभावकों के शब्दों में, "कहाँ हो टिंकु, पिंकु, चिंटु, ... और भी कई नाम ... – "तुम्हारा परीक्षा आ रहा है। चलो पढ़ाई कर लो, तुम्हें स्कूल में टॉप करना है, सबसे ज्यादा मार्क्स लाना है।"

बच्चे सुनते हैं और कहते हैं – "हाँ माँ, हाँ पापा, आ रहे हैं, पढ़ते हैं।"

थोड़ी देर बाद, ... बच्चा नहीं आता है।

अभिभावक पुनः बोलते हैं – "चलो आ जाओ पढ़ाई करना है।''

इधर, ... बच्चा अभी स्कूल से आया है, खेल रहा है। माँ–पापा की आवाज सुनते ही आ जाता है और किताब लेकर बैठता है।

सोचता है, "ये हिन्दी है, ये गणित है, ये साईंस है . . . . . और आगे भी।"

फिर सोचता है, "मुझे सभी सब्जेक्ट में अच्छे मार्क्स लाना हैं, मुझे टॉप करना है, फर्स्ट लाना है। नहीं तो, पापा बहुत डाँटेंगे। माँ बोलेगी, मैं कहते रहती हूँ ..... पढ़ो, पढ़ो, पर सुनता ही नहीं है, दिनभर खेलते रहता है . . . समझता ही नहीं है।"

वह खूब पढ़ना शुरू करता है। उसे जम्हाई आ रही है, ... पर वह सोता नहीं है। भूख लग रही है, ... पर खाता नहीं है। किताबों की बातों से ज्यादा अभिभावकों की इच्छाएँ उसके दिमाग में चल रहा होता है।

दो–चार घण्टे पढ़ाई करने के बाद बच्चा उठता है और कहता है, "माँ, मैंने आज बहुत पढ़ लिया है। अब मुझे नींद आ रही है।"

माँ बोलती है, "हाँ, हाँ, मुझे पता है कितना पढ़ा है। पढ़ने के नाम पर बैठा रहता है। जरूर टाइम पास किया होगा। यदि इस बार परीक्षा में अच्छा नम्बर नहीं लाया तो देख लेना क्या करते हैं।"

''तो ये है आजकल की सोच – एक अभिभावक का अपने बच्चों के प्रति अपेक्षाएँ।''

अभिभावक हमेशा ये सोचते हैं कि मेरे ऐसा कहने से मेरा बच्चा बहुत अच्छा कर लेगा। लेकिन, क्या कभी उन्होंने ये सोचा कि उनकी कही गई बातों को एक बच्चा किस रूप में ले रहा है? उसका नजरिया कहाँ जा रहा है? क्या उसकानजरिया

सकारात्मक है या नकारात्मक?

एक बच्चा अभिभावक के कहने पर खेलना छोड़कर चार घण्टे तक पढ़ाई करता है। उन्हें प्रोत्साहन अर्थात् रिवार्ड में मिलती है – अविश्वास और नकारात्मक सोच अर्थात् निगेटिव थॉट्स। निगेटिव थॉट्स से बच्चा बोझिल हो जाता है अर्थात् मस्तिष्क ओवर लोडेड हो जाता है, जिसके कारण उसकी गति मंद पड़ जाती है। वह बच्चा परीक्षा देने जाता है और पता चलता है कि उसे बहुत कम नम्बर मिला है। उसके बाद अभिभावक सारा दोष उस बच्चे के ऊपर डाल देतें है। और, यह अंतहीन सिलसिला चलता रहता है।

आखिर ऐसा क्यों . . . . . कभी सोचा है?

यहीं बात आती है – गुड पैरेन्टिंग की। अभिभावक सोचते हैं कि मैं दुनिया का सबसे अच्छा माता–पिता हूँ, जो बच्चों को अच्छा खाना, अच्छा कपड़ा एवं सारी सुख–सुविधाएं देता हूँ। फिर भी मेरा बच्चा अच्छा नहीं करता है। क्या उन्हें नहीं लगता कि बच्चों को किताबों की दुनिया से जोड़ने के प्रयास में व्यवहार के, सकारात्मकता के, विश्वास के और सफलता के विचारों को किशोरों के दिमाग में आने से वंचित रखा गया है।

ऐसे में अभिभावकों को चाहिए कि बच्चों को ''निगेटिव थॉट्स'' की जगह ''पॉजीटिव थॉट्स'' दें, जिसकी उन्हें जरूरत है। उन्हें ये कहने के बजाय कि "यह मत करो, टी.वी. नहीं देखो, तुम मूर्ख हो, तुम फेल कर जाओगे, बाहर मत जाओ . . . . . " यह कहें कि "मुझे अपने बच्चे पर पूरा विश्वास है कि वह पढ़ाई मन से करेगा और अच्छे नम्बरों से पास करेगा।"

एक छोटी सी वास्तविक केस स्टडी बताना चाहती हूँ जिसे मैंने महसूस किया है। एक बच्चा रमेश (काल्पनिक नाम) जो अपने अमीर माता–पिता के साथ रहता था। उसे किसी भी चीज की जरूरत नहीं थी। उसी के पड़ोस में एक गरीब बच्चा महेश (काल्पनिक नाम) रहता था। वह पढ़ने में बहुत तेज था। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे। महेश हमेशा अच्छे नम्बरों से पास होता, वहीं रमेश औसत दर्जे का था।

यह संज्ञान में लाने का प्रयास किया गया कि ऐसा क्यों है? दोनों अभिभावकों से बात की गयी और उनके बातचीत के तौर तरीको को ऑब्जर्व किया गया तो पता चला कि महेश की माँ महेश को पॉजिटिव थॉट्स के साथ बात करती थी और रमेश की माँ रमेश को निगेटिव थॉट्स से। रमेश की माँ को गुड पैरेंटिंग के बारे में बताया गया। उन्होनें इसे अप्लाई किया और रमेश के व्यवहार में बदलाव अर्थात् "बिहैवियर मोडिफिकेशन'' दिखने लगा। धीरे–धीरे वह भी अच्छा करने लगा।

Paulo Coelho के अनुसार "Only Children believe they are capable of everything."

इस तरह के सकारात्मक थॉट्स बच्चे को नकारात्मकता की दुनिया से बाहर निकलकर अभिभावकों के विश्वास पर खरा उतरने की ओर प्रेरित करता है।

■■■

सारा जगत स्वतंत्रता के लिए लालायित रहता है फिर भी प्रत्येक जीव अपने बंधनों को प्यार करता है। - श्री अरविंद

सड़क पर्यटन

– मुकेश कुमार राम
लेखा परीक्षक

हमारे यहाँ आज सड़कों की जो स्थिति है वह देखने योग्य रमणीय एवं लाजवाब है। आप जिस ओर नजर घुमाएंगे या देखेंगे उधर आपको ठीक उसी तरह की सड़क नजर आएगी जिस तरह से –

''कटहल के पेड़ में कटहल के छिलके के ऊपर होता है। कहने का मतलब आप भली–भाँति समझ रहे होंगे।''

अर्थात् शुरूआत में छोटे–छोटे गड्ढ़े होते हैं और बाद में वह बड़े गड्ढ़े में परिवर्तित हो जाते हैं।

आज सरकार पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सड़कों के लिए लाखों करोड़ों रूपये खर्च कर रही है। लेकिन सड़कों की स्थिति आज भी वही रह रही है। कटहल के छिलके जैसा। चाहे यह सड़क गाँव की हो या शहर की। सड़कों की स्थिति खराब करने में हमलोगों का भी योगदान होता है। क्योंकि हमलोग नाली का पानी, घर का कूड़ा–कचरा एवं गृह कार्य में उपयोग होने वाली चीजें सड़कों पर ही बहाते हैं, फेंकते हैं और रखते हैं।

जब सड़कों का निर्माण होता है तो हम उच्च कोटि के वस्तुओं का उपयोग नहीं करते, उसकी गुणवत्ता को नहीं परखते हैं। घटिया किस्म के वस्तुओं का उपयोग करते हैं। चंद स्वार्थ के लिए हमलोग ऐसा करते हैं। लेकिन इसका खामियाजा हमें बहुत देर के बाद भुगतना पड़ता है। कुछ ही लम्हों के बाद चंद स्वार्थ का कमाया हुआ धन हाथों से निकल जाता है। चाहे वह मेरे परिवार का सदस्य होता है या किसी और परिवार का सदस्य होता है। मेरा कहने का मतलब आप भली–भाँति समझ ही रहे होंगे कि मैं क्या कहना चाहता हूँ।

अर्थात् सड़क निर्माण होते समय हम आम जनता को भी ध्यान देने की जरूरत है। क्योंकि यह भी हमारी संपत्ति है।

मैं आपका ध्यान आज ''सड़क पर्यटन'' की ओर इसलिए ले जाना चाहता हूँ कि यह सड़क नहीं है और यह सड़क ''यमराज'' से भी कम नहीं है। यमराज महाराज का तो प्राण लेने का एक नियत समय होता है। लेकिन इस सड़क महाराज का कोई नियत समय नहीं होता है। क्योंकि मैं विगत वर्षों से देख रहा हूँ कि जितनी मौतें सड़क से हुई है, उतनी मौतें बीमारियों से नहीं हुई है। इसलिए मुझे आज भी याद है कि इन्हीं सड़क दुर्घटनाओं को देखते हुए भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने सड़कों को ''मौत का महाकाल'' कहा था।

जिस देश की सड़कें अच्छी होंगी उस देश के राजस्व में भी वृद्धि होगी। क्योंकि पर्यटन स्थल तक पहुँचाने में सड़कों का ही अहम योगदान होता है। सड़कों को आज ''गगनचुम्बी'' कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। क्योंकि जिस तरह से गगन हमारे उपर चारों ओर फैला हुआ है, ठीक उसी तरह से हमारी सरकार गाँवों से लेकर शहरों तक सडकों का जाल बिछा रही है, जो अत्यंत सराहनीय कार्य है। आज लोगों को सड़कों के कारण ही व्यापार–बाजार करने में सुविधाएँ प्राप्त हो रही है।

मेरा मानना है कि अगर आज सड़क को ठीक ढ़ंग से नहीं बनाया जाता है, ट्रैफिक नियमों का पालन नहीं किया जाता है, तीव्र चाल में कमी नहीं की जाती है, तो वह दिन दूर नहीं होगा, जब ''प्रति मिनट में प्रति व्यक्ति की मौत'' होगी।

आजकल देखा जा रहा है कि शिक्षित परिजन भी अपने छोटे–छोटे बच्चों को दुपहिया वाहन (स्कूटी) चलाने को सिखाते हैं जो खुद–ब–खुद दुर्घटना को बुलावा देते हैं। वो इस बात को भूल जाते हैं कि यही बच्चा मेरा और देश का भविष्य है।

आज सरकार इस ..... के बीच ''सड़क सुरक्षा'' जागरूकता सप्ताह चला रही है। फिर भी हमलोग वहीं के वहीं है। अंत में हम यही कहना चाहेंगे कि मोटर चालक वाहन एवं गाड़ी क्रय अधिनियम में परिवर्तन किया जाय। चालक बनने के लिए भी उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाय। सड़कों पर लाईट की 24 घंटें व्यवस्था की जाय। चालक बनने के लिए उम्र सीमा बढ़ाई जाए।

आज सड़कों का रख–रखाव व देखभाल सिर्फ सरकार पर ही नहीं छोड़ना चाहिए। हम आम जनता की भी भागीदारी होनी चाहिए।

■■■

''सड़के देश की रीढ़ होती है।''
''सड़क व्यवस्था ठीक होने से ही पर्यटन को बढ़ावा मिलता है।''

आजादी का अमृत महोत्सव और विश्व में महाशक्ति के रूप में
उभरता भारत

- बालमुकुन्द पाठक
लेखापरीक्षक/समन्वय प्रकोष्ठ

आजादी के 75 वर्ष के अवसर पर संपूर्ण देश में पूरे साल आजादी का उत्सव के रूप में 'अमृत महोत्सव' का आयोजन ने देश के प्रति समर्पण-भाव के उभार में चार चांद लगाया है। ऐसे भव्य एवं उद्देश्यपूर्ण आयोजन से न केवल आजादी के दीवानों का स्मरण ताजा हुआ है, अपितु आजादी की महत्ता को घर-घर में पुनर्स्थापित करने में भी बल मिला है।अमृत महोत्सव के रूप में समाज की समग्र हिस्सेदारी का उभरकर सामने आना, नवीन राष्ट्रीय चेतना का स्वत: स्फूर्त प्रस्फुटन है। युवाओं सहित बच्चे एवं बूढ़ों को आजादी के प्रति मनसा- वाचा- कर्मणा प्रभावित होना, अमृत महोत्सव की उपलब्धि और खूबसूरती है। निश्चित रूप से इस प्लेटफार्म पर, विशेषकर युवा पीढ़ी, नये विचार,नयी ऊर्जा तथा नये संकल्प से अभिषिक्त हुई है। फलस्वरूप आजादी के प्रति बेखबर और उदासीन हो रही युवा पीढ़ी,आजादी जनित दायित्वों के प्रति सजग और तत्पर हुई है।आज जब विदेशी ताकतें भारत को कमजोर और अस्थिर करने में लगी हुई हैं, तब राष्ट्रीय चेतना के चतुर्दिक उफान को आजादी का सुरक्षा- कवच के रूप में उभारने में युवा पीढ़ी का योगदान अभिनंदनीय है।

आज भारत युवाओं का देश है। विश्व के इस विशालतम लोकतांत्रिक देश में युवा वर्ग की सर्वाधिक आबादी है, जो इस बात को डंके की चोट पर कहने का सामर्थ्य रखती है कि युवा जो चाहेगा, वही होगा। आज का युवा नयी ऊर्जा, नये संकल्प, असीम धैर्य और साहस से इतना लबरेज़ है कि अपने कंधों पर हिमालय-सा बोझ उठाने को भी तत्पर है। हवाओं की तरह यह एक ऐसा शक्ति-समूह है, जो चारों दिशाओं में व्याप्त और गतिमान है। इसकी ताकत का अंदाजा लगाना मुश्किल है, मगर जब आंधी बनकर यह टूटता है, तो बड़े-बड़े वृक्ष और महल भू-शायी हो जाते हैं। स्वतंत्र भारत में इसका सबल प्रमाण जे पी आंदोलन है। आजादी की लड़ाई में महात्मा गांधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, पं. जवाहरलाल नेहरू जैसे कद्दावर शीर्ष नेतृत्व का आजादी की लड़ाई को जन-जन तक पहुंचाने तथा आजादी की महत्ता को समझाने में भले अतुलनीय योगदान रहा हो, मगर तत्कालीन युवा पीढ़ी इस मिशन में नहीं लगती, तो कदाचित देश को आजादी नसीब नहीं होती। देश की ताकत युवा है, इस सत्य से इंकार नहीं किया जा सकता।

इतिहास साक्षी है कि देश की आजादी की लड़ाई को जनांदोलन बनाने तथा युवाओं में राष्ट्रीय चेतना का बीज बोने में आजादी के दीवानों का योगदान श्लाघनीय और अद्वितीय रहा है। देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व होम करने वाले आजादी के दीवाने इसी मिट्टी में जन्मे और पले-बढ़े थे।वे कोई बूढ़े नहीं, बल्कि 20 से 30 साल के नौजवान थे, जिन्होंने देश के लिए, आने वाली पीढ़ी के लिए तथा सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिए हंसते-हंसते फांसी को गले लगा लिया। विडंबना है कि कतिपय क्रांतिकारियों/ स्वतंत्रता सेनानियों का ही नाम इतिहास के पन्नों में अंकित है। आजादी के दीवानों की एक बड़ी तादाद ऐसी भी है, जो इतिहास के पन्नों से महरूम है। उन गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति यह कृतघ्नता असहनीय है। इस अमृत महोत्सव की एक बड़ी उपलब्धि है - स्वतंत्रता संग्राम के उन गुमनाम नायकों के जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व को देश और समाज के समक्ष लाना। इन गुमनाम नायकों पर आयोजित विमर्श ने भारत की युवा पीढ़ी को नये संकल्प और सामर्थ्य से अभिसिंचित किया है। मंगल पांडे, लक्ष्मी बाई, सिद्धू-कानू, बिरसा मुंडा, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खां, राम प्रसाद बिस्मिल, सुभाष चन्द्र बोस, खुदी राम बोस आदि हजारों युवाओं ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर यह साबित कर दिया कि युवाओं के लिए 'देश की आजादी' जान से भी ज्यादा प्रिय

यदि मार्ग काँटों भरा हो, और आप नंगे पांव हो तो रास्ता बदल लेना चाहिए । - चाणक्य

है। अमृत महोत्सव के आयोजन से इस संदेश या भाव को बल मिला, जिससे देश के युवाओं का दिल आंदोलित हो उठा। इस राष्ट्रीय चेतना का उद्रेक कमोबेश आज संपूर्ण देश में दृष्टिगोचर होता है।

इस सत्य से इंकार नहीं किया जा सकता है कि आज की युवा पीढ़ी दो खेमों में विभक्त है, जिनका नजरिया एक दूसरे के खिलाफ और द्वंद्वरत है। एक हिस्सा है, जो जुनून, ख्वाब, देशभक्ति और आत्मविश्वास से ओतप्रोत है, जबकि दूसरा हिस्सा नकारात्मक नजरिए और कमजोर आत्मविश्वास वालों का है, जो न केवल आजादी की नुक्ताचीनी करता है, अपितु दूसरों में बुराइयां ढूंढ़ने का काम भी करता है। इसके उलटे युवाओं का पहला हिस्सा सकारात्मक एवं रचनात्मक सोच रखता है। वह आज़ाद भारत के प्रति न केवल गंभीर है, प्रत्युत राष्ट्र और लोकतंत्र कैसे सशक्त हो, इसके लिए सतत प्रयत्नशील भी है।उसकी नजर में आजादी का अर्थ स्वच्छंदता या उच्छृंखलता नहीं है। उसके लिए आजादी एक गौरवपूर्ण तथा पवित्र भावना है। उसके अनुसार आजादी, पुरखों द्वारा प्रदत्त एक ऐसी थाती है, जिसे अक्षुण्ण रखना तथा उसकी गरिमा को कायम रखना,प्रत्येक भारतीय का उत्तरदायित्व है। परस्पर विचार भिन्न होना अलग बात है, मगर जहां देश की आजादी की सुरक्षा का सवाल हो, वहां सभी लोगों का एकजुट हो जाना, एक बड़ी बात है। भारतीय लोकतंत्र की यही तो खूबसूरती है।

देशी-विदेशी देश-विरोधी ताकतें आज भारत को अस्थिर और कमजोर करने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपना रही हैं। कहीं धर्म, जाति, भाषा आदि के नाम पर देश को बांटने के लिए युवा पीढ़ी को भड़का रही हैं, तो कहीं तरह-तरह के षड्यंत्र के पासें फेंके जा रहे हैं, ताकि आपस में फूट हो जाए। सोशल मीडिया पर आरोप-प्रत्यारोप का खेल भी जारी है। बावजूद इसके, युवा पीढ़ी न केवल उन्हें मुकम्मल जवाब दे रही है, बल्कि उनके मंसूबे पर पानी भी फेर रही है। यह तथ्य गौरतलब है कि युवा पीढ़ी जब-जब करवट बदलती है, तब-तब देश में परिवर्तन की लहर जोर मारती है। आज देश में परिवर्तन का बयार बह रहा है। 'अनेकता में एकता' की लहर चल रही है। लोग बदल रहे हैं। देश बदल रहा है। देशव्यापी 'अमृत महोत्सव' में भूले-बिसरे स्वतंत्रता सेनानियों का पुण्य स्मरण तथा आजादी के विमर्श के बहाने आजादी के वास्तविक इतिहास से साक्षात्कार ने देश की युवा पीढ़ी को पीछे मुड़कर सोचने के लिए विवश किया है। फलस्वरूप दिलो-दिमाग में राष्ट्रीय चेतना की धारा का संचार होना लाजिमी है। राजनीति और देश की सेवा में बड़ी तादाद में युवाओं क प्रवेश ने युवा पीढ़ी की आकांक्षाओं तथा ताकतों में पर लगा दिए हैं। भारतीय राजनीति आज विश्व के परिप्रेक्ष्य में आन खड़ी हुई है, जो देश के लिए शुभ संकेत है। वैचारिक रूप से परिपक्व हो चुके देश के युवा,आजादी के 75 वें वर्ष पर भारत को विश्व की महाशक्ति बनाने के लिए कटिबद्ध हैं। विश्व में भारत के बढ़ते सम्मान से युवा पीढ़ी आह्लादित, प्रेरित और ऊर्जा से लबरेज है। वस्तुत: भावी भारत के निर्माण में अपनी भूमिका को धारदार बनाने के लिए आज की युवा पीढ़ी कृत संकल्प है।

बहरहाल आजादी का सम्मान, स्वतंत्रता सेनानियों का अरमान तथा देश के स्वाभिमान की रक्षा के लिए भारतीय युवा सजग, सक्षम और तत्पर है। युवाओं के योगदान का परिणाम है कि आजादी के 75वें वर्ष के अवसर पर देश में साल भर से आयोजित हो रहे अमृत महोत्सव में आजादी के विभिन्न पहलुओं पर सार्थक चर्चा-परिचर्चा के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम सिपाहियों के पुण्य स्मरण ने मौजूदा माहौल को देशभक्ति की धारा से अभिसिंचित किया है। इस प्रकार का आयोजन का मकसद गौरवमयी आजादी की कीमत से अवाम को अवगत कराना तथा आजादी के दीवानों के अधूरे सपनों के प्रति देश की युवा पीढ़ी का ध्यानाकृष्ट करना है। आज देश में जो माहौल बना है, उसमें युवा पीढ़ी की भागीदारी सर्वाधिक है। उसके पास जोश है, जुनून है और कुछ कर गुजरने का सामर्थ्य भी। विश्व को पता है कि आज भारत युवाओं का देश है और देश के मान-सम्मान के लिए युवा कुछ भी कर सकता है। यही कारण है कि आज विश्व भारत की ओर आशाभरी नज़रों से देख रहा है। वैश्विक पटल पर आज भारत का सम्मान बढ़ा है। वह दिन दूर नहीं, जब भारत विश्व में एक महाशक्ति के रूप में उभरेगा।

■■■

वाणी के बजाय कार्य से दिए गए उदहारण कहीं ज्यादा प्रभावी होते हैं। - अज्ञात

हमारी अपनी भाषा–हिन्दी

– नेहा कुमारी
पिता – श्री बीरेन्द्र यादव
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

वैदिक संस्कृत प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि पड़ावों से गुजरकर हिन्दी भाषा का जन्म हुआ है। देश की प्रगति में राष्ट्र भाषा हिन्दी का विशेष महत्त्व रहा है। सभी सम्मानित भाषाएँ संस्कृत भाषा की देनदार है। एक समय था, जब देश में संवाद की भाषा संस्कृत हुआ करती थी। समय के साथ–साथ भाषा ने भी करवट बदली और हमारी संवाद की भाषा संस्कृत से हिन्दी हो गई। धीरे–धीरे बदलाव होता रहा और कार्यालयों में कार्यों का माध्यम विदेशी भाषा अंग्रेजी बन गई।

विश्व के सभी देशों की अपनी एक भाषा होती है, जो सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने की क्षमता रखती है। हमारे देश में हिन्दी पूर्णरूप से सक्षम और समर्थ भाषा है। हमारे संविधान में हिन्दी भाषा को संघ की भाषा कहा गया है। उसे राजभाषा का दर्जा भी दिया गया है, लेकिन सरकार का ज्यादातर काम हिन्दी के बजाय अंग्रेजी में हो रहा है। अकेले भारत में सत्तर करोड से ज्यादा लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। भारत के अलावा बांग्लादेश, नेपाल, भूटान तिब्बत, बर्मा, अफगानिस्तान, फिजी, मॉरीशस, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद जैसे देशों में हिन्दी बोली जाती है। इसके अलावा विश्व भर में फैले करीब दो करोड़ लोग भी हिन्दी बोलते हैं। हिन्दी की शब्द सम्पदा लगभग सात लाख शब्दों की है, जबकि अंग्रेजी की लगभग तीन ही लाख है।

स्वतंत्रता के इतने वर्ष बाद भी हम अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए आज भी अंग्रेजी के मोहताज हैं। यह सब हमारी मानसिक दासता का प्रमाण है। एक तरफ अंग्रेजी के पक्षधरों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है, वहीं दूसरी तरफ बड़ी संख्या में वे लोग हैं जो अंग्रेजी के पास तक नहीं पहुँच सकते। महानगरों की गली–कूचों में अंग्रेजी सीखने–सिखाने की दुकान दिन–ब–दिन खुलती जा रही है। हिन्दी स्नेह, सहयोग, सहानुभूति एवं संवेदना की भाषा है। इसके माध्यम से किसी भी बात को सहज और सहजता से अभिव्यक्त किया जा सकता है।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना भाषण हिन्दी में दिया था, तो पूरा विश्व स्तब्ध रह गया था। उस समय उनकी सम्पूर्ण विश्व ने प्रशंसा की थी। देश में जब–जब विदेशी राजनयिक, राष्ट्राध्यक्ष आते हैं तो वे अपनी भाषा में विचार व्यक्त कर गौरव का ही नहीं, बल्कि अपनी राष्ट्रभाषा प्रेम का भी अनुभव कराते हैं। अनेक विदेशी छात्र भारत में हिन्दी व संस्कृत पढ़ने के लिए आते हैं और यही नहीं वे यहाँ रहकर इन भाषाओं पर शोध भी करते हैं। कोई भी विषय या विद्या ऐसी नहीं है जिसकी हिन्दी में अभिव्यक्ति नहीं की जा सके। हिन्दी सर्वाधिक प्रभावशाली,समर्थ एवं समृद्ध भाषा है।

हिन्दी चाहे कितनी भी महान हो,इसकी महानता केवल हिन्दी भाषी ही साबित कर सकते हैं। परन्तु आज तो यह स्थिति है कि नई पीढ़ी के लोग हिन्दी से अंग्रेजी नहीं, अंग्रेजी से हिन्दी सीखते हैं। कई लोग तो हिन्दी के अधिकतर शब्दों से अपरिचित हैं। जो अच्छी तरह से अंग्रेजी बोलते हैं, तो फिर भी ठीक है; लेकिन वैसे लोगों का क्या, जो न अंग्रेजी ही पूरी बोलते हों और न हिन्दी।

आज हाल यह है कि लोग हिन्दी बोलने में अपनी हेठी समझते हैं। हिन्दी बोलने में उन्हें शर्म महसूस होती है।

यह बात भी सही है कि आज हमारे अधिकतर कार्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होते हैं। आज अनेक कंपनियों एवं बैंकों की शाखाएँ केवल हमारे ही देश में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी है। प्रायः लोगों को अपने कार्यों के सिलसिले में विदेश यात्रा पर जाना पड़ता है। इसलिए अंग्रेजी का ज्ञान भी अत्यधिक जरूरी है। अपनी बात पूरे विश्व के सामने रखने ओर समझाने के लिए अंग्रेजी अत्यधिक आवश्यक है। लेकिन अंग्रेजी की आड़ में अपनी राष्ट्रभाषा को भूल जाना भी उचित नहीं है। हमें अंग्रेजी के साथ–साथ अपनी भाषा का अस्तित्व भी बनाए रखना होगा। अंग्रेजी सीखना बहुत अच्छी बात है, लेकिन अपनी भाषा को भूल कर दूसरों की भाषा को अपनाना कहाँ तक सही है? हमें अपनों से अपनी भाषा में बात करनी चाहिए। हमें अंग्रेजी अवश्य सीखनी चाहिए, परन्तु साथ ही मातृभाषा हिन्दी को भी सही रूप में स्वीकार करना चाहिए।

"निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिनु निजभाषा ज्ञान के मिटै न हिय को सूल।"

■■■

सौंदर्य और विलास के आवरण में महत्वाकांक्षा उसी प्रकार पोषित होती है
जैसे म्यान में तलवार। - रामकुमार वर्मा

बद्री-केदारनाथ की यात्रा

– हिरेन्द्र कुमार झा
सेवा निवृत्त पर्यवेक्षक

प्रातः काल टैक्सी से हमलोग केदार नाथ की ओर चले, क्योंकि केदारनाथ के दर्शन के उपरान्त ही बद्रीनाथ का दर्शन किया जाता है। श्री केदारनाथ को केदारेश्वर भी कहा जाता है, जो केदार पर्वत पर अवस्थित है। सतयुग में यहाँ शिव भक्त उपमन्यु ने भगवान शंकर की आराधना की थी और द्वापर में गोत्र हत्या के पाप का प्रायश्चित करने हेतु पाण्डवों ने यहाँ तपस्या की थी। पाण्डवों ने यहाँ शिवजी को भैंसे के रूप में देखा था, जिनका पृष्ठभाग यहाँ और शिरोभाग नेपाल

की राजधानी काठमाण्डू के पशुपति नाथ मंदिर में अवस्थित है। महिषरूपधारी भगवान शंकर के विभिन्न पाँच अंग पाँच स्थानों पर अवस्थित हुए और वे पंचकेदार कहलाये। प्रथम केदार केदारनाथ में पृष्ठभूमि, द्वितीय केदार मदमादेश्वर में नाभि, तृतीय केदार तुंगनाथ में बाहु, चतुर्थ केदार रूद्रनाथ में मुख और पंचकेदार कलपेश्वर में जटा माना जाता है। कहा जाता है कि यहाँ का मंदिर भी पाण्डवों ने निर्मित करवाया था। इस युग में भी मात्र 32 वर्ष की अवस्था में आदि शंकराचार्य को देहावसान यहीं पर हुआ था। यात्रा के क्रम में पहला मुख्य स्थान देवप्रयाग है। सतोपंथ से अलकनन्दा और गोमुख से भागीरथी यहीं पर मिलती है और मिलने के बाद गंगा कहलाती है। यहाँ श्री रघुनाथजी की विशाल मूर्ति है, बाबा काली कमले वाले की विशाल धर्मशाला भी है और संगम में प्रयागराज के बाद इसी का स्थान है। यहाँ से एक मार्ग अलकनन्दा के किनारे–किनारे सीधा बद्री केदार की ओर चला गया है और दूसरा भागीरथी के दाहिने किनारे टिहड़ी की ओर चला गया है। देवप्रयाग से हमलोग श्रीनगर पहुंचे, रास्ते में बागवान, मालेदा और कीर्तिनगर पड़ता है। कीर्तिनगर में भागीरथी के पुल को पार करते हुए लोग श्रीनगर पहुँचते हैं। श्रीनगर से हमलोग रूद्रप्रयाग पहुँचे, बीच में एक ढाबे में हमलोगों ने भोजन और अल्प विश्राम किया। रूद्रप्रयाग, अलकनन्दा एवं मंदाकिनी के संगम पर बसा हुआ है और यहाँ रूद्रनाथ का पुराना मंदिर है। केदारनाथ से मंदाकिनी और बद्रीनाथ से अलकनन्दा यहाँ आकर मिलती है। यह स्थान रूद्रप्रयाग के भयंकर नरभक्षी चीता के कारण भी प्रसिद्ध है। जिस स्थान पर जिम कार्बेट ने उस आतंक का अन्त किया था, उस स्थान को पार्क बना दिया गया है और वह वृक्ष जिसके नीचे वह मारा गया था अद्यावधि वर्तमान है।

उत्तराखण्ड में जिम कॉर्बेट के नाम पर जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क भी है। नैनीताल में स्थित इस पार्क में विविध प्रकार के वन्य जन्तुओं का अवलोकन होता है। जिसमें बाघ, चीता, भालू, हिरण और नीलगाय प्रमुख हैं। यहाँ बाघ संरक्षण का काम भी होता है और वन्य पर्यटन का शौक रखने वालों के लिए यह एक आदर्श स्थान साबित हो सकता है। यात्रा के क्रम में कादंबिनी के नवम्बर 1995 के अंक में डॉ. नरेन्द्र प्रसार सिंह द्वारा लिखित निबंध ''मैंने मणिसर्प देखा'' याद आ गया जिसमें उन्होनें अपने द्वारा देखा गया मणीसर्प का जिक्र किया है और वह उतराखण्ड से ही संबंधित है। किन्तु मुझे कहीं भी ऐसा सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। रूद्रप्रयाग से तिलबाड़ा होते हुए हमलोग अगस्त्यमुनि पहँचे, जहाँ महर्षि अगस्त ने तपस्या की थी और वहाँ उनका एक मंदिर भी है। सामने बाणासुर की राजधानी शोणितपुर के भग्नावशेष है। अगस्त्यमुनि से कुण्ड होते हुए हमलोग गुप्त काशी पहुंचे, जहाँ एक कुण्ड है जिसे मणिकर्णिका कुण्ड कहते हैं। इसमें गंगा एवं अमन जमुना नामक जलधारा बराबर गिरती रहती है। कुण्ड के सामने विश्वनाथ का मंदिर है और उन्हीं के पास अर्धनारीश्वर का मंदिर भी है। यहाँ का चन्द्रशेखर मंदिर भी प्रसिद्ध है। केदारनाथ के अधिकांश पण्डे इसी के निकटवर्ती गाँवों में निवास करते हैं। गुप्त काशी से हमलोग नाला गये, जहाँ भगवती दुर्गा की आराधना ललिता देवी के रूप में की जाती है। नाला के बाद नारायण कोटि और रामपुर होते हुए हमलोग सोन प्रयाग पहुँचे, जहाँ हमलोगों ने चाय–नाश्ता किया। सोन प्रयाग, सोन गंगा और मंदाकिनी के

संगम पर बसा हुआ है। यहाँ से चार किलोमीटर आगे त्रियुगी नारायण अवस्थित हैं, जहाँ भगवान का प्राचीन विशाल मंदिर है। नारायण की नाभि से जल निकलकर बाहर कुण्ड में जाता है। आगे पार्वती रह काल की अग्नि (धुनी) प्रज्ज्वलित हो रही है। यहाँ रूद्रकुण्ड और सरस्वती कुण्ड नाम के कुण्ड हैं।

सरस्वती कुण्ड में स्वर्ण वर्ण के छोटे छोटे साँप हैं, पर उनसे किसी को भय नहीं है। त्रियुगी नारायण से सोम द्वारा होते हुए हमलोग गौरी कुण्ड पहुंचे, जहाँ हमलोगों ने रात्रि विश्राम किया। यहाँ से केदारनाथ का रास्ता पैदल है परन्तु टट्टू, पालकी आदि भी उपलब्ध रहते हैं। रात्रि में पानी के गिरने की ध्वनि बड़ी डरावनी प्रतीत होती थी और दिन में देखा हुआ उतार–चढ़ाव वाला मार्ग स्वप्न में भी आकर सिहरन पैदा करता था। सोने से पूर्व ही हमलोगों ने टट्टू वाले से बात कर ली और सावधानीवश ऑक्सीजन मास्क और मादक कपूर के कुछ डब्बे भी रख लिये। गौरी कुण्ड में गर्मपानी का कुण्ड है, जिसमें प्रातः काल स्नान करके अपूर्व ताजगी आ गयी और टट्टू पर सवार होकर हमलोग केदारनाथ की ओर चल पड़े। रास्ता का रोमांच बहुत ही ज्यादा था। एक तरफ गहरी खाई थी, तो दूसरी तरफ ऊँचे पहाड़। टट्टू वाले हाँकने के लिए विभिन्न प्रकार की आवाजें निकाल रहे थे। लोग पैदल भी जा रहे थे और पालकी पर भी सवार थे। गौरी कुण्ड से सात किलोमीटर आगे रामबाड़ा है, जहाँ हमने चाय पीया। ठंढा मौसम में गर्म चाय काफी स्वादिष्ट लगा, वैसे चाय बना भी बहुत बढ़िया था। कुछ दूर आगे जाने पर हमलोग देवदखनी पहुँचे, जहाँ से मंदिर दिखलाई पड़ने लगा और हमलोगों को अदभुत अनुभूति हुई। ऊपर जाने पर ऑक्सीजन मास्क की आवश्यकता तो नहीं पड़ी, पर कपूर की जरूरत जरूर पड़ गई। धाम पर पहुँच कर हमलोगों ने अपने पण्डाजी की खोज की। संयोगवश पण्डाजी श्री छोटेलाल पशुपतिनाथ बाजपेयी शीघ्र ही मिल गये और उसके बाद आगे का कार्य आसान हो गया। उन्होंने सबसे पहले हमारे आवास की व्यवस्था की। ठहरने के लिए यहाँ धर्मशालाएँ और पर्यटक लॉज आदि हैं, जिसमें भोजन की भी समुचित व्यवस्था रहती है। राँची के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. एन0 पी0 सिन्हा द्वारा बनवाया गया एक आवास भी है, जिसकी व्यवस्था पण्डा जी के हाथों में रहती है। व्यवस्थित होने के बाद हमलोग दर्शन के लिए मंदिर पहुँचें।

चारो ओर से हिमाच्छादित शिखरों से घिरा हुआ चौड़े पठार पर अवस्थित यह मंदिर पवित्र मंदाकिनी नदी की मनोरम धाटी के मुकुट जैसा है। यहाँ का सम्पूर्ण स्थल केदारधाम कहलाता है। मंदिर के उपर सुनहला कलश है और मंदिर के ठीक मध्य में भैंसे की पिछले धड़ की आकृति का प्रस्तर खण्ड है, जिसका यात्रीगण स्पर्श करते हैं। मंदिर के आगे पत्थर का जगमोहन है और शिव–पार्वती, लक्ष्मी, श्रीकृष्ण, पंचपाण्डव, अनिरूद्ध, उषा आदि की भी मूर्तियाँ है। इसके मध्य में पीतल का बड़ा नन्दी, बाहर दक्षिण की ओर बड़ा नन्दी और छोटे बड़े कई प्रकार के घंटे लगे हैं। द्वार के दोनों ओर द्वारपाल और अन्य देव मूर्तियाँ है। श्री केदारनाथ की श्रृंगार मूर्तियाँ पंचमुखी हैं और हर समय वस्त्रादि भूषणादि से सुसज्जित रहती हैं। मंदिर के पीछे आदि शंकराचार्य जी की समाधि है, जिन्होंने वैदिक धर्म को नये सिरे से प्रतिष्ठित किया और कहा जाता है कि वे सदेह शिवत्व में विलीन हो गये। मंदिर के निकट ही हंस कुण्ड है, जहाँ ब्रह्मा ने हंस रूप धारण करके पान किया था और जहाँ पीतरों के उद्धार हेतु श्राद्ध–तर्पण आदि किया जाता है। मंदिर के पीछे अमृत कुण्ड है, जिसमें दो शिव लिंग है और कुछ दूरी पर रेतस कुण्ड हैं। जो मनुष्य केदारनाथ के दर्शन के उपरान्त रेतस कुण्ड का जल पीता है, उसके हृदय में शंकर जी अवस्थित हो जाते हैं। यहीं पर ईशानेश्वर महादेव हैं।

मंदिर के बहुत ही समीप बर्फानी जल की झील है जो मंदाकिनी का उद्गम स्थल है।

भोले नाथ की असीम अनुकंपा से दर्शन का कार्य बहुत ही सुचारू ढंग से सम्पन्न हुआ। उस समय संयोगवश मंदिर में केवल हमलोग ही थे। अतः हमलोगों ने बहुत ही शांत–चित्त से पूजा किया और पण्डा जी ने भी पूर्ण समय देकर विधिवित् पूजा करवाया। दर्शन के उपरान्त मंदिर की परिक्रमा के क्रम में हमलोग बहुत ही उत्साह पूर्वक गा रहे थे –

"बम बम भैरो हो भोपाल,
मग अपनी नगरिया भोला खेबि लगाब पार।"

इसमें हमारे साथ कुछ सहयात्री भी शामिल हो गये और माहौल अत्यन्त ही भक्तिमय और खुशनुमा हो गया। बाद में परिचय के उपरान्त जानकारी प्राप्त हुई कि वे सब मिथिलांचल के ही निवासी थे। एक व्यक्ति, जो सिंहेश्वर स्थान के वासिन्दा थे, कई महीने से वहाँ थे। भोजन और अल्प विश्राम के उपरान्त हमलोग वहाँ के दर्शनीय स्थानों के दर्शन में लग गये। वैसे तो सभी स्थानों का दर्शन ही अत्यन्त आनन्दमय था, परन्तु दो स्थानों का दर्शन अविस्मरणीय रहा, पहला उद्दक कुण्ड, जिसका संबंध सीधे केदारनाथ लिंग से है, जहाँ से जल रिसते–रिसते कुण्ड में जमा हो जाता है। इसे अत्यन्त ही पवित्र माना जाता है और लोग इसे 1 पात्र में भरकर ले जाते हैं। दूसरा स्थान था एक मंदिर के दक्षिणी भाग में छोटी पहाड़ी पर स्थित भुकुण्डा भैरव का स्थान। यहाँ से हिमालय का मनोरम दृश्य दिखाई पड़ता है और इनका यहाँ के निवासियों में बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि उनके अनेक संकट इनके द्वारा चमत्कारिक ढंग से दूर किये गये हैं और उनके चमत्कारों की कई कहानियाँ यहाँ प्रचलित हैं। "भुकुण्ड" नामकरण केदारनाथ के प्रथम रावल भुकुण्ड के नाम पर है, जिन्होंने भैरव

सौंदर्य और विलास के आवरण में महत्वाकांक्षा उसी प्रकार पोषित होती है
जैसे म्यान में तलवार। -रामकुमार वर्मा

सावन की पाषाण प्रतिमा की स्थापना की थी। सांयकाल आरती के उपरान्त हमलोगों ने भोजन किया और निद्रा देवी के आगोश में चले गये। प्रातः काल मंदाकिनी के पवित्र जल से स्नान करके हमलोगों ने पुनः दर्शन किया और भोजन करके वापस लौट चले। तकरीबन आधे रास्ते के बाद हमलोगों ने सवारी छोड़ दी और पैदल ही चल पड़े। पैदल रास्ता ज्यादा आनन्द दायक था। रात्रि में गौरी कुण्ड में विश्राम करके प्रातः काल हमलोग टैक्सी से बद्रीनाथ की ओर चल पड़े।

केदारनाथ से बद्रीनाथ जाने के दो मार्ग हैं। पहला रूद्रप्रयाग होकर और दूसरा उसी मठ गोकेश्वर होकर। टैक्सी रहने से हमें यह सुविधा हुई कि हमने जिस मार्ग का चुनाव किया उसका उपयोग किया और जहाँ भी चाहा वहाँ भ्रमण किया। हमारा पहला पड़ाव था उसी मठ। जाड़े में केदार हिमाच्छादित हो जाता है। इसीलिए केदारेश्वर की पूजा यहीं पर की जाती है। इसे मानधात्री क्षेत्र भी कहा जाता है, क्योंकि सूर्यवंशी सन्धान राजा मानधाता को यहीं पर केदारनाथ का दर्शन प्राप्त हुआ था। जो श्रद्धालु पंचकेदार के दर्शन नहीं कर सकते हों, वे यहाँ पंचकेदार गढ़ी स्थान में पंचकेदार के लिंगों और मूर्तियों के दर्शन कर सकते हैं। रास्ते से मात्र 30 मीटर की दूरी पर स्थित इस स्थान पर केदारनाथ, मधुमेश्वर आदि तीर्थों की विधि विधान से पूजा होती है। यहाँ मंदिर के भीतर बद्रीनाथ, केदारनाथ, औंकारेश्वर, तुंगनाथ, अनिरूद्ध, उषा, मानधाता, सतयुग, त्रेता और द्वापर आदि की मूर्तियाँ हैं। यहाँ से गोपेश्वर मार्ग पर आगे चलने पर चोपता नामक स्थान आता है, जिसे उतराखण्ड का स्वीट्जरलैण्ड कहा जाता है। यहाँ से पाँच किलोमीटर के पैदल मार्ग पर पंच केदार में से तृतीय केदार श्री तुंगनाथ का मंदिर है। यह स्थान सिर्फ तीर्थयात्रियों के लिए ही नहीं, वरन सैलानियों के लिए भी दिलचस्प है। पर्वत की एक ऊँची चोटी पर अवस्थित मंदिर में श्याम पाषाण का एक शिवलिंग है। यहाँ पातालगंगा नामक एक अत्यन्त ही शीतल जल की धारा है और यहाँ से नन्दा देवी, पंचशुली, द्रोणाचल, नीलकण्ठ, बन्दरपूँछ, गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ, रूद्रनाथ और चतुस्तंभ आदि के शिखर दिखलाई पड़ते है। यहाँ अमृत कुण्ड और आकाश कुण्ड नाम के दो कुण्ड भी हैं। चोपता से 39 किलोमीटर पर गोपेश्वर नामक स्थान है। उसी मठ से गोपेश्वर के बीच मार्ग की दृश्यावली बहुत ही मनभावन है एवं बाँस, गुडाँस, चीड़ और देवदार के वन और रंग विरंगे पुष्पों के पौधे बहुत ही सुहावने लगते हैं। हमलोग भी इस प्राकृतिक परिवेश में बहुत ही आनन्दित हुए और पुत्री नेहा का विविध भांति के प्रश्न ने तो आनन्द को कई गुणा बढ़ा दिया। गोपेश्वर का मुख्य आकर्षण वहाँ का शिव मंदिर है, जिसमें एक अष्टधातु का फरसा है और मंदिर के बाहर कुछ खण्डित मूर्तियों को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह छठवीं शताब्दी का प्राचीन मंदिर है।

गोपेश्वर से पाँच किलोमीटर पर लाल सांगा है जिसे चमोली भी कहते हैं। रूद्रप्रयाग से बद्रीनाथ जाने वाला मार्ग भी यहाँ आकर मिल जाता है। यह स्थान अलकनन्दा के बाये किनारे पर अवस्थित है, जहाँ से विरही, पिपलकोठी, गरूड़ गंगा, टंगनी और पाताल गंगा होते हुए लोग गुलाबी कोठी पहुँचते हैं, जहाँ लक्ष्मी नारायण का मंदिर है। अलकनन्दा और विरही गंगा के संगम पर अवस्थित विरही मछली पकड़ने का एक बहुत ही बढ़िया जगह है और पिपल कोठी हरे भरे पहाड़ों और खेतों के मध्य एक व्यस्त शहर है।

गुलाबी कोठी से तीन किलोमीटर पर कुमारचट्टी है, जहाँ बाबाजी का धर्मशाला और धर्मार्थ औषधालय है। यहाँ से अलकनन्दा पार करके एक रास्ता पंचम महादेव को जाता है और सीधा आगे बढ़ने पर वृद्ध बद्री का मंदिर है, जहाँ से 12 किलोमीटर पर जोशीमठ

अवस्थित है, जो शंकराचार्य का उत्तरपीठ होने के कारण अत्यन्त पवित्र माना जाता है। शीत ऋतु में श्री बद्रीनाथ की चलमूर्ति की यहीं लाकर पूजा–अर्चना की जाती है। यहाँ ज्योतिश्वर शिव और भक्तवत्सल भगवान नामक दो मंदिर हैं। पास ही स्थित एक कुण्ड में दो जलधाराएँ गिरती है, जो नृसिंह और दण्डधारा के नाम से प्रसिद्ध हैं। आदि शंकराचार्य आठवीं शताब्दी में केरल से यहाँ आये थे। यह उनकी तपस्थली है, जहाँ उन्होंने ज्योर्तिमठ नामक मठ की स्थापना की, जो कालान्तर में जोशीमठ के नाम से प्रसिद्ध हो गया। यहाँ सेब, खुबानी, आड़ू, नींबू और माल्टा के बगीचे देखने लायक हैं। बद्रीनाथ मंदिर में जो मालाएँ प्रयोग में आती हैं, यहीं से ले जायी जाती है। शहतूत का वह वृक्ष जिसके नीचे आदि शंकराचार्य ने उपनिषदों पर भाष्य लिखा था, यहीं पर स्थित है, जिसके नीचे वह गुफा भी अवस्थित हैं, जहाँ जगत गुरू छह महीने निवास करते थे। यहाँ से नीतिधारी की ओर जाने वाले मार्ग में करीब 12 किलोमीटर पर तपोवन नामक पवित्र स्थान है, जहाँ एक पवित्र कुण्ड और विष्णु मंदिर है। मंदिर के निकट एक वृक्ष के नीचे प्राकृतिक रूप से विष्णु की मूर्ति है।

वर्षा ऋतु में जुलाई से अगस्त तक यहाँ सर्वाधिक फूल खिले रहते हैं। इस घाटी में पुष्पों के साथ–साथ हिमाच्छादित शिखर, हिम और हिम नदियाँ मिलकर एक अनुपम दृश्य प्रस्तुत करते हैं। पौराणिक ग्रंथों में इसका उल्लेख गंधमादन पर्वत के रूप में आता है, महाभारत में इसे गंधर्व चित्ररथ की अलकापुरी कहा गया है और कालिदास के महान ग्रंथ मेघदूत में भी इसका वर्णन है। कहा जाता है कि अपने ज्येष्ठ भ्राता राम के आज्ञानुसार लक्ष्मण ने यहीं अपनी जीवन लीला समाप्त की थी और आज भी इस घाटी के पास लक्ष्मण जी का एक मंदिर जीर्णावस्था में है। यहाँ पर्वत शृंखलाओं से कई जलधाराएँ निकल कर पुष्पावती नदी में गिरती है, जिसमें से एक जलधारा का नामकरण पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के नाम पर प्रियदर्शनी जलधारा किया गया है। इस खूबसूरत घाटी की खोज ब्रिटिश पर्वतारोही फ्रेंक स्माइथ ने की थी। उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक "फूलों की घाटी के प्रकाशन के उपरान्त यह घाटी पूरे विश्व में आकर्षण का केन्द्र बन गयी। यहाँ लन्दन की एक युवती मारग्रेट लेग का कब्र भी है, जिसका असामयिक निधन भ्रमण के दौरान फूल तोड़ने के समय हो गया था। उनकी समाधि पर यह लेख हैः– "मेरी आँखें इन पर्वतों को सदा निहारती रहेंगी। समयाभाव के कारण हमलोग प्रकृति के इस अनमोल विरासत के दर्शन से वंचित रह गये और गोविन्द घाट से सीधे पाण्डुकेश्वर चले गये।

गोविन्द घाट से चार किलोमीटर पर अवस्थित पाण्डुकेश्वर के बारे में कहा जाता है कि महाराज पाण्डु ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में यहीं पर निवास किया था और यहाँ पाण्डवों द्वारा निर्मित योगबद्री भगवान का एक प्राचीन मंदिर भी है।

■■■

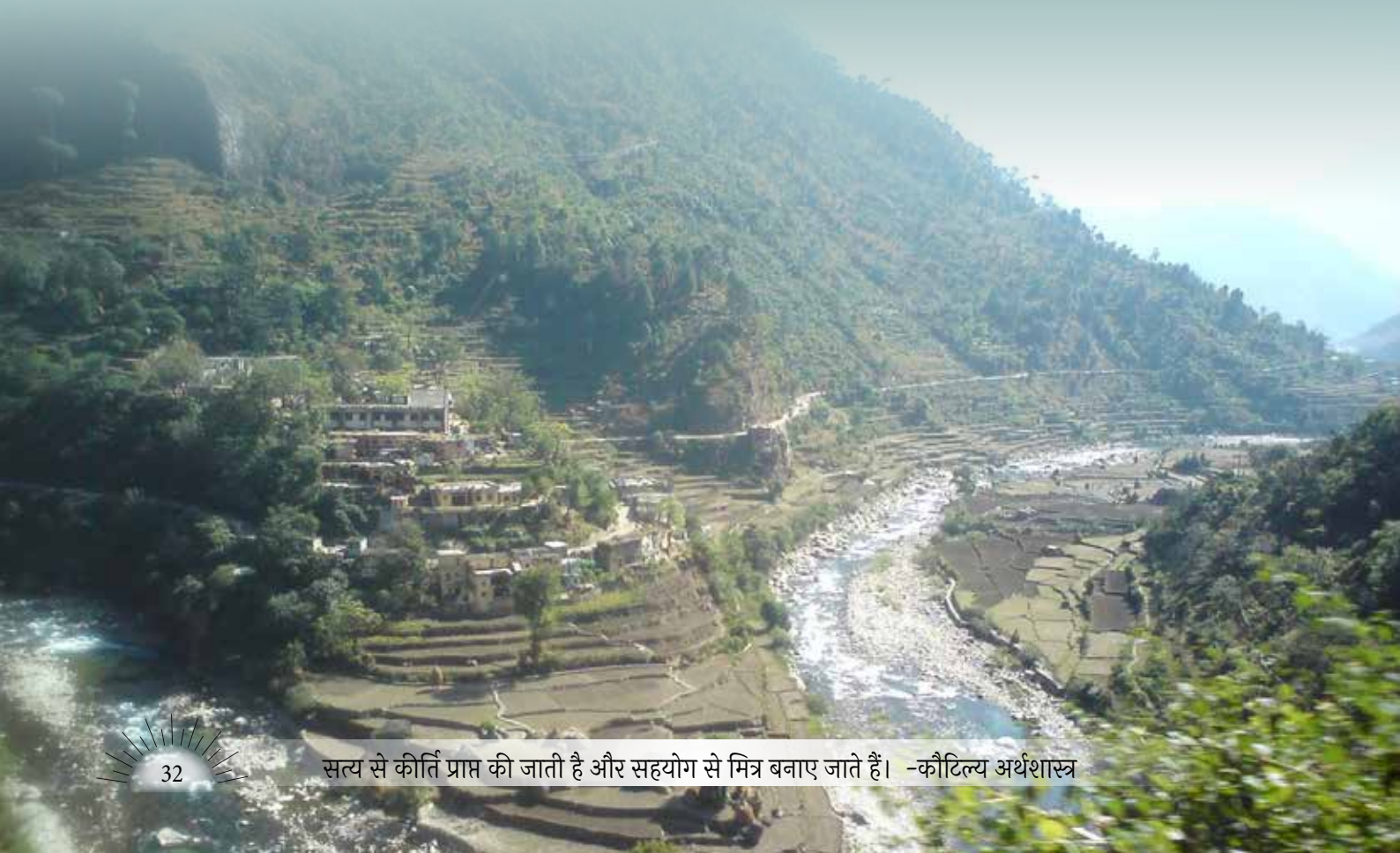

सत्य से कीर्ति प्राप्त की जाती है और सहयोग से मित्र बनाए जाते हैं। –कौटिल्य अर्थशास्त्र

संयम

एक माँ के दो बच्चे थे। एक दिन दोनो बच्चों को बहुत जोर की भूख लगी थी। उन दोनों ने माँ से भोजन मांगा। माँ चावल पकाने जा रही थीं। माँ ने कहा – 'बेटा! थोड़ी देर रूको। मैं चावल पका रही हूँ। थोड़ी देर में बन जाएगा, फिर खा लेना।

माँ की बात सुनकर एक बेटा मान गया। वह धीरज से चावल पकने की प्रतीक्षा करने लगा। वहीं दूसरी ओर दूसरा बेटा जो अधीर था, खाने की जिद करने लगा। वह प्रतीक्षा करना नहीं चाहता था। उसने जिद की उसे कच्चे चावल ही दे दिए जाए, उसी से वह अपना पेट भर लेगा। माँ ने उसे समझाने का भरपूर प्रयास

किया। उसे बताया कि कच्चे चावल खाना उसके लिए अच्छा नहीं है, इससे बाद में परेशानियाँ खड़ी हो सकती हैं। परन्तु, यह बेटा बात सुनने के लिए तैयार न था। उसे सब्र रखना गवारा न था, सामने चावल रखे पड़े थे और वह उसे खाकर अपनी भूख मिटाने को आतुर था। सब्र का वह कायल न था और न ही उसे बाद के परिणाम की परवाह थी। समझाने के बावजूद वह कच्चे चावल खाने लगा और अपनी भूख मिटा ली।

इधर थोड़ी देर के पश्चात माँ ने चावल पकाए। भात अपने पहले बेटे को दिए जिसने सब्रपूर्वक खाना बनने की प्रतीक्षा की थी। बेटे ने आनंदपूर्वक भात खाए और संतुष्ट होकर खेलने चला गया।

– पूनम बरनवाल
पत्नी, श्री आलोक कुमार
स.ले.प.प्र.

इधर दूसरा बेटा जिसने कच्चे चावल खाए थे, थोड़ी देर तक तो, भूख मिटाने के पश्चात संतुष्ट हो खेलता रहा, परन्तु अब उसके शरीर में उपद्रव होने शुरू हो गए थे। पहले तो पेट में मरोड़े उठने लगे और थोड़ी देर के पश्चात वमन और दस्त आने शुरू हो गए। जितना कुछ भी खाया था सारे विकार के रूप में शरीर से बाहर निकल गए। शरीर पस्त और निढाल हो गया। कमजोर शारीरिक अवस्था कई दिनों तक बनी रही।

ऐसा अक्सर हमारे साथ होता है। जब हम संयम छोड़कर क्षणिक आवेग में इंद्रिय सुख की लालसा में पड़ जाते हैं, तो मन और शरीर दोनो का बड़ा नुकसान होता है। सुख के रूप में ली गई वस्तु वमन के रूप में बाहर निकलने लगती है और इसके दुष्परिणाम शरीर को कई दिन तक भुगतने पड़ते हैं।

■■■

विचारों से व्यक्तित्व के निर्माण तक

– राखी कुमारी
काउन्सलर
पत्नी, मनोज कुमार, नं. 5,
स.ले.प.अ.

एकबार मैं संप्रेक्षण गृह (बाल सुधार गृह) से लौट रही थी। रोज की तरह मुझे विचार आया कि ऑटो पकड़कर जल्दी से घर जाना है। मैं ऑटो पर बैठी ही थी कि फिर विचार आया मुझे उतरने के बाद पुनः दूसरे ऑटो पर बैठना है। जब मैं दूसरे ऑटो पर बैठी तो विचारों की पुनरावृति होने लगी कि आगे क्या करना है . . . . . ? विचारों के इस उधेड़–बून में मुझे पता ही नहीं चला कि मैं घर कब पहुँच गई। इस तरह से पूरे रास्ते हजारों विचार मेरे

मस्तिष्क में आते गये और विचारों का सिलसिला संप्रेक्षण गृह से लेकर घर तक चलता रहा। जब इस पर गौर किया गया तो पाया गया कि इसमें से अधिकतर विचार ऐसे थे जिसका कोई मतलब ही नहीं था अर्थात् नकारात्मक था और बहुत कम विचार ऐसे थे जिनको पालन करना (फॉलो) था अर्थात् सकारात्मक था।

हम कहीं भी रहते हैं . . . . . तो सोचते हैं कि पता नहीं घर पर क्या हो रहा होगा। बच्चे स्कूल गये होंगे कि नहीं। कहीं स्कूल से आकर इधर–उधर तो नहीं चले गये। कहीं उन्हें चोट तो नहीं लगी . . . . . ? इस तरह विचारों का अंतहीन सिलसिला चलता रहता है।

विचार ऐसी स्थिति है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करती है। सबसे पहले हमारे दिमाग में विचार आते हैं और यह सतत चलता रहता है। तत्पश्चात हम उसे महसूस (फिलिंग) करते हैं। तदनुसार, प्रतिकिया (ऐक्शन) होती है। यह प्रतिकिया बारम्बार (रिपिटेड ऐक्शन) होती है। यह धीरे–धीरे हमारी आदत (हैबिट) बन जाती है। यही आदत से हमारा व्यक्तित्व (पर्सनालिटी) बनता है। इस प्रकार, आज का व्यक्तित्व कल की वास्तविकता बन जाती है।

व्यक्तित्व (पर्सनालिटी)
आदत (हैबिट)
बारंबार प्रतिकिया (रिपिटेड ऐक्शन)
प्रतिक्रिया (ऐक्शन)
महसूस करना (फिलिंग)
विचार (थॉट्स)

हमारे मस्तिष्क में दो बिलियन विचार (थॉट्स) प्रति सेकेण्ड आते हैं। फिल्टर होने के बाद कुछ ही थॉट्स हमारे मस्तिष्क में रहते हैं जिसमें से 90 प्रतिशत नकारात्मक होते हैं और 10 प्रतिशत सकारात्मक होते हैं।

एक बच्चा बहुत मेहनत करने के बाद अभिभावकों के अपेक्षाओं के अनुसार मार्क्स नहीं लाते हैं, तो अभिभावक कहते हैं (अभिभावकों के शब्दों में) – **"हमलोग हमेशा कहते थे कि पढ़ो, पढ़ो। मोबाईल, टी.वी. कम देखो। लेकिन सुनता ही नहीं था। अब नम्बर कम आया न! कड़ी मेहनत मत करो! इसी तरह कम नम्बर लाओगे तो सभी कहेंगे कैसा बच्चा है? कुछ नहीं आता है।"**

अर्थात् जाने–अनजाने बच्चे के दिमाग में यह विचार डाला गया कि –

"तूम कम मेहनती हो,
पढ़ते नहीं हो,
सिर्फ टी.वी. और मोबाईल देखते हो।
तूम्हारा यही हाल रहेगा, कभी अच्छा नहीं कर पाओगे।"

शासन के समर्थक को जनता पसंद नहीं करती और जनता के पक्षपाती को शासन।
इन दोनो का प्रिय कार्यकर्ता दुर्लभ है। - पंचतंत्र

परीक्षा में थोड़े कम नम्बर लाने का पुरस्कार यह नकारात्मक विचार मिला। धीरे–धीरे यही बच्चे का व्यक्तित्व बनता गया।

दूसरी तरफ, बच्चे में भी नकारात्मक प्रवृत्ति का विकास हुआ। उन्होंने सोचा कि, **''मैने मम्मी–पापा के अनुसार ही मेहनत किया। मेरे कम नम्बर आये तो मैं क्या करूँ? शायद मेरे माता–पिता ठीक कहते हैं मैं कभी अच्छा नहीं कर सकता।''**

It is not enough to love the children, it is necessary that they are aware that they are loved.

-St. John Bosco

एक प्रेरक प्रसंग

मोहन (काल्पनिक नाम) नाम का बच्चा था। उसके भाई–बहन नहीं थे। उसके लिए उसकी सारी दुनिया उसके माता–पिता ही थे। जब वह दोस्तों के साथ खेलता, तो कहा जाता – ''मत खेलो, यहाँ मत जाओ।'' उसे किसी चीज की कमी नहीं होने दी गयी। धीरे–धीरे वह बच्चा किशोरावस्था में पहुँचा, तो वह अकेले रहने लगा। दोस्त भी बनाता तो माता–पिता को नहीं बताता। धीरे–धीरे उसके स्कूल में मार्क्स कम आने लगा, कम बोलने लगा, वह हीन भावना से ग्रसित हो गया।

एक तरफ अभिभावक यह सोचते है कि मैने अपने बच्चे को सब कुछ दिया । कोई कमी नही होने दी, फिर ऐसा कैसे हो गया। दूसरी तरफ बच्चे के लिये ये सभी सुविधायें नकारात्मक प्रभाव डाल रही होती है। अभिभावक समझ नही पाते है कि गलती कहाँ हुई लेकिन वे इस बात से अनजान होते है की उनकी कही गई हर बात बच्चे के लिये महत्त्वपूर्ण होता है और इसका प्रभाव नकारात्मक भी हो सकता है।

उस बच्चे का परामर्शन किया गया। उसके बाद उसके परिवार का परामर्शन किया गया। तब बात सामने आयी कि किस तरह से धीरे–धीरे करके उस बच्चे के मन में नकारात्मक विचार डाला गया। बच्चा नकारात्मकता की दुनिया में खो गया। परामर्शन के बाद वह बच्चा अच्छा करने लगा। माता–पिता भी अपनी गलती को सुधारने लगे।

इस तरह से एक नकारात्मक विचार जब भी दिमाग में डाला जाता है, तो पूरा व्यक्तित्व प्रभावित होता है। बालको के व्यक्तित्व को निखारने के लिए समझदारी विकसित करने के साथ–साथ सकारात्मक विचार मस्तिष्क में डालना अति आवश्यक होता है। बालको के मन में सकारात्मक विचार कुछ इस प्रकार विकसित की जाती है –

"मैं अच्छा हूँ (I am good),

मैं स्मार्ट हूँ (I am smart),

मैं तेज हूँ (I am intelligent),

मैं विश्वास से भरा हुआ हूँ (I am full of confidence),

मैं खुश हूँ (I am cheerful),

मैं सबकुछ कर सकता हूँ (I can do everything)"

आदि . . . . आदि . . . . . !

ये पावरफुल वाक्य बच्चों के व्यक्तित्व को निखारती है। उसमें विश्वास को जगाती है और अच्छा करने के लिए प्ररित करती है। जब भी अपने आप को किसी कारणवश कमजोर महसूस करें, तो इन पावरफुल वाक्य का प्रयोग करें। अपने आप को सकारात्मकता से जुड़ा हुआ महसूस करेंगे।

इस तरह से विचारों का सफर व्यक्तित्व के निर्माण तक चलता रहता है।

■■■

झारखण्ड की मुंडा जनजाति का अन्य राज्यों से ऐतिहासिक जुड़ाव

यदि आपसे झारखण्ड की जनजातियों के निवास स्थान और उद्‌गम स्थान के बारे में पूछा जाए तो आप में से बहुसंख्यकों का विश्वास होगा कि इनका निवास स्थान आरंभ से झारखण्ड और इसके समीपवर्ती राज्यों के क्षेत्र रहे हैं। परन्तु यह सही नहीं है. वर्तमान में इस प्रदेश की मूल निवासी समझी जाने वाली जनजातियाँ प्राचीन काल में विस्थापन की पीड़ा झेलकर वर्तमान परिवेश में इस कदर अनुकूल बन चुकी है कि इन्हें सहज रूप में मूल निवासी माना जाने लगा है। इस प्रदेश की विभिन्न जनजातियों का सम्बन्ध देश के सुदूर उत्तर–पश्चिमी, दक्षिण और पश्चिम राज्यों से रहा है। ऐतिहासिक शोधों से यह निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि झारखण्ड में बसने वाली प्रमुख जनजातियाँ जैसे मुंडा, उरांव, संथाल आदि का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक जुड़ाव देश के विभिन्न राज्यों से रहा है। अलग–अलग कालखंडों में इन्हें विस्थापित होकर इस प्रदेश में आना पड़ा। इस अंक में मैं मुंडा जनजाति की चर्चा करूँगा, जिसका प्रसार, न केवल देश में, अपितु विदेशों में भी रहा है।

आम धारणा के विपरीत मुंडा जनजाति केवल झारखंड के ही नहीं बल्कि भारत के मूल निवासी हैं । आर्यों के भारत में आगमन से पहले ही मुंडा जनजाति भारत के उत्तर– पश्चिम क्षेत्रों में फैली हुई थी। इस बात की पुष्टि मुंडा परम्परा में प्रचलित कहानियों से होती है। जो यह बतलाती है कि मुंडा जनजाति अपने वर्तमान निवास स्थान से उत्तर पश्चिम (वर्तमान पंजाब और उत्तर प्रदेश) में रहती थी। प्रसिद्ध इतिहासकार सुमीति कुमार चटर्जी ने अपने शोधों से सिद्ध कर बताया कि राजपूताना और खानदेश (वर्तमान उत्तर पश्चिमी महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश का कुछ इलाका) की भील जनजाति संभवतः मुंडा जनजाति का ही एक रूप है। इसी प्रकार इसी क्षेत्र की कोल जाति भी एक समय मुण्डा परिवार की ही सदस्य थी।

मुण्डा क्षेत्र पश्चिम में गुजरात तक फैला हुआ था। मुंडा जाति का क्षेत्र उत्तर में कश्मीर तक फैला हुआ था। इस बात की पुष्टि का स्रोत बुरूसाकी भाषा से होती है जो मुंडा से संबंधित है। बुरूसाकी भाषा काश्मीर के पश्चिमी क्षेत्र– यासिन और हुन्सानगर में बोली जाती है। मुंडा भाषा के मूल तत्व हिमालय प्रदेश के तिब्बती चीनी बोलियो में पाए जाते हैं। इसके अलावा मुंडा 'सिंडबोंगा' और 'मरंगबुरु' की पूजा करते है। 'सिंडबोंगा' शब्द का मूल अर्थ 'सबसे बढिया पर्वत' है। और मरंगबुरु का अर्थ 'महान पर्वत' है। यह दोनों ही शब्द हिमालय के संदर्भ में उपयोग किए गए है। मुंडा लोग सफेद जानवरों की ही पूजा सिंडबोंगा को चढ़ाते है और सफेद रंग को पवित्र मानते है। ऐसा संभवतः इनका हिमालय इलाके से संबंध के कारण ही शुरू हुआ है।

– **आलोक कुमार**
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

असम प्रदेश की खासी भाषा और बर्मा के मोन लोगो की भाषा दोनो मुंडा भाषा के सदृश्य है। इस तरह यह भाषा मध्य भारत से बर्मा तक फैली हुई शृंखला की कडी के समान है। यह कड़ी पूर्व में कम्बोडिया और वियतनाम तक फैली हुई है, जिनकी बोली में बहुत समानताएं है। प्रोफेसर जकरियस थुण्डी के अनुसार केरल की मलयालम और अन्य जनजातीय भाषाओं में ऑस्ट्रिक और मुंडा तत्व मिलते है। उन्होने केरल की भाषाओं और लोक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन मुंडा भाषाओं और उनके लोक साहित्य के साथ किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अधिकांश मलयालियों में मुंडा जातीय तत्व मौजुद रहे है। केरलवासियों के मूल पूर्व चेरों थे। परन्तु चेरों दक्षिण भारत के मूल निवासी नहीं थे। वें उत्तर से या यह कहें कि झारखंड से आए थे।

इस प्रकार हम पातें हैं कि मुंडा जाति का जुड़ाव न केवल वर्तमान भारतीय उप महाद्वीप के विभिन्न भू–भागों से बल्कि सुदूर मध्य

सारा जगत स्वतंत्रता के लिए लालायित रहता है फिर भी प्रत्येक जीव अपने बंधनों को प्यार करता है। - श्री अरविंद

एशिया और उत्तर पश्चिमी एशिया के देशों तक फैली हुई थी। विद्वानों के अनुसार मुंडा जाति का इतिहास एक नए निवास स्थल की खोज में भ्रमण का इतिहास है। बाहर से आयी जातियों ने इन पर आक्रमण किया जिसके फलस्वरूप इन्हें मूल निवास स्थानों से विस्थापित होकर नए प्रदेशों में शरण लेनी पड़ीं। विस्थापन की इस कठिन और लम्बी प्रक्रिया में बहुत से मुंडाओं ने अपनी पहचान खो दी और दूसरी भाषा, संस्कृति और धर्म को अपना लिया। ऐसा माना जाता है कि भील, कोली, चेरो, खेरवार आदि जातियां एक समय में मुंडा भाषा–भाषी थें परन्तु कालांतर में उन्होंने हिन्दू धर्म और संस्कृति को अपना लिया ।

इन ऐतिहासिक तथ्यों से यह बात सिद्ध होती है कि जातियों के विस्थापन की प्रक्रिया, मानव जाति के मध्य चलने वाली अनवरत संघर्ष का परिणाम है। यह प्रक्रिया चार्ल्स डार्विन के 'Theory of Natural Selection' के अनुसार सहज और स्वाभाविक प्रतीत होती है परंतु आज के परिपेक्ष्य में इस बात को समझने की आवश्यकता है कि इस प्राणी जगत में केवल बलशाली जीव ही अस्तित्व में नहीं हैं, बल्कि वो जीव भी है जिन्होंने कम समर्थशाली होने के बावजूद अपने आपको परिस्थितियों के अनुरूप ढाल लिया है। यदि ऐसा नहीं होता तो आज डायनासोर जैसे अति शक्तिशाली जीव पृथ्वी से विलुप्त नहीं होते और चीटीं जैसी नन्हीं और कमजोर सी दिखनी वाली प्राणी का अस्तित्व नहीं बचता। इतिहास का अध्ययन हमें केवल भूत की घटनाओं के बारे में जानकारी लेना नहीं है बल्कि इसका महत्त्व इसमें है कि हम कैसे इन घटनाओं से सबक लेकर भविष्य में, इनकी पुनरावर्ती से बच सकें। इस सबक के फलस्वरूप संघर्षरत जातियों ने नए परिवेश के अनुसार अपने आपको ढालकर प्रकृति की चुनौतियों का समुचित जवाब दिया है और मूल निवासी कहलाये जाने का अक्षुण्ण गौरव हासिल किया है।

■■■

आवेश

– कुन्दन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आज विमल कार्यालय से जल्दी घर आ गये थे. उन्होंने पत्नी से कहा, "अजी, सुनती हो, दिन भर, केवल घर के काम में लगी रहती हो.....''

उसकी पत्नी श्रेया, विमल की बात को अनसुनी करते हुए, झुंझलाहट भरे स्वर में बोली, "मुझे, आपकी एक नहीं सुननी. आपको घर के लिये, समय निकालने की फुर्शत है नहीं। दिन–भर अपने कार्यालय और अपनी फरमाईश, मेरे आगे परोसते रहते हो.....''

विमल ने दुबारा, अपनी पत्नी को कुछ बताने की कोशिश की। लेकिन, श्रेया कुछ सुनने को तैयार नहीं थी। विमल एक तरफ, अपना बैग रखते हुए, बाथरूम में चला गया।

उसी वक्त, विमल के दोस्त का कॉल, श्रेया के मोबाइल पे आया। उधर से कुछ आवाज आती, उससे पहले, श्रेया ने जोर–जोर से बोलना शुरू कर दिया, "अभी–अभी, आप कार्यालय से घर पहुंचे हो। विमल से, उसके मोबाइल पे, आपकी संपर्क नहीं हो रही होगी। तभी, आपने मेरी मोबाइल पे, उनसे संपर्क करने की कोशिश किया है। आप सभी हस्बैंड, एक जैसे होते हो। केवल अपनी दोस्ती और कार्यालय के लिये मरते–धरते रहते हो। थोड़ी, अपने घर और बच्चों का भी फिकर किया करो.....''

विमल, श्रेया को इस तरह किसी से मोबाइल पे तेज आवाज में बातें करते सुन, शीघ्र बाथरूम से बाहर आ गया था। उसने, श्रेया के हाथ से मोबाइल लेकर मामला जानना चाहा। अरे, यह तो रेहाना जी की आवाज थी। जो अपने पति के मोबाइल से, श्रेया से बात करने की कोशिश कर रहीं थी।

"जी, रेहाना जी, नमस्कार–नमस्कार...., धन्यवाद–धन्यवाद..... अभी, कुछ देर पहले, मेरी बिटिया का यूपीएससी का परिणाम आया है। इसलिए, मैं कार्यालय से भागा–भागा घर आया हूँ। मुझे यह खुशखबरी घर में सभी को बतानी थी। उसने, परीक्षा में अच्छा रैंक प्राप्त किया है। यह, आपलोग के आशीर्वाद का ही परिणाम है.....''

विमल, मोबाइल श्रेया को देते हुए कहा, "रेहाना जी, तुम्हें, बिटिया की, इतनी बड़ी सफलता पर बधाई देना चाह रहीं हैं। तुम, मेरी सुनती कहाँ हो। मैं, यही खुशखबरी, कब से, तुम्हें बताना चाह रहा था।''

श्रेया को मानो 'काटो तो खून नहीं' उसे, अपने व्यवहार पर लज्जा महसूस हो रही थी। वह, रेहाना जी से आगे बातें नहीं कर पा रही थी..... विमल के सामने, उसकी नजरें क्षमा प्रार्थी दिख रही थी।

■■■

कामनाएँ समुद्र की भाँति अतृप्त हैं। पूर्ति का प्रयास करने पर उनका कोलाहल और बढ़ता है। -स्वामी विवेकानंद

विज्ञान के प्रोफेसर का प्रियतमा को पत्र

– **मनोज कुमार, न. 7**
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रिय ऋणात्मक ध्रुव

नमस्ते,

मैं यह पत्र अपने रसायन विभाग से लिख रहा हूँ। जबसे मैंने तुम्हारे कैल्सियम कार्बोनेट जैसा श्वेत मुखड़ा देखा है मेरा दिल 25 मीटर/सेकंड के त्वरण से धड़कते हुए तुम्हें पाने को बेताब है। तुम्हारे आयरन सल्फाइड जैसे काले बालों को देखकर मेरा मन हाइड्रोजन जैसा उड़ने लगा है। तुम्हारी कॉपर सल्फाइड जैसी नीली आँखों को तो मैं भूल ही नहीं सकता। अगर तुम मुझे इनमें बसा लो तो सचमुच पोटेशियम परमैगनेट बनकर ऑक्सीडाइजिंग एजेंट की तरह काम करूंगा। वैसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम सान्द्र सल्फ्यूरिक एसिड की तरह कड़वी हो पर मेरा दिल कहता है कि तुम एक दिन तनु सल्फ्यूरिक एसिड जरूर बनोगी।

तुम्हारा सान्द्र सल्फ्यूरिक जैसा कड़वा स्वभाव मुझे बेहद पसंद है पर जिस दिन मैं जल बनकर तुम्हारे दिल में प्रवेश करूंगा तुम तनु हो जाओगी। तब हम दोनों मिलकर लाल लिटमस पत्र को नीला कर देंगे। मैंने तुम्हें कई बार ठहरने को कहा है पर तुम वहां से मेरे प्रयोगशाला में रखी अमोनिया की तरह तुरंत उड़ जाती हो। यकीन करो जब हम धनात्मक और ऋणात्मक आवेश की तरह मिल जायेंगे तब हमारे जीवन की अभिक्रिया इतनी तेज हो जायेगी कि यह जमाना चाहे लाख इलेक्ट्रोलैसिस करे हम दोनों कभी आयरन में अलग नहीं होंगे। तब कुछ समय बाद हम दोनों अभिक्रिया से इलेक्ट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रोन जैसे कणों का निर्माण करेंगे। इससे भी काम नहीं चला तो कार्बन 12 का निर्माण कर जीवन की एटोमिक थ्योरी लिखेंगे। तब तक ये इलेक्ट्रोन, प्रोटोन एवं न्यूट्रोन भी अपना अष्टक पूरा करने की सोचेंगे। जब तक इनका अष्टक पूरा होगा तब हम तीनों छोटी सी आवर्त सारणी जैसी दुनिया छोड़कर अक्रिय गैसों का स्थान ग्रहण कर लेंगे और जीवन व्यतीत करेंगे। ज्यादा क्या लिखूं तुम्हारे रेड्यूसिंग एजेंट की तरह धीमे होने का इंतजार करते हुए।

पत्र की प्रतीक्षा में –

तुम्हारा धनात्मक ध्रुव

■■■

चार धाम यात्रा

– आस्था सिंह
पुत्रवधु – डॉ. हिमालय कुमार झा

चार धाम यात्रा को हिंदुओं के लिए सबसे प्रमुख तीर्थों में से एक माना जाता है, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह मोक्ष प्राप्त करने में मदद करता है। इसे 8वीं शताब्दी के महान सुधारक और दार्शनिक आदि शंकराचार्य द्वारा क्यूरेट किया गया। कहा जाता है, उन्होंने इसे भारत के चार कोनों में फैलाया – उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम, पूर्व में पुरी और पश्चिम में द्वारिका। चार में से तीन स्थल भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों को समर्पित हैं जबकि रामेश्वरम में रामनाथस्वामी मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। सभी 4 तीर्थों की यात्रा न केवल आध्यात्मिक बल्कि शांतिपूर्ण और मंत्रमुग्ध करने वाली भी होगी।

यह विविध सांस्कृतिक और पाक अनुभवों के साथ भारत के सभी कोनों में एक सुखद यात्रा है।

बद्रीनाथ, उत्तराखंड

बादलों के बीच उत्तराखंड में गढ़वाल पहाड़ियों में नीलकंठ चोटी की छाया में स्थित भगवान बद्री का धाम है। यह हिंदुओं के सबसे दर्शनीय मंदिरों में से एक है। यहां पहुंचने के लिए आप ऋषिकेश या देहरादून से बस ले सकते हैं या टैक्सी किराए पर ले सकते हैं। देहरादून हवाई अड्डे से हेलीकॉप्टर टैक्सी भी उपलब्ध हैं। कार या बस की सवारी आपको अलकनंदा नदी के समानांतर चलने वाली सुंदर सड़कों पर ले जाएगी, गर्म मैगी और एक कप चाय के लिए रुकिए और घाटियों की सुंदरता का आनंद लें।

मंदिर केवल अप्रैल के अंत से अक्टूबर तक खुला रहता है। मई, जून, सितंबर और अक्टूबर यात्रा के लिए उपयुक्त है। मानसून के मौसम से बचना चाहिए।

रामेश्वरम, तमिलनाडु

रामेश्वरम की आध्यात्मिक भूमि मन्नार की खाड़ी में स्थित एक सुंदर 'द्वीप शहर' है। रामनाथस्वामी मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और मंदिर में 22 कुंड हैं जो हिंदुओं के लिए एक बहुत ही पवित्र मूल्य रखते हैं। मंदिरों के साथ–साथ रामेश्वरम में अन्य अद्भुत पर्यटन स्थल भी हैं जो आपको रोमांचित कर देते हैं। प्रसिद्ध राम सेतु पुल जिसे भगवान राम ने लंका पहुंचने के लिए बनाया था, रामेश्वरम मंदिर से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, अपने रास्ते में धनुषकोडी के भूत शहर के खंडहरों को देखना ना भूलें। द्वीप को सभी साधनों द्वारा पहुँचा जा सकता है, पंबन पुल के कारण रेल की सवारी बहुत प्रसिद्ध है जो आपको दोनों तरफ बंगाल की खाड़ी का शानदार दृश्य देती है।

अक्टूबर से अप्रैल तक सर्दियों के महीने घूमने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि मौसम सुहावना होता है।

द्वारिका, गुजरात

गुजरात में सौराष्ट्र प्रायद्वीप के पश्चिमी सिरे पर स्थित द्वारिका को भगवान कृष्ण के राज्य की राजधानी माना जाता है। द्वारिका कृष्ण के प्राचीन साम्राज्य का एक हिस्सा था और द्वारिकाधीश मंदिर, जिसे जगत मंदिर के रूप में भी जाना जाता है, भगवान कृष्ण को समर्पित।

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर भी द्वारिका में स्थित है। आप सोमनाथ की यात्रा करने की योजना भी बना सकते हैं, जो एक और पवित्र स्थान है और सोमनाथ मंदिर को भी शिव के 12 मंदिरों में से एक माना जाता है। सोमनाथ में, त्रिवेणी घाट को देखना न भूलें जहाँ आप 3 नदियों हिरण, कपिल और एक पौराणिक नदी सरस्वती का संगम देख सकते हैं। निकटतम हवाई अड्डा राजकोट है और आप टैक्सी ले सकते हैं और सौराष्ट्र के

आसपास जा सकते हैं। घूमने का सबसे अच्छा समय नवंबर और फरवरी के बीच और जन्माष्टमी के दौरान है जो यहां भव्य रूप से मनाया जाता है

पुरी, उड़ीसा

पुरी एक प्राचीन शहर और एक तीर्थ स्थल है जो उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर से लगभग 60 किमी दक्षिण में स्थित है। जगन्नाथ मंदिर भगवान जगन्नाथ को समर्पित है जो भगवान विष्णु का एक रूप है। मंदिर अपनी वार्षिक रथ यात्रा या रथ महोत्सव के लिए प्रसिद्ध है जहां इन तीन देवताओं को विशाल सजाए गए रथों पर खींचा जाता है। पुरी में कई समुद्र तट हैं जिनमें भारत के सबसे साफ समुद्र तटों में से एक – पुरी बीच शामिल है। इसके अलावा, कोणार्क जाएँ जो लगभग 38 किमी की दूरी पर स्थित है और प्रतिष्ठित सूर्य मंदिर का घर है – यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल। कुछ खूबसूरत समुद्र तटों के साथ शहर भर में प्राचीन मंदिर फैले हुए हैं। पुरि शहर सड़क, रेल और हवाई मार्ग से आसानी से पहुँचा जा सकता है, निकटतम हवाई अड्डा भुवनेश्वर है। पुरी घूमने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से फरवरी तक है। इस दौरान मौसम खुशनुमा और ठंडा रहता है। ■■■

एक महात्मा का प्रताप

– **श्री आलोक कुमार**,
सहायक लेखापरीक्षा
अधिकारी

नवयुग का सूत्रपात है,
एक महात्मा का प्रताप है

घर परिवार छोड़ दिया उसने
आमरण संघर्ष जिसके साथ है।

हर कदम पर पुरूषार्थ है,
देश सेवा का संकल्प उसके पास है।

स्वत्व की नहीं कोई आशा,
परमार्थ ही है उसकी अभिलाषा।

निर्धनता में जिसका बचपन बीता,
संघर्षों से जीने की राह सीखा।

योग व अध्यात्म से मन को सींचा,
कठोर परिश्रम से तन को भींचा।

समाज कल्याण की डगर पर पग बढ़ाया,
पवित्र सोच से चतुर्दिक प्रकाश फैलाया।,

मानवता की सेवा में तन–मन कर दिया अर्पित,
ऐसे महापुरूष को करते है, शत्–शत् नमित।

जबसे देश की कमान संभाली,
आयी है समृद्धि, छायी है खुशहाली।

भ्रष्टाचार पर रोक लगायी,
बेइमानों की बेहाली बढ़ाई।

गरीबों का हित उसके लिए सर्वोपरि है,
राष्ट्र की उन्नति ही एकमात्र अभिरूचि है।

संपूर्ण विश्व में राष्ट्र का गौरव बढ़ाया,
योग एवं भारतीयता का डंका बजवाया।

राजनीति को एक नयी राह दिखायी,
छद्म तुष्टीकरण की दुकान बंद करायी।

समग्र विकास का दिया है नारा,
हर धर्म व समुदाय का है दुलारा।

विश्व बंधुत्व की राह में अग्रसर,
मानवता के उत्थान का है पक्षधर।

आओ हम सब मिलकर सम्मान करें,
आज के इस महात्मा का अनुसरण अविराम करें।

■■■

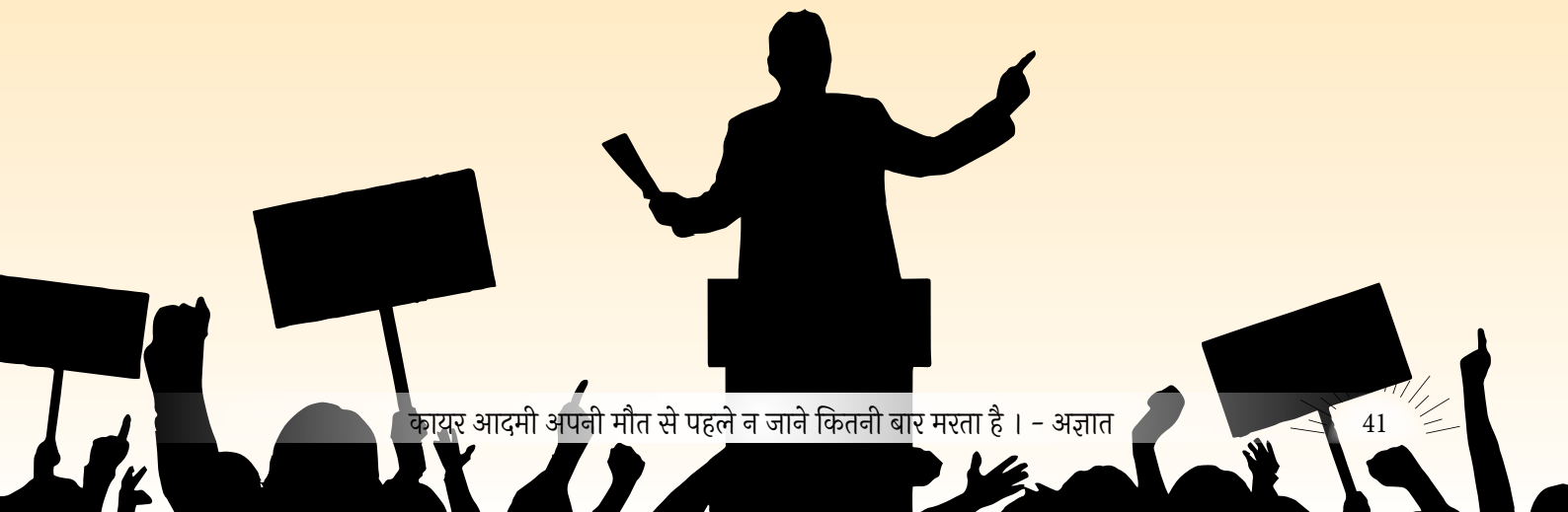

शहीदों की याद में

– **दीपशिखा**
सहायक लेखापरीक्षा
पदाधिकारी

आजादी के 75वें वर्ष के
इस अमृत महोत्सव में,
आओ, हम सब याद करें
उन वीर शहीदों को,
जिन्होंने वारा अपना जीवन
इस देश को स्वतंत्र कराने में,

वीर सुभाष मर मिट चले
इस जंगी आजादी में,
शहीद भगत सिंह ने चूमा
अपने फांसी के फंदे को,

वीर सावरकर ने झेला
उत्पीड़न काला पानी का,
चंद्रशेखर ने अपना जीवन खोया
अंग्रजों को भगाने में,

मंगल पाण्डेय ने बिगुल फूंका
देश की आजादी का,
लक्ष्मी बाई ने लड़कर
तोड़ा गर्व अंग्रेजों का,

गाँधी की अहिंसा के पथ को
मिटा न पायी हुकूमत,
और भी लाखों बेनाम जनों ने
सींचा भारत को अपने रक्त–बूंदों से,
हमने तब ही पाई देश की आजादी को,

तो क्यों न याद करें हम
उन वीर शहीदों को,
आजादी के 75वें वर्ष के
इस अमृत महोत्सव में,

आओ, अर्पित
करें उन्हें हम,
कुछ संकल्पों के श्रद्धा–सुमन से,
उज्ज्वलित रहे हमारा भारत,
सदा इस विश्व–पटल पर,

ना वरण करें हम उस धन को
जिसमें हमारा श्रम नहीं,
स्वच्छ रखें हम उस वायु को,
जिसमें हम आजादी के श्वास भर रहे,

रखें इसे हम हरा–भरा
प्रत्येक कुछ वृक्षारोपण कर के,
मिट्टी–जल भी स्वच्छ रहे
कुछ ऐसा भी प्रयास करें,

आजादी के 75वें वर्ष में
कुछ ऐसा ही संकल्प करें
उन अनेक शहीद वीरों को,
इस तरह से भी नमन करें।

मुठ्ठी भर संकल्पवान लोग जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है,
इतिहास की धारा को बदल सकते हैं । - महात्मा गांधी

भारत के लाल

– **शाहिल कुमार यादव**
कक्षा – VII
पिता – श्री संजीव कुमार यादव

ऐ भारत के लाल
दिखाओ अपनी चाल।
जैसे सूर्य और चन्द्र हैं गतिशील
वैसे तुम भी रहो परिवर्तनशील।।

न झुको कभी न रूको कभी
न गर्मी की तेज से न ठंड की कड़क से।
न तूफानों से न आपदाओं से
न झुको कभी न रूको कभी।।

जीवन की नैया में डग–डग पर मिलेंगें कसौटी
फिर भी तुम्हें उड़ान भरनी है ऊंची–ऊंची।
क्या किसान अपने हाथ बांध के रखे रहे
क्या जवान घरों में बैठे रहे ?

मानवता की लाज बचाने को
मां की ममता का कर्ज चुकाने को।
उठो मेरे लाल
दिखाओ अपनी चाल।।

■■■

साड़ी और जींस वार्तालाप

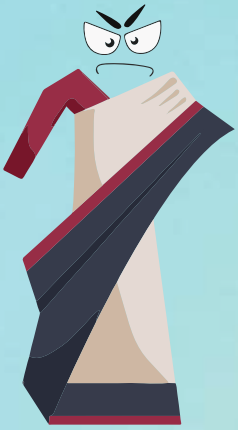

– आरती पाठक
पत्नी श्री बालमुकुन्द पाठक,
लेखापरीक्षक

एक दिन जींस और साड़ी में हो गई तकरार
कहा साड़ी ने ठसक से –
मैं हूँ मर्यादा, परम्परा, संस्कृति–संस्कार
सौ प्रतिशत देशी
तू क्यों घुस आई मेरे देश में विदेशी ?
वैदिक काल से मैं स्त्री की पहचान थी,
आन–बान–शान थी,
घूँघट, आँचल और सम्मान थी....
बेटियाँ बचपन में मुझे लपेट,
माँ की नकल करती थीं
दसवीं के फेयरवेल तक
पिता को चिंतित कर देती थीं
उनकी पुत्री–कन्या भी
मुझे ही पहनती थीं
भारत माँ हो या हमारी देवियाँ
देखा है कभी किसी ने
मेरे सिवा पहनते हुए कुछ....?
जब से तू आई है बिगड़ गया है
सारा माहौल
हर जगह उड़ रहा है
मेरा माखौल
बेटियाँ तो बेटियाँ
गुड़िया तक जींस पहनने लगी है
गाँव–शहर की बड़ी–बूढ़ी भी
तुम्हारे लिए तरसने लगी हैं
ना तो तू रंग–बिरंगी है।
ना रेशमी–मखमली
फिर भी जाने क्यों लगती है सबको प्यारी?

नए–नए फतवे हैं तुम्हारे खिलाफ
नाराज हैं तुमसे हमारे खाप
फिर भी तू बेहया–सी यहीं पड़ी है
मेरी प्रतिस्पर्धा में खड़ी है।
मुस्कुराई जींस –
बहन साड़ी मत हो मुझ पर नाराज !
मैंने कहाँ छीना तुम्हारा राज ?
हो कोई भी पूजा–उत्सव
पहनी जाती हो तुम ही
सुना है कभी जींस में हुआ
किसी लड़की का ब्याह ?
फिर किस बात की तुमको आह
मैं तो हूँ बेरंग–बेनूर
साधारण–सी मजदूर
ना शिकन का डर,ना फटने का
मिलता है मुझसे आराम
दो जोड़ी में भी चल सकता है
वर्ष–भर का काम।
तुम फट जाओ तो लोग फेंक देते हैं
मैं फट जाऊँ तो फैशन समझ लेते हैं
अमीर–गरीब, स्त्री–पुरूष का भेद मिटाती हूँ
कीमती समय भी बचाती हूँ।
युवा–पीढ़ी को अधिक कामकाजी
सहज और जनतांत्रिक बनाती हूँ
सोचो जरा द्रौपदी ने भी जींस पहनी होती
क्या दु:शासन की इतनी हिम्मत होती ??

■■■

हज़ार योद्धाओं पर विजय पाना आसान है, लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है
वही सच्चा विजयी है। - गौतम बुद्ध

डाकू

– **शम्भु शरण भारती**
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं कर रहा था, यात्रा,
गरीब रथ एक्सप्रेस में,
समय था रात का
रेल में अचानक से
सुनाई पड़ा, शोरगुल।

बोगी में सो रहे थे, सब
जागते ही देखे, कुछ अजनबी
जिनके हाथों में थे, तमंचे व बम
फिर क्या था, सभी अपने अपने
सामानों की सुरक्षा में हो गये मशगूल।।

डाकुओं को देखकर डर गये
थे, सभी यात्री
उनमें से एक थे खद्दरधारी
सोने से पूर्व बोल रहे थे,
वर्त्तमान सरकार, सब पर भारी।

डरे हुए यात्रियों को करने लगा संबोधन
अपने बर्थ पर खड़े होकर देने लगे भाषण

हे यात्रियों
इन्हें देखकर आप मत डरिये
वाल्मिकी और अंगुलीमाल भी तो थे, डाकू
कन्हैया भी तो चुराते थे, कोयला व चारा
और आप भी चुराते हैं 'कर'
तो किस बात का है, इनसे डर।।
यही तो भारत की गरिमा है भैया

पावन है, परम्परा
कौन जाने, इनमें कोई
हो वाल्मिकी या कन्हैया,
इसलिए अतिथि समझूं
स्वागत कीजिए, इनका भैया।

नेता होने के नाते, करता हूँ
मैं इनका वन्दन,
आप सभी की ओर से
करता हूँ, इनका अभिनन्दन।।

फिर क्या था, यात्रियों ने
किया
अपना सारा धन, डाकुओं
के चरणों में अर्पित
बलिहारी शासन के,
आज पांडव, दशासन के
सामने था समर्पित।

तभी नेताजी परम्परानुसार दिये, आश्वासन
घबराओ नहीं, अगले ही स्टेशन
पर आपकी सेवा में खड़ा रहेगा प्रशासन।
पुलिस आएगी, दर्ज होगा एफ.आई.आर.

चुप हुए यात्री, सुनकर कि इन्हें लगेगी बहुत मार।
अद्भुत एकांत था, वातावरण शांत था
न कोई पुकार, न कोई आवाज
डाकु चेनपुलिंग कर उतर पड़े,

नेताजी भी डाकुओं के साथ उतरने लगे
एक यात्री दौड़कर लिया, उन्हें पकड़,
अपने हाथों में लिया, उन्हें जकड़।
खींचातानी में फट गया,
नेताजी का खद्दर
तभी निकला अन्दर से विदेशी रिवाल्वर।

यात्रीगण एक साथ चीख पड़े
अरे यह तो नेता के वेश में है, डाकू,
तभी साधुरूप एक यात्री बोल पड़ा
यही तो बात है, हम अन्दर
और बाहर से होते नहीं, एक
रोज धोखा खाते हैं और धोखा देते है
और नहीं पाते हैं, भगवान को देख।

।।सत्यमेव जयते।।

■■■

सारा हिन्दुस्तान गुलामी में घिरा हुआ नहीं है। जिन्होंने पश्चिमी शिक्षा पाई है और जो उसके पाश में फँस गए हैं, वे ही गुलामी में घिरे हुए हैं। -महात्मा गाँधी

विचित्र प्राणी

– **रत्नेश कुमार**
वरीय लेखा परीक्षक

आधुनिक सदी के इस दौर में
जब लोग
सोशल मीडिया के भंवर जाल में
उलझे हुए हैं मोबाइल में
तब एक मनुष्य
किसी बरगद के छाँव तले
कल–कल करती नदी के किनारे
नीले नभ के नीचे
या फिर बिछावन पर लेटे
मच्छरों से जंग लडते हुए
टी.वी. चैनलों पर होते बहस से दूर
लिखता है कोई कविता।
क्योंकि भौतिकवादी बाजार उसे
नहीं बना पाया है 'वस्तु'
नहीं शांत करा पाया है उसे
और उसके उद्वेषित चित्र को,
भौतिकवादी बाजार के
हानि लाभ के नियमित
आकलन से अलग है वह
विजातीय प्राणी है वह
विचित्र प्राणी है वह
हाँ, वह कोई और नहीं
एक कवि ही है वह
आधुनिक सदी का कवि।

■■■

जो सभी का मित्र होता है वो किसी का मित्र नहीं होता |- ओशो

न रुके न झुके

– दिलीप कुमार मिश्र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

न रुके न झुके,
ये है अपना वतन,
अपना ये वतन,
अपना ये चमन।
गुलफाम मेरे आबाद रहे,
बल बल जाऊँ तुझ पर जीवन ।।
न रुके न झुके....

हर खून का कतरा कहता है,
हर बूँद मे भारत बसता है।
ये जमीं है मेरी, आसमां है मेरी,
मेरे जीवन की, हर सांस तेरी ।।
न रुके न झुके....

तू धरम है मेरी, तू करम है मेरी,
मैं हूँ तेरा, तू माई मेरी।
न रुके न झुके....

ये मौत मुझे क्या डराएगी,
सर बांधे कफन, सरहद पे खड़ा,
एक तेरा इशारा हो जाए,
कदमों मे तेरे, मेरी जान परी।

फरियाद है तुझसे, ओ माई मेरी,
गर नींद लगे तो, तेरी गोद मिले,
तेरा तुझको करदूँ अर्पण,
तब जाकर मुझको चैन मिले।
न रुके न झुके....

■■■

प्रेम के व्यापारी

– सोनू सिंह
डी.ई. ओ

समय गति ने चाह मार दी, किन्तु प्रेम तो जिंदा है
सभी चाहते प्रेम मिले, पर फिर भी करते निंदा है ।

प्रेम की कोई चाह न होती, देना ही इसने सीखा है
बुद्धि प्रेम की शत्रु बनकर, कहती यह तो तीखा है ।

प्रेम की अनुभूति से हि, मानवता अब तक जिंदा है
सभी चाहते प्रेम मिले, पर फिर भी करते निंदा है ।

प्रेम कोई व्यापार नहीं है, लाभ–हानि का आधार नहीं है
धन की खातिर करे प्यार जो, धंधा है वो प्यार नहीं है ।

प्रेमी है हम अब भी सच्चे, तभी तो अब तक जिंदा है
सभी चाहते प्रेम मिले, पर फिर भी करते निंदा है ।

धन, पद, यश हमें नहीं चाहिए, थोड़ा सा विश्वास चाहिए
नहीं बंधना संबंधो में, हमें सत्य अहसास चाहिए ।

सब कुछ कह दे, सब कुछ सुन ले, वही प्यार है जिंदा है
सभी चाहते प्रेम मिले, पर फिर भी करते निंदा है ।

सच्चाई के प्रेमी है हम, कारागार में रह लेंगे
झूठ के साथ न जी पाएंगे चाहो, प्राण भी दे देंगे ।

प्रेम के व्यापारी हो तुम, लेकिन अभी हम जिंदा है
सभी चाहते प्रेम मिले, पर फिर भी करते निंदा है ।

■■■

यादें

– सोनू सिंह
डी.ई. ओ

दिवाली की संध्या सरक आई, ठंढक भी सिमटी आँचल में
चिडियों का कलरव सुबह शाम, घर आँगन में है गूंज रहा।

नदियों का पानी निकल गया, खेतो में बीज गड़े जस तस
कस ली कमर किसानो ने, मिट्टी से सोना उपजाना है।

कितनी मेहनत करनी होगी, खुद को है अंदाज़ नहीं
वर्षो की मेहनत लानी है, आरजू मिन्नत की आस नहीं।

हर एक पसीने में बू है, कोई खुसबू है कोई बदबू है
हवा ये कहती है रुक रुक, तुम क्यों होते मायूस यहाँ।

चलना ही नियति जीवन की, ऐसी मेरी जीवन गाथा
कही प्यार मिली कही तन्हाई भी, कही रास रंग संग ज्वाला भी।

हर एक मुकाम से गुजरा तो, हरियाली रंग भर लाई है
तुमने भी प्यार दिया मुझको, अंको में मन भर लाई हो।

बस निभाना है उसे अब तो, कुछ समय बिताना है अब तो
रस रंग भूलना है मुझको, वो प्यार जगाना है मुझको।

■■■

अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुंचाना, यही तपस्या का स्वरूप है। - संत तिरुवल्लुवर

सुनसान शहर

– **शम्भु शरण भारती**
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कहाँ जाये हम,
किसे याद करें हम
बंद सारी डगर है
सुनसान सारा शहर है,
चारो ओर कोरोना का कहर है।

सभी ओर अंधेरे के
उभरते हुए चेहरे
एम्बुलेंस व पुलिस
वाहनों की फुफकार
हर तरफ पुलिस के पहरे
हर शहर में मुर्दों का सफर है,
चारो ओर कोरोना का कहर है।

कमरारुपी पिरामिड में
बंद पड़ा ''ममी सी''
आँखों में नींद नहीं
बाहर सभी ओर घूमती
बहुत डरावना मंजर है
सुनसान सारी शहर है
चारो ओर कोरोना का कहर है।

जिन्दगी चीख रही
बाहर जाने के लिए
पर बंद सारी डगर है
न भीड़ है, ना धक्कामुकी
सुनसान सारी शहर है
चारो ओर कोरोना का कहर है।

सभी चेहरे ढके हुए
अपने भी अजनबी लग रहे हैं
दूरदर्शन में सिर्फ
हादसों का खबर है
बहुत ही डरावना मंजर है
सुनसान सारी शहर है,
चारो ओर कोरोना का कहर है।

इतना लाचार, इतना डरा हुआ
पहले कभी नहीं था इन्सान
घरों में कैद, सबके सब
अर्द्धविक्षिप्त सा, देखते हुए
अपने सपने को टूटते हुए
बंद सारी डगर है,
सुनसान सारी शहर है,
चारो ओर सिर्फ कोरोना का कहर है।

■■■

स्वार्थ

– **जय प्रकाश प्रसाद**
पिता–संतोष कुमार, लेखापरीक्षक

जहाँ स्वार्थ है, छल भी होगा ।
नहीं आज ही कल भी होगा ।।

शुचिता मन की खंडित होगी ।
शिष्ट – भावना दंडित होगी ।।

नहीं जमाने का डर होगा ।
वहाँ सिर्फ आडंबर होगा ।।

साथ, झूठ का बल भी होगा ।
नहीं आज ही, कल भी होगा ।।

सम्बंधों की आहुति होगी ।
नहीं भावना में द्युति होगी ।।

नींव प्रेम की, जर्जर होगी ।
ग्लानि किन्तु जीवन भर होगी ।।

दाँव कभी असफल भी होगा ।
नहीं आज ही, कल भी होगा ।।

मनुज स्वार्थ में अंधा होता ।
मतलब, उसका धंधा होता ।।

उसे सुयश की चाह नहीं है ।
रिश्तों की परवाह नहीं है ।।

दूषित जल में मल भी होगा ।
नहीं आज ही, कल भी होगा ।।

■■■

जरूरी है !

– **सोनी कुमारी**
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सादगी जरूरी है, आज भी जरूरी है,

सोच ही नहीं, मिज़ाज भी जरूरी है।

हमारी ख़ामोशी को लोग कमजोरी न समझें,

इसलिए कभी–कभी आवाज़ भी जरूरी है।

हमारे बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए,

अच्छा घर परिवार समाज भी जरूरी है।

सिर्फ अच्छी बातों से तो काम चलता नहीं है,

घर चलाने के लिए काम–काज भी जरूरी है।

सहने वालों को लोग ताकतवर तो कहते हैं,

कायर कहने के पहले ऐतराज भी जरूरी है।

■■■

जीवन

– **दिलीप कुमार मिश्र**
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन ख़तम हुआ तो जीने का ढंग आया,
जब सांस न बची तो, सुमिरन का वक्त पाया।
जब वक्त मैंने पाया, बस अर्थ ही कमाया,
जब अंत काल आया तो, कुछ न काम आया।।

ये मैं भी जानता था, कुछ भी न साथ जाए,
थे खाली हाथ आए, हैं खाली हाथ जाना,
फिर ज़िंदगी को हमने क्यों व्यर्थ मे गंवाया?
क्यों अर्थ की जुगत मे, माँ–बाप को भुलाया?
सबकुछ कमाने ख़ातिर, जो भी था वो गंवाया ।।

जीवन ख़तम हुआ तो जीने का ढंग आया,
जब सांस न बची तो, सुमिरन का वक्त पाया।

उलफत सी ज़िंदगी जी, मन में सुकूं नहीं था,
माया का जाल ऐसा, सच सूझता नहीं था।
खुद के लिए जिया बस, किसी के न काम आया,
ख़ुद की खुशी को मैंने, ख़ुद आप ही जलाया।।
जो पाप न किया तो, न पुण्य ही कमाया,
इस ज़िंदगी को मैंने, यू व्यर्थ ही गंवाया।।

अब काया थक चुकी है, भ्रमजाल हट चुकी है,
सबकुछ मुझे पता है, क्या मैंने है कमाया,
झूठी खुशी के खातिर, सर्वस्व ही गवाया।

जीवन ख़तम हुआ तो जीने का ढंग आया,
जब सांस न बची तो, सुमिरन का वक्त पाया।

थक सी गई है आँखें, साँसें भी फूल रही हैं,
अब सांस न बची है, धड़कन भी रुक रही है।
जब सांस न बची तो, जीने का ढंग आया।
माया के जाल में था, मैं अब ये जान पाया ।।

एक द्वंद सी है मन में, कैसे तुम्हें पुकारूँ,
कैसे कहूँ ये तुझसे, मुझको गले लगाजा।
साँसे भी जो बची है, एक दर्श की है प्यासी,
एक दर्श तो दिखाजा, आके गले लगाजा।।

अरदास है ये रब से, फिर से मिले ये जीवन,
मन में सुकू हो मेरे, भ्रमजाल जान पाऊँ।
खुल के जीऊँ मैं जीवन, दूजों के काम आऊँ,
न दंभ हो विजय का, न शोक ही सताए,
साधन की ख़ोज में, न मैं साध्य भूल जाऊँ।

जब अंत काल आए, तो मौत न डराए,
मन मे कचोट न हो, खुद से नजर मिलालूं,
नर तन जो पाऊं तुझसे, मैं तुझको जान पाऊं।।

राजभाषा प्रश्नोतरी

1. राजभाषा आयोग का गठन कब हुआ था ?

(अ) 07 जून 1955 (ब) 07 जून 1957 (स) 10 जून 1958 (द) 12 जून 1960

2. हिंदी को संवैधानिक दर्जा कब मिला ?

(अ)14 सितम्बर 1949 (ब) 17 सितम्बर 1950 (स) 11 जून 1948 (द)22 जून 1970

3. संविधान के भाग-5 का कौन सा अनुच्छेद संसद में प्रयुक्त होने वाली भाषा से संबंधित है?

(अ) अनुच्छेद 324 (ब) अनुच्छेद 343 (स) अनुच्छेद 115 (द) अनुच्छेद 120

4. अरुणाचल प्रदेश निम्न में से किस क्षेत्र में आता है?

(अ) "क" क्षेत्र (ब) "ख" क्षेत्र (स) "ग" क्षेत्र (द) "घ" क्षेत्र

5. संघ की राजभाषा से संबंधित अनुच्छेद 343 से 351 का उल्लेख संविधान के किस भाग में है?

(अ) भाग 15 (ब) भाग 16 (स) भाग 17 (द) भाग 5

6. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा3(3) के तहत कितने दस्तावेज को अनिवार्य रूप से द्विभाषी किया जाना है?

(अ) 12 (ब) 14 (स) 16 (द) 18

7. केंद्रीय हिंदी समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं?

(अ) प्रधान मंत्री (ब) राष्ट्रपति (स) गृह मंत्री (द) विदेश मंत्री

8. संसदीय राजभाषा समिति में लोकसभा के कितने सदस्य हैं?

(अ) 15 (ब) 20 (स) 25 (द) 22

9. संसदीय राजभाषा समिति में राज्यसभा के कितने सदस्य हैं?

(अ) 10 (ब) 12 (स) 15 (द) 20

10. राजभाषा का वार्षिक कार्यक्रम कौन तैयार करता है?

(अ) राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय (ब) केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

(स) केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो (द) केंद्रीय राजभाषा सचिवालय

11. संविधान के भाग 6 का कौन-सा अनुच्छेद विधान मंडल में प्रयुक्त होने वाली भाषा से संबंधित है?

(अ) अनुच्छेद 210 (ब) अनुच्छेद 105 (स) अनुच्छेद 143 (द) अनुच्छेद 340

12. राजभाषा अधिनियम, 1963 का संशोधन कब हुआ?

(अ) 1965 (ब) 1967 (स) 1973 (द) 1977

13. नगर राजभाषा कार्यांवयन समिति की बैठकों की अवधि क्या है?

(अ) छमाही (ब) तिमाही (स) वार्षिक (द) मासिक

अपने को संकट में डाल कर कार्य संपन्न करने वालों की विजय होती है,
कायरों की नहीं। - जवाहरलाल नेहरू

14. राजभाषा कार्यांवयन समिति की बैठकों की अवधि क्या है?

(अ) मासिक (ब) छमाही (स) तिमाही (द) वार्षिक

15. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावाली आयोग की स्थापना कब हुई?

(अ) 1961 (ब) 1963 (स) 1965 (द) 1967

16. आठवीं सूची में शामिल विदेशी भाषा क्या है?

(अ) नेपाली (ब) सिंधी (स) बोडो (द) डोगरी

17. केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना कब हुई?

(अ) 1970 (ब) 1971 (स) 1973 (द) 1975

18. वर्ष 1955 में गठित राजभाषा आयोग का नाम क्या था?

(अ) कोठारी आयोग (ब) खेर आयोग (स) राजकमल आयोग (द) भारती आयोग

19. नाम, पदनाम तथा साईन बोर्ड को किस भाषा क्रम में प्रदर्शित किया जाना है?

(अ) हिंदी, प्रादेशिक भाषा, अंग्रेजी (ब) प्रादेशिक भाषा, हिंदी, अंग्रेजी

(स) अंग्रेजी, हिंदी, प्रादेशिक भाषा (द) हिंदी, अंग्रेजी, प्रादेशिक भाषा

20. किस नियम के तहत किसी कार्यालय को कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए अधिसूचित किया जाता है?

(अ) नियम 8(4) (ब) नियम 12(1) (स) नियम 10(4) (द) नियम 6(2)

21. किस नियम के तहत हिंदी में प्रवीणता प्राप्त केंद्रीय अधिकारी/ कर्मचारी को अपना कार्यालयीन कार्य केवल हिंदी में करने के लिए आदेश दिया जाता है?

(अ) नियम 10(4) (ब) नियम 6(2) (स) नियम 8(4) (द) नियम 12(1)

22. प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन किस शहर में आयोजित किया गया था?

(अ) सिंगापुर (ब) नागपुर (स) मास्को (द) पेरिस

23. "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल" पंक्ति किस लेखक के द्वारा लिखा गया है?

(अ) प्रेमचंद (ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी (स) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (द) महादेवी वर्मा

24. हिंदी भाषा में सर्वप्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार किस लेखक को मिला है?

(अ) प्रेमचंद (ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी (स) सुमित्रानंदन पंत (द) महादेवी वर्मा

25. किस भारतीय राजनेता ने सर्वप्रथम संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण दिया?

(अ) वी.वी.गिरि (ब) अटल बिहारी वाजपेयी (स) राजेन्द्र प्रसाद (द) सुषमा स्वराज

1. (अ)	2. (अ)	3. (द)	4. (ब)	5. (ब)
6. (द)	7. (अ)	8. (द)	9. (अ)	10. (अ)
11. (अ)	12. (द)	13. (अ)	14. (ब)	15. (अ)
16. (अ)	17. (द)	18. (द)	19. (द)	20. (ब)
21. (ब)	22. (द)	23. (ब)	24. (ब)	25. (द)

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है
और गाने लगता है। - रवींद्रनाथ ठाकुर

मात्र स्वप्न धारण करना धूल के समान है।
किंतु, संबंधित कार्य हेतु असीम परिश्रम ही सर्वोपरि है।

- श्री हेमन्त कुमार,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरी जिंदगी से संघर्ष बस इतनी सी है कि हर इस पल में
बीते हुए से बेहतर एक इंसान बन सकूँ।

- श्री आलोक कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

साहित्य का रसपान करें,
इसमें आनंद की अनुभूति मिलेगी।

- श्री संजीव कुमार यादव,
कनिष्ठ अनुवादक

- श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुबोध कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए ।
मसौदे हिंदी में तैयार कीजिये ।
शब्दों के लिए अटकिये नहीं ।
अशुद्धियों से घबराइए नहीं ।
अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिये ।

हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र

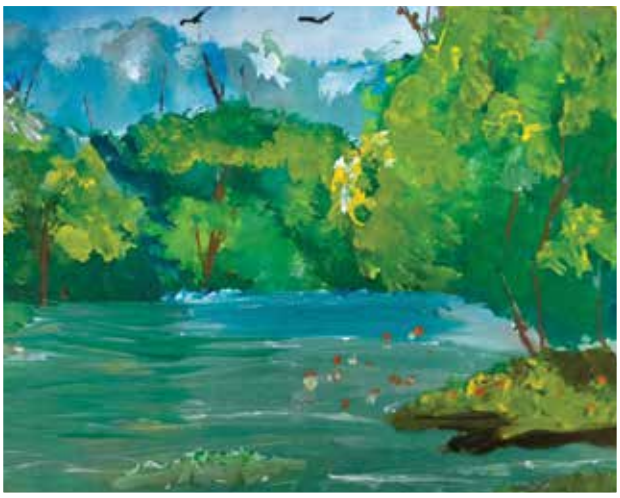

इच्छाएं ही सब दुखों का मूल कारण है। - भगवान बुद्ध

अप्रैल, 2021 से मार्च, 2022 तक सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

क्र. सं.	नाम (सर्व श्री/सुश्री/श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्त तिथि	अभ्युक्ति
1.	चन्द्र भूषण स्वर्णकार	सहायक पर्यवेक्षक	30.04.2021	सेवानिवृत्त
2.	पीयूष कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.06.2021	सेवानिवृत्त
3.	देवाशीष गोस्वामी	वरिष्ठ उप महालेखाकार	31.07.2021	सेवानिवृत्त
4.	नारायण राम	लिपिक	31.07.2021	सेवानिवृत्त
5.	कुमारी मंजू सिन्हा	पर्यवेक्षक	31.07.2021	सेवानिवृत्त
6.	राज किशोर	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.07.2021	सेवानिवृत्त
7.	लालेश्वर प्रसाद वर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.09.2021	सेवानिवृत्त
8.	विवेकानन्द मुखर्जी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.12.2021	सेवानिवृत्त
9.	अवध किशोर पाण्डेय	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.12.2021	सेवानिवृत्त
10.	रमेश नेगी	पर्यवेक्षक	31.01.2022	सेवानिवृत्त
11.	अवधेश सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.01.2022	सेवानिवृत्त
12.	पुष्पा रानी रवि	लिपिक	31.01.2022	सेवानिवृत्त
13.	लाखो गाड़ी	लिपिक	28.02.2022	सेवानिवृत्त
14.	प्रेम कुमार झा	पर्यवेक्षक	28.02.2022	सेवानिवृत्त

वर्ष 202-2022 की अवधि में सेवा के दौरान दिवंगत कर्मचारियों/अधिकारियों की सूची:

क्र. सं.	नाम	पदनाम	मृत्यु तिथि
1.	शान्तनु कुमार बराट	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	13.04.2021
2.	प्रभात कुमार मित्रा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	17.04.2021
3.	कार्तिक राम	एम.टी.एस.	06.03.2022
4.	अरविन्द जॉय सांगा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	06.09.2022
5.	सी.बी.नवीन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	15.10.2022

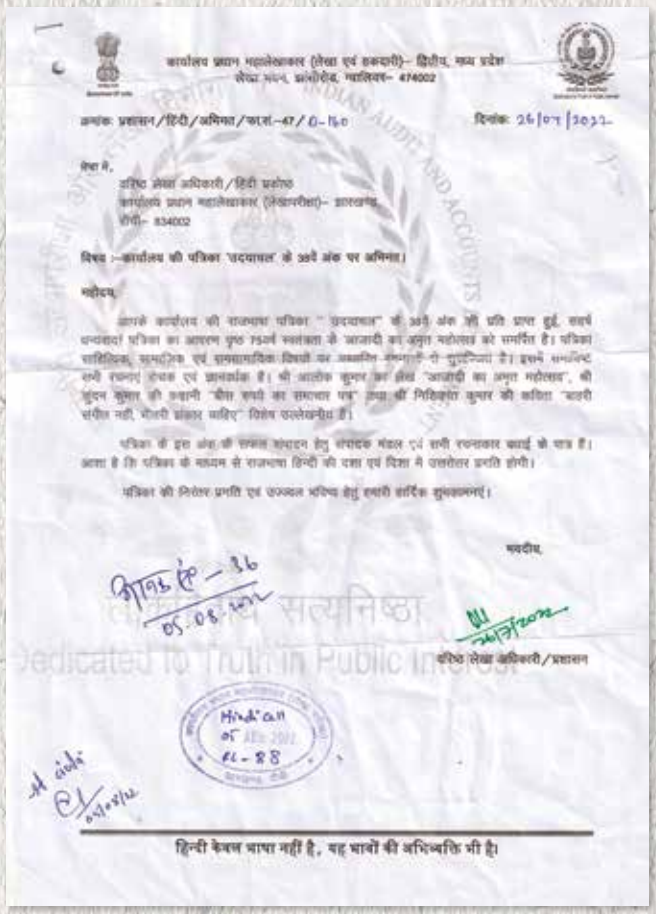

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)– द्वितीय, मध्य प्रदेश
लेखा भवन, झांसीरोड, ग्वालियर– 474002

क्रमांक: प्रशासन/हिंदी/अभिमत/का.सं.–47/ 0-160 दिनांक: 26/07/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)– झारखण्ड
रांची– 834002

विषय :–कार्यालय की पत्रिका 'उदयाचल' के 38वें अंक पर अभिमत।

महोदय,

आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका " उदयाचल" की 38वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सर्वप्रथम धन्यवाद! पत्रिका का आवरण पृष्ठ 75वें स्वतंत्रता के 'आजादी का अमृत महोत्सव' को समर्पित है। पत्रिका साहित्यिक, सामाजिक एवं समसामयिक विषयों का [illegible] से सुसज्जित है। इसमें सम्मिलित सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री आलोक कुमार का लेख "आजादी का अमृत महोत्सव", श्री कुंदन कुमार की कहानी "बीस रुपये का समाचार पत्र" तथा श्री मिथिलेश कुमार की कविता "बाहरी संगीत नहीं, भीतरी झंकार चाहिए" विशेष उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के इस अंक की सफल संपादन हेतु संपादक मंडल एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी की दशा एवं दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति होगी।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन

सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

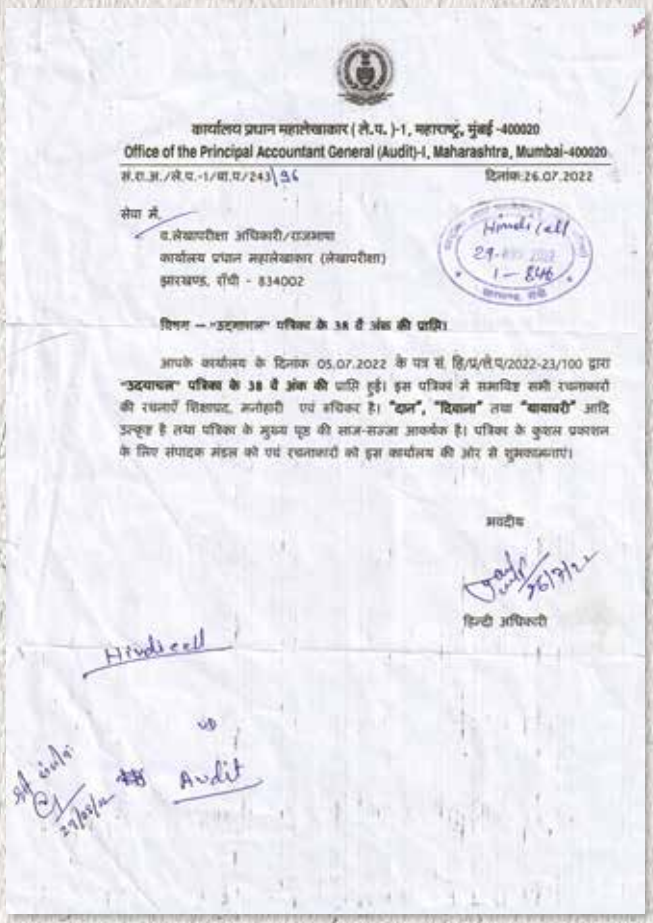

हिन्दी केवल भाषा नहीं है, यह भावों की अभिव्यक्ति भी है।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)-1, महाराष्ट्र, मुंबई -400020
Office of the Principal Accountant General (Audit)-I, Maharashtra, Mumbai-400020

सं.प्र.म./ले.प.-1/रा.भ./243/36 दिनांक:26.07.2022

सेवा में,
व.लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड, रांची - 834002

विषय — "उदयाचल" पत्रिका के 38 वें अंक की प्राप्ति।

आपके कार्यालय के दिनांक 05.07.2022 के पत्र सं. हि/प्र/ले.प/2022-23/100 द्वारा **"उदयाचल" पत्रिका के 38 वें अंक की** प्राप्ति हुई। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाकारों की रचनाएँ शिक्षाप्रद, मनोहारी एवं रुचिकर हैं। **"दान", "दिवाना"** तथा **"बाबावरी"** आदि उत्कृष्ट है तथा पत्रिका के मुख्य पृष्ठ की साज-सज्जा आकर्षक है। पत्रिका के कुशल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को एवं रचनाकारों को इस कार्यालय की ओर से शुभकामनाएं।

भवदीय

हिन्दी अधिकारी

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय , चेन्नै
Office of Director General of Commercial Audit, Chennai
इंडियन ऑयल भवन, स्तर -2 , 139, महात्मा गाँधी मार्ग, चेन्नई – 600034
Indian Oil Bhavan, Level- 2, 139, Mahatma Gandhi Road, Chennai - 600034
Tel: 044-28330147 Fax: 044-28330142/145, e-mail: pdcachennai@cag.gov.in

सं. अभिशासन /प्रशा-VII/7-46/2022-23/231 दिनांक:27.07.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)
झारखंड,रांची 834002

विषय: हिन्दी पत्रिका **"उदयाचल"** के 38 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका **"उदयाचल"** के 38 वें अंक की एक प्रति इस कार्यालय में प्राप्त हुई। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

इस पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय एवं रोचक है। **श्री आलोक कुमार द्वारा रचित-** आजादी का अमृत महोत्सव जानवर्धक है तथा **श्री कुंदन कुमार द्वारा रचित -** बीस रुपये का समाचार पत्र रोचक है। **श्रीमती आरती पाठक कृत** हिंदी के संवर्धन में मेरा प्रयास एवं **श्री मिथिलेश कुमार कृत-** बाहरी संगीत नहीं,भीतरी झंकार चाहिए प्रेरणादायक है। राजभाषा के प्रचार व प्रसार के लिए आपका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। भविष्य में इस पत्रिका की समृद्धि के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखा व हकदारी) - I, महाराष्ट्र
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (ACCOUNTS & ENTITLEMENT)-I, MAHARASHTRA

संख्या - प्र.म.ले.(ले.व ह.)/पत्रिका पावती/जा.सं.65 दिनांक - 19/07/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड
रांची, 834002

विषय - 'उदयाचल' पत्रिका के 38वें अंक की प्राप्ति से संबंधित

महोदय,

आपके पत्र सं. हि./प्र./ले.प./222-23/135 दिनांक 05/07/2022 के साथ "उदयाचल"(हिंदी पत्रिका) की एक प्रति प्राप्त हुई, तद्हेतु धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं पठनीय, रोचक व सराहनीय है। सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी में विषय के अनुसार रचना का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है, जो निसंदेह हमारे ज्ञान में वृद्धि करते है। पत्रिका में रचित रचनाएं - श्री आलोक कुमार द्वारा रचित 'आजादी का अमृत महोत्सव', श्री विकास चन्द्र आजाद द्वारा रचित 'राजभाषा हिंदी की वर्तमान स्थिति एवं बढ़ावा देने हेतु विचार', श्री मनोज कुमार द्वारा रचित 'दिनचर्या का प्रारंभ', श्री आलोक कुमार द्वारा रचित 'दाखिल खारिज', 'छत्तीसगढ़ दर्शन', एवं 'बाबावरी', श्री बालमुकुन्द पाठक द्वारा रचित 'दान', 'अंतिम उपहार', सुश्री नेहा कुमारी द्वारा रचित 'एक राज्य, एक क्षेत्र', श्रीमती आरती पाठक द्वारा रचित 'हिंदी के संवर्धन में मेरा प्रयास', श्री शम्भु शरण भारती द्वारा रचित 'कोहिनी' एवं 'मिसाली शाम', श्री मिथिलेश कुमार द्वारा रचित 'बाहरी संगीत नहीं, भीतरी झंकार चाहिए' एवं श्रीमती आरती पाठक द्वारा रचित 'समय' अच्छी है। पत्रिका में विभिन्न विषयों से संबंधित लेख, कहानियों और कविताओं का समावेश किया गया है व पत्रिका का मुखपृष्ठ आकर्षक है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालय के रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में, आपकी यह पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु किए गए प्रयास सराहनीय है। पत्रिका गागर में सागर भरने का कार्य करती है।

पत्रिका की अविरल प्रगति हेतु शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/रा.भा.

ऑडिट सप्ताह 2022 के दौरान कार्यालय भवन

हिंदी कार्यशाला के दौरान वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा का संबोधन

ऑडिट सप्ताह 2022 के दौरान दीप प्रज्जवलन

हिंदी पखवाड़ा के दौरान उप महालेखाकार महोदय द्वारा प्रमाणपत्र वितरण

हिंदी पखवाड़ा के दौरान महालेखाकार महोदय द्वारा प्रमाणपत्र वितरण

हिंदी पखवाड़ा के दौरान महालेखाकार महोदय द्वारा प्रमाणपत्र वितरण

सत्य से कीर्ति प्राप्त की जाती है और सहयोग से मित्र बनाए जाते हैं। - कौटिल्य अर्थशास्त्र

दिनांक 23.11.2022 को पलास सभागार में "लेखापरीक्षा दिवस" महोत्सव

हिंदी पखवाड़ा के दौरान वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय द्वारा प्रमाणपत्र वितरण

"लेखापरीक्षा दिवस" पर महालेखाकार श्री अनूप फ्रांसिस डुंगडुंग महोदय का स्वागत भाषण

स्वतंत्रता दिवस 2022

प्रेस कॉन्फ्रेंस अगस्त- 2022

हिंदी पखवाड़ा के दौरान महालेखाकार महोदय द्वारा प्रमाणपत्र वितरण

अकर्मण्यता के जीवन से यशस्वी जीवन और यशस्वी मृत्यु श्रेष्ठ होती है। -चंद्रशेखर वेंकट रमण

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं|

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्त्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम-काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13-14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस 2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जनसाधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा भाषी अपनी अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई-महाशब्दकोश' में 90 हज़ार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई-सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द-संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियों ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश-विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। जय हिंद !

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

547_1122_ Anapurna Press and Process 6287999194, appranchi.1969@gmail.com